Natural Farming

सत्यमेव जयते
नीति आयोग

प्राकृतिक खेती

की सफलता की कहानियों का सार-संग्रह

Natural Farming

सत्यमेव जयते
नीति आयोग

प्राकृतिक खेती

की सफलता की कहानियों का सार- संग्रह

प्राकृतिक खेती की सफलता की कहानियों का सार- संग्रह

प्रकाशन एजेंसी: **नीति आयोग**

प्रकाशन वर्ष: 2022

आईएसबीएन: 978-81-949510-4-9

संपादक:

- डॉ नीलम पटेल, वरिष्ठ सलाहकार
- डॉ आतिरा एस., अनुसंधान अधिकारी
- डॉ तनु सेठी, वरिष्ठ सहयोगी
- शिवचरण मीणा, अनुसंधान अधिकारी

खंड:

दस्तावेज़ पूरी तरह से राज्य के कृषि विभागों, कृषि विज्ञान केंद्रों, कृषि विश्वविद्यालयों और गैर सरकारी संगठनों द्वारा प्रदान की गई जानकारी और तस्वीरों पर आधारित है। प्रकाशक और संपादक संबंधित अधिकारियों द्वारा साझा किए गए आंकड़ों की सटीकता के लिए किसी भी जिम्मेदारी का दावा नहीं करते हैं। नीति आयोग किसी भी नुकसान या क्षति के लिए उत्तरदायी नहीं होगा, जिसमें आकस्मिक या परिणामी नुकसान या इस दस्तावेज़ में दी गई जानकारी के किसी भी उपयोग या निर्भरता के कारण होने वाली क्षति शामिल है।

डॉ. राजीव कुमार
उपाध्यक्ष
DR. RAJIV KUMAR
VICE CHAIRMAN
Phones : 23096677, 23096688
Fax : 23096699
E-mail : vch-niti@gov.in

सत्यमेव जयते

Azadi Ka Amrit Mahotsav

भारत सरकार
नीति आयोग, संसद मार्ग
नई दिल्ली - 110 001
Government of India
NATIONAL INSTITUTION FOR TRANSFORMING INDIA
NITI Aayog, Parliament Street,
New Delhi - 110 001

संदेश

आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा के लिए कृषि महत्वपूर्ण है। आज हम जिस खाद्य सुरक्षा का आनंद ले रहे हैं, उसे आने वाली पीढ़ियों के लिए टिकाऊ और व्यवहार्य उपायों द्वारा सुरक्षित करने की आवश्यकता है। पारंपरिक पद्धतियों के ज्ञान, कृषि आदानों के इष्टतम उपयोग, फसल प्रणालियों की विविधता इत्यादि कृषि पद्धतियों को अपनाकर हम मिट्टी और पर्यावरण का संरक्षण कर सकते है। कृषि में प्राकृतिक पद्धतियों को अपनाने से कृषि-पारिस्थितिक दृष्टिकोण की अवधारणा को महत्व मिलता है।

कृषि के विभिन्न पहलुओं के विज्ञान को "वृक्षायुर्वेद" में परिभाषित किया गया है, जिसमें "प्राकृतिक कृषि" का सिद्धांत निहित है। प्राकृतिक कृषि स्थानीय या घरेलू स्तर पर उपलब्ध संसाधनों और पशुधन पर आधारित है। खेती की यह पद्धति छोटे, सीमांत किसानों से लेकर बड़े किसानों के द्वारा भी अपनाई जा सकती है। प्राकृतिक खेती मे न्यूनतम आदान लागत की वजह से यह आर्थिक रूप से और व्यवहार्य हो जाती है। प्राकृतिक कृषि की समावेशिता और सामर्थ्य से रोजगार की सुनिश्चितता के साथ-साथ कृषि क्षेत्र में लैंगिक असमानता को दूर करने में भी मदद मिलती है। प्राकृतिक कृषि पद्धति पर्यावरणीय रूप से लाभदायक और जलवायु परिवर्तन के अनुकूल है, जिससे यह सतत् विकास के लक्ष्यों को हासिल करने का भी एक आदर्श मार्ग बन जाती है। इन सभी सकारात्मक विशेषताओं के साथ वर्तमान में देश में दो मिलियन से अधिक किसान और फल उत्पादक प्राकृतिक कृषि से लाभ कमा रहे हैं।

नीति आयोग किसानों, विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों के मध्य प्राकृतिक कृषि के प्रचार-प्रसार के लिए लगातार काम कर रहा है। हमने इन पद्धतियों की अनुभवजन्य वैधता के लिए अनुसंधान अध्ययन भी आरम्भ किया है । सर्वोत्तम पद्धतियों के प्रसार-प्रचार के साथ ही अंगीकरण को बढ़ावा देने, जागरूकता पैदा करने, किसान समुदाय और संगतहित धारकों के मध्य विश्वास पैदा करने के लिए प्राकृतिक कृषि पद्धतियों की सफलता की कहानियों का दस्तावेजीकरण और प्रचार करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी क्रम मे यह सफलतम कहानियों का संग्रह हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार किया गया है जिससे कि अधिक से अधिक हितधारकों तक इसकी पहुँच हो, एवं वे सब इससे प्रेरणा लेकर लाभान्वित हो सकेंगे।

राजीव कुमार

(**राजीव कुमार**)

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 18 अप्रैल, 2022

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

नरेन्द्र सिंह तोमर
NARENDRA SINGH TOMAR

सत्यमेव जयते

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री
भारत सरकार
कृषि भवन, नई दिल्ली
MINISTER OF AGRICULTURE & FARMERS WELFARE
GOVERNMENT OF INDIA
KRISHI BHAWAN, NEW DELHI

संदेश

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हो रही है कि नीति आयोग देश में किसानों द्वारा अपनाई गई प्राकृतिक खेती की सर्वोत्तम प्रथाओं का दस्तावेजीकरण कर रहा है। मुझे पूरी उम्मीद है कि 'प्राकृतिक खेती की सफलता की कहानियों के सार-संग्रह' नाम से द्विभाषा में यह प्रकाशन हमारे किसान समुदाय के बीच जागरूकता पैदा करने में मदद करेगा, साथ ही उन्हें प्राकृतिक खेती को अपनाने के लिए प्रेरित भी करेगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व में भारत सरकार देश के किसान भाइयों-बहनों के कल्याण के लिए पूरी तरह से समर्पित हैएवं इसके लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से सतत प्रयास जारी है| देश में कृषि योग्य भूमि की क्षमतावर्धन तथा उत्पादन लागत में कमी के साथ-साथ किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य के साथ परंपरागत कृषि विकास योजना के उप मिशन के तहत भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (बीपीकेपी) योजना की शुरूआत की गई है। प्रधानमंत्री जी द्वारा दिसंबर-2021 में आणंद (गुजरात) में प्राकृतिक खेती के प्रति जागरूकता के लिए एक वृहद राष्ट्रीय सम्मेलन के माध्यम से मिशन रूप में लांचिंग की गई है, जिसके बाद से प्राकृतिक खेती को लेकर देश के विभिन्न हिस्सों में जोर-शोर से कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इनके माध्यम से किसानों व उपभोक्ताओं में माहौल बना है।

देश में घटते भू-जल स्तर को देखते हुए प्राकृतिक संसाधनों का कुशल प्रबंधन व संरक्षण अत्यधिक महत्वपूर्ण है। मौजूदा कृषि पद्धतियों को इन परिवर्तनों के अनुकूल होने के लिए संशोधित करना होगा और अपनी मिट्टी के बिगड़ते हुए पोषक तत्व अनुपात को बेहतर बनाने पर भी जोर दिया जाना एक महती आवश्यकता है। जिन राज्यों में बीपीकेपी को अपनाया जा चुका हैं, वहां पर ऐसे प्रमाण मिले हैं कि प्राकृतिक कृषि पद्धतियों ने न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव के साथ किसानों की आमदनी बढ़ाने में मदद की है, अतः प्राकृतिक खेती को व्यापक रूप से अपनाने से भारत द्वारा सतत विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति में भी महत्वपूर्ण सहयोग मिलेगा।जलवायु परिवर्तन की चुनौतियां भी हमारे समक्ष है, इसे गंभीरता से ध्यान में रखते हुए सरकार भारतीय कृषि क्षेत्र की प्रगति को लेकर प्राण-प्रण से काम कर रही है, मुख्य रूप से छोटे व मझौले किसानों का जीवन स्तर ऊंचा उठाने परसरकार का फोकस हैं।

नीति आयोग को, आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष में 'प्राकृतिक खेती की सफलता की कहानियों के सार-संग्रह' के आगामी प्रकाशन की सफलता को लेकर बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

(नरेंद्र सिंह तोमर)

Office : Room No. 120, Krishi Bhawan, New Delhi-110 001 Tel.: 23383370, 23782691 Fax : 23384129
Resi. : 3, Krishna Menon Marg, New Delhi-110001, Ph. : 011-23794697 / 98, Fax : 011-23794696

परशोत्तम रूपाला
PARSHOTTAM RUPALA

मंत्री
मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी
भारत सरकार
MINISTER
FISHERIES, ANIMAL HUSBANDRY & DAIRYING
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

D.O. No. 834 MIN(FAH&D)/2021-22

12 APR 2022

संदेश

कृषि देश में सामाजिक-आर्थिक विकास की आधारशिलाहै।पशुधन क्षेत्र भारतीय कृषि का एक अभिन्न अंग है जो कुल कृषि सकल घरेलू उत्पाद का 25.6% योगदान देता है और ग्रामीण परिवारों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

यह भारतीय कृषि समुदाय के लिए गौरव की बात है कि हम खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर होकर उभरे हैं। अब, इस उपलब्धि को टिकाऊ और न्यूनतम पर्यावरण क्षति को ध्यान मे रखते हुए आगे बढ़ाना महत्वपूर्ण है।इस प्रयास में, हमें भारतीय कृषि की समृद्ध परंपराओं और प्रथाओं का लाभ उठाना चाहिए ताकि हमारी मिट्टी, इसकी उपज और इसके उत्पादकों का कायाकल्प कर ओर समृद्ध बनाया जा सके।

इसी तारतम्य में पारंपरिक भारतीय प्रथाओं में निहित प्राकृतिक खेती आने वाले दिनों में एक महत्वपूर्ण समाधान के रूप में उभरी है। प्राकृतिक खेती एक पशुधन आधारित कृषि प्रणाली है जोकि मृदा स्वास्थ्य, न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव और कृषि लागत में वहनीयता सुनिश्चित करके टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देती है। इस कृषि पद्धति को देश भर में हमारे किसान भाइयों द्वारा हमारे साथी किसानों द्वारा प्रभावी ढंग से और सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया गया है और इसलिए, इस कृषि पद्धति को उजागर करने की आवश्यकता है इसका प्रचार प्रसार की आवश्यकता है।

कृषक समुदाय द्वारा व्यापक रूप से इस पशुधन-आधारित कृषि पद्धति को अपनाने से हमारे देश में अनुत्पादक मवेशियों के परित्याग की समस्या को कम करने में मदद मिल सकती है। किसान समुदाय के हित के लिए इस तरह के प्रयासों को संरचित तरीके से प्रलेखित होते हुए देखकर मुझे खुशी हो रही है।मैं इस 'प्राकृतिक खेती की सफलता की कहानियों का संग्रह' को प्रकाशित करने में नीति आयोग के प्रयासों की सराहना करता हूं जो हमारे किसानों की उपलब्धियों को उजागर करती है। मुझे पूरी उम्मीद है कि यह कृषक समुदाय के लिए एक संदर्भ और प्रेरणा स्रोत के रूप में काम करेगा और देश भर में प्राकृतिक कृषि तकनीकों को अपनाने में इससे भरपूर मदद मिलेगी।

(परशोत्तम रूपाला)
मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय

स्थानः नई दिल्ली

प्रो. रमेश चन्द
सदस्य
Prof. Ramesh Chand
MEMBER

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
नीति आयोग, संसद मार्ग
नई दिल्ली-110 001
Government of India
NATIONAL INSTITUTION FOR TRANSFORMING INDIA
NITI Aayog, Parliament Street
New Delhi-110 001
Tele. : 23096756, 23096774 Fax : 23730678
E-mail : rc.niti@gov.in

संदेश

भारत ने हरित क्रांति युग की अगुवाई वाली नीतियों के माध्यम से खाद्य सुरक्षा हासिल करने में अभूतपूर्व प्रगति की है। इन सभी नीतिगत प्रयासों का मुख्य उद्देश्य प्रमुख फसलों के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाना था। हालांकि, अब, खाधान्न उत्पादन की वृद्धि इसकी मांग से अधिक हो रही है, जिससे अधिशेष प्रबंधन की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता महसूस हो रही है। कृषि का पर्यावरण एवं उससे जुड़े प्राकृतिक संसाधनों के साथ एक मजबूत एवं पारस्परिक संबंध है। उत्पादन की प्रचलित विधियों में अत्यधिक संसाधनों की आवश्यकता होती है, जिससे मिट्टी की उर्वरता में गिरावट और जल स्तर में कमी जैसी गंभीर समस्याएं सामने खड़ी प्रतीत हो रही हैं।

आज विकास और स्थिरता के बीच संतुलन बनाने की महती आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन, जिसके और अधिक सघन होने की संभावना है, के प्रभाव से कृषि क्षेत्र विशेष रूप से असुरक्षित है। इस क्षेत्र में किसी भी तरह के संकट या दबाव का असर पूरी अर्थव्यवस्था पर पड़ने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है, क्योंकि भारत की श्रम-शक्ति का लगभग 45% हिस्सा अभी भी कृषि क्षेत्र में कार्य करता है। इसलिए, न केवल हमारी खाद्य सुरक्षा, बल्कि गरीबी को कम करने में हमारी कड़ी मेहनत से मिलने वाला लाभ भी दांव पर है।

इन कारकों के दृष्टिगत, कृषि के विकास एजेंडा को उत्पादन विकास पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, ताकि टिकाऊपन, कृषि आदान उपयोग दक्षता, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन, कुशल आपूर्ति श्रृंखला और किसान की आय जैसे पहलुओं को शामिल किया जा सके। इसी संदर्भ में पूरे भारत में कृषि के टिकाऊ मॉडलों की उपयोगिता जांची जा रही है। **परम्परागत कृषि विकास योजना** *(पीकेवीवाई)* के तहत एक उप-मिशन के रूप में **भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति** *(बीपीकेपी) योजना* के माध्यम से भारत में प्राकृतिक कृषि को बढ़ावा दिया जा रहा है।

नीति आयोग भारत में प्राकृतिक खेती के दस्तावेजीकरण में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। यह संग्रह इन्हीं प्रयासों का परिणाम है। मैं आशा करता हूं कि यह संग्रह प्राकृतिक खेती में सर्वोत्तम पद्धतियों की पहचान करने और कृषि के टिकाऊ मॉडलों को लोकप्रिय बनाने की दिशा में सहायक होगा।

र. चंद

(रमेश चंद)
सदस्य, नीति आयोग

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 18/04/2022

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अमिताभ कांत
Amitabh Kant
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
Chief Executive Officer

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
नीति आयोग, संसद मार्ग,
नई दिल्ली-110 001
Government of India
NATIONAL INSTITUTION FOR TRANSFORMING INDIA
NITI Aayog, Parliament Street,
New Delhi-110 001
Tel. : 23096576, 23096574 Fax : 23096575
E-mail : ceo-niti@gov.in, amitabh.kant@nic.in

प्रस्तावना

भारत एक कृषि आधारित अर्थ-व्यवस्था है, और कृषि उत्पादन के संदर्भ में विश्व में द्वितीय स्थान पर है। कृषि जनगणना 2015-16 के अनुसार, भारत में राष्ट्रीय औसत जोत का आकार 1.08 हेक्टेयर है, जिसमें प्रमुखतः छोटे और सीमांत किसानों की प्रधानता है। छोटे और सीमांत किसानों की स्थिति में सुधार लाने और किसानों की आय को दोगुना करने की दृष्टि से, सरकार ने अपने अंतःक्षेपों को उत्पादन-केंद्रित दृष्टिकोण से बदलकर आय-केंद्रित पहलों को ध्यान में रखकर लागू किया है। वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र, अधिक पैदावार लेने के लिए, रासायनिक खाध एवं उर्वरकों और गुणवत्ता वाले बीजों जैसे महंगे आदानों पर निर्भर हैं, हालाँकि, दीर्घावधि में इसके लिए हमें आर्थिक व्यवहार्यता और पर्यावरण क्षरण की कीमत चुकानी पड़ सकती है।

मौजूदा समय की आवश्यकता, कृषि पारिस्थितिकी के आधार पर टिकाऊ कृषि पद्धतियों जैसे की "प्राकृतिक कृषि" को अपनाना है। यूएनईपी (UNEP) के अनुसार; कृषि पारिस्थितिकी से आशय ऐसी कृषि पद्धतियों से है, जो मुख्य रूप से सामाजिक संबंधों मे बदलाव, किसानों का सशक्तिकरण, स्थानीय रूप से मूल्यवर्धन और लघु मूल्य श्रृंखलाओं पर ध्यान केंद्रित करती है, एवं कृषि में जलवायु परिवर्तन के अनुरूप लचीलापन लाने और प्राकृतिक संसाधन तथा जैव विविधता का संरक्षण करने में मदद करती है।

उक्त परिभाषा प्राकृतिक कृषि, जो की स्थानीय स्तर और पशुधन से उपलब्ध आदानों पर निर्भर है, को विस्तृत और समावेशी पर आधारित एकीकृत कृषि पद्धति बनाता है। मुख्य रूप से एक कृषि पद्धति के रूप में, प्राकृतिक कृषि देश की बढ़ती जनसंख्या की क्षुदा को शांत करने एवं टिकाऊ खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में योगदान देगी। प्राकृतिक खेती की समावेशी प्रकृति और विशेषकर छोटे एवं सीमांत किसान समुदायों के लिए ईसकी आर्थिक व्यवहार्यता के परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर रोज़गार अवसर पैदा होंगे। अवसर और समावेशिता ग्रामीण क्षेत्रों की महिला किसानों के लिए भी लाभकारी होंगी। प्राकृतिक खेती विशेषकर मृदा संरक्षण करने, मरुस्थलीकरण एवं भूमि क्षरण को रोकने के साथ साथ जैव विविधता नष्ट होने से बचाने में मदद करेगी।

इसी संदर्भ में, नीति आयोग द्वारा प्रकाशित किया जा रहा प्राक्रतिक खेती की सफलता की कहानियों का संग्रह संरचित तरीके से किसानों के प्राकृतिक खेती के वास्तविक अनुभवों को दर्शाता है। कृषि क्षेत्र के हितधारक इस पुस्तक का उपयोग एक मार्गदर्शक के साथ साथ प्रेरणा स्रोत के रूप में कर सकते है। नीति आयोग ने प्राकृतिक खेती पर एक सूचनाप्रद द्विभाषी वेबसाइट की भी शुरुआत की है जिसका लाभ संबदध किसानों द्वारा इस कृषि पारिस्थितिकी पहल के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु लिया जा सकता है। मैं आशा करता हूँ कि यह पहल हमें एक सतत, पर्यावरण अनुकूल और आर्थिक व्यवहार्यता वाले कृषि पारितंत्र की ओर ले जाएगी।

अ. कान्त
(अमिताभ कांत)

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

प्राककथन

प्राकृतिक खेती, एक ऐसी कृषि पारिस्थितिक पद्धति है जिसमे कृषि संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग होता है, और रासायनिक आदानों पर निर्भरता न्यूनतम होती है। पर्यावरण संरक्षण में योगदान करते हुए किसानों की आय में सुधार की संभावनाओं को देखते हुए भारत में यह टिकाऊ कृषि पद्धति गति प्राप्त कर रही है। नीति आयोग 2018 से विभिन्न पहलों के माध्यम से प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए अग्रसर है।

इस पद्धति के बारे में हितधारकों के बीच जागरूकता और विश्वास पैदा करने के लिए पूरे भारत वर्ष में प्राकृतिक खेती की पद्धति अपनाने वाले किसानों की सफलता की कहानियों का दस्तावेजीकरण करने की आवश्यकता महसूस की गई। इस उद्देश्य से, हमने एक कॉमपेंडियम तैयार किया है और प्राकृतिक खेती को अपनाने वाले किसानों की सफलता की कहानियों को साझा करने के लिए राज्य सरकारों, कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) और कृषि विश्वविद्यालयों से संपर्क किया है।

हम इस सार- संग्रह के लिए जानकारी और तस्वीरें उपलब्ध कराने के लिए किसानों का तहे दिल से आभार व्यक्त करते हैं। हम राज्य सरकारों, कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) और कृषि विश्वविद्यालयों के बहुत आभारी हैं जिन्होंने देश भर के किसानों के साथ समन्वय किया और सफलता की कहानियां प्रदान की|

हम इस संग्रह की तैयारी के दौरान नीति आयोग के माननीय उपाध्यक्ष डॉ राजीव कुमार के बहुमूल्य मार्गदर्शन और दिशा-निर्देश के लिए आभारी है। हम डॉ रमेश चंद, सदस्य और श्री अमिताभ कांत, सीईओ, नीति आयोग के भी आभारी है जिन्होंने इस सार- संग्रह को साकार करने में सहयोग दिया। हम इस सार-संग्रह के हिंदी अनुवाद के लिए हिंदी विभाग, नीति आयोग एवं भाषा संपादन के लिए सुश्री सलोनी सचदेव, यंग प्रोफेशनल, संचार वर्टिकल को धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

डॉ. नीलम पटेल
वरिष्ठ सलाहकार (कृषि)
नीति आयोग

संक्षिप्ति की सूची

पीकेवीवाई	परम्परागत कृषि विकास योजना
एफएओ	खाद्य एवं कृषि संगठन
एसडीजी	सतत विकास लक्ष्य
बीपीकेपी	भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति
केवीके	कृषि विज्ञान केंद्र
एफवाईएम	फार्म यार्ड खाद
एसएचजी	स्वयं सहायता समूह
केएफएस	किसान फील्ड स्कूल
आईसीआरपी	आंतरिक समुदाय संसाधन व्यक्ति
एपीसीएनएफ	आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती
पीएमडीएस	मानसून-पूर्व सूखी बुवाई
एनपीएम	कीटनाशक रहित प्रबंधन
आईएफएम	एकीकृत कृषि प्रणाली
एसआरआई	चावल गहनता की प्रणाली
एसपीएनएफ	सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती
एटीएमए	कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी
आईसीटी	सूचना और संचार प्रौद्योगिकी
एफपीओ	किसान उत्पादक संगठन
एफपीसी	किसान उत्पादक कंपनी
एपीएमसी	कृषि उपज मंडी समिति
ओएफएआई	भारतीय जैविक खेती संगठन
एसडब्ल्यूआई	गेहूं गहनता की प्रणाली

अनुक्रमणिका

संदेश *iii-ix*

प्रस्तावना *xi*

प्राक्कथन *xiii*

संक्षिप्ति की सूची *xv*

पृष्ठभूमि 1

आंध्र प्रदेश 7

i. श्री अचिर्ती नारायणमूर्ती 8

ii. श्रीमती अनुगुला वेंकट सुगुणम्मा 10

iii. श्रीमती बेलाना श्रीदेवी 12

iv. श्री आर. भास्कर रेड्डी 14

v. श्री चंदू सत्तीबाबू 16

vi. श्री दिलीप कुमार 18

vii. श्रीमती. गम्मेली लक्ष्मी 20

viii. श्री गेद्दा अप्पलानायडू 22

ix. श्रीमती हनुमंतु मुत्यलम्मा 24

x. श्री कांतिपुड़ी सूर्यनारायण 26

xi. श्री किल्लो धर्मराव 28

xii. श्री कोथापल्ली शिव रमय्या 30

xiii. श्री मागन्ती चंद्रइया 32

xiv. श्री मनेती गांगी रेड्डी 34

xv. श्रीमती मुप्पाला निरमालम्मा 36

xvi. श्रीमती वाई पद्मवतम्मा बी. 38

xvii. श्री बी रामकोटेश्वर राव 40

xviii. श्री सयाम रघुनाथ 42

xix. श्री बी श्रीनिवासराव 44

xx. श्री के. वेंकटरमना 46
xxi. श्रीमती टी. यामिनी 48

बिहार 51

i. श्रीमती बिन्दु देवी 52
ii. श्रीमती बबीता देवी 54
iii. श्रीमती माधुरी देवी 56

गुजरात 59

i. श्री चौहान वनराजसिंह दिलीपसिंह 60
ii. श्री चौहान विक्रम सिंह जेसंगभाई 62
iii. श्री देवशीभाई मेराभाई सोलंकी 64
iv. श्री दीक्षित बी पटेल 66
v. श्री शक्तिसिंह वनराजसिंह जडेजा 68
vi. श्री मनोजभाई पुरुषोतमभाई सोलंकी 70
vii. श्री नरवन सिंह के गोहिल 72
viii. श्री रमेशभाई दहियाभाई प्रजापति 74
ix. श्री राताड़िया माछीभाई 76
x. श्री राठवा छेलियाभाई आपसिंहभाई 78
xi. श्री सेठिया रतिलाल विट्ठलदास 80
xii. श्री ठक्कर हरेशभाई मोरारजीभाई 82
xiii. श्री उमेशगिरी शैलेशगिरी गोस्वामी 84

हरियाणा 87

i. श्री आचार्य देव व्रत, माननीय राज्यपाल गुजरात 88
ii. श्री अशोक कुमार 92
iii. श्री जगत राम 94
iv. श्री फूल कुमार 96
v. श्री राज कुमार आर्य 98
vi. श्री सतीश कुमार 100
vii. श्री शैलेंदर कुमार 102

हिमाचल प्रदेश 105

i. श्री अजय रत्तन 106
ii. श्री अनुभव बंसल 108
iii. श्री अर्जुन सिंह 110
iv. श्री दीवान चंद 112
v. श्री गगन पाल 114
vi. श्री कालजांग लाड्डे 116
vii. श्री माया राम 118
viii. श्री मोती लाल 120

ix. श्री पूरन देव ठाकुर 122
x. श्री रूप चंद राही 124
xi. श्री शैलेंद्र शर्मा 126
xii. श्री जे सी शर्मा 128
xiii. श्री सुभाष सदरू 130
xiv. श्री विजय सिंह 132

केरल 135

i. श्री ओमन कुमारन 136
ii. श्रीमती प्रीता कुमारी जयकुमार 138
iii. श्री ज़खारियास जे. शान 140
iv. श्री साबु वी. यू. 142
v. श्री शाजी एन. एम 144

मध्य प्रदेश 147

i. श्रीमती जीतकला मरावी 148
ii. श्री नरेंद्र सिंह राठौड़ 150
iii. श्री मानसिंह गुर्जर 152

महाराष्ट्र 155

i. श्री अभिजीत एम वेखंडे 156
ii. श्री आदिनाथ आनप्पा किनिकर 158
iii. श्री अप्पा साहेब पांडुरंग पाटिल 160
iv. श्री बाबासाहेब शंकर कूट 162
v. श्री होलगे विश्वनाथ गोविंद राव 164
vi. श्री पुंडलीक विष्णु जोरी 166
vii. श्री सत्तप्पा श्रीपति माली 168
viii. श्री तुलसीराम सीताराम चतुर 170

ओडिशा 173

i. श्रीमती उर्मिला सिंह 174
ii. श्रीमती अष्टमी सिंह 176
iii. श्री बेब्रता टुडु 178
iv. श्री जय कृष्णा दलाई 180

पंजाब 183

i. श्री अमरजीत सिंह भंगू 184
ii. श्री अमृतपाल सिंह 186
iii. श्री रंजीत सिंह 188
iv. श्री सविंद्रपाल सिंह छिन्ना 190
v. श्री सुखदेव सिंह 192

राजस्थान........ 195

i. श्री अमर सिंह 196
ii. श्री डेडा राम 198
iii. श्री देवी लाल गुर्जर 200
iv. श्रीधन्ना राम 202
v. श्री हंसराज मीना 204
vi. श्री हरिओम चौधरी 206
vii. पद्मश्री हुकमचंद पाटीदार 208
viii. श्री कन्हैया लाल 210
ix. श्री मांगी लाल 212
x. श्रीमनोहर लाल 214
xi. श्रीमती मेघा पालिवाल 216

उत्तर प्रदेश........ 219

i. श्री अमित वर्मा 220
ii. श्री अवधेश प्रताप सिंह 222
iii. पदमश्री डॉ. भारत भूषण त्यागी 224
iv. श्री हिमांशु गंगवार 226
v. श्री लक्ष्मी शंकर 228
vi. श्री राजीव लोचन शुक्ला 230
vii. श्री राकेश सिंह यादव 232
viii. श्री राम गोपाल सिंह चंदेल 234
ix. श्री संजीव कुमार 236
x. श्री सतीश चंद्र मिश्रा 238
xi. शरद प्रताप सिंह 240
xii. श्री श्याम बिहारी गुप्ता 242
xiii. श्री सुधांशु गंगवार 244
xiv. श्री सुरेंद्र सिंह पटेल 246

उत्तराखंड........ 249

i. श्री नरेन्द्र सिंह मेंहरा 250
ii. श्री विजय जरधारी 252

पृष्ठभूमि

कृषि, भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों में से एक है, कृषि का देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में वर्ष 2018 में 18% का योगदान है जो कि 3.5%[1] के वैश्विक औसत से काफी अधिक है। जैसा कि भारतीय श्रम शक्ति[2] का 43% कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों से जुड़ा हुआ है, अतः कृषि क्षेत्र भारत में रोज़गार के लिए भी सबसे बड़ा स्रोत है। भारतीय किसानों में लगभग 85% छोटे और सीमान्त किसान हैं[3]। भारत दूध, पटसन और दलहन का सबसे बड़ा और धान, गेहूं, गन्ना, कपास, मूँगफली, फल एवं सब्जियों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है[4]। हमारे देश की आबादी को ध्यान में रखते हुए, वर्तमान समय की कृषि पद्धतियों से टिकाऊ कृषि, प्राकृतिक संसाधन और जलवायु परिवर्तन के संरक्षण से संबंधित मुद्दों के समाधान के साथ-साथ देश को खाद्य एवं पोषण सुरक्षा भी एक महती जरूरत है।

भारत में कृषि संबंधी दीर्घकालिक नीतियां खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए 1960 और 1970 के दशकों के मध्य में बनाई गई थीं। भारत में हरित क्रांति ने खाद्यान में आत्मनिर्भरता के साथ-साथ उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि हासिल करने में मदद की। हमने सफलतापूर्वक पूर्ण खाद्य सुरक्षा हासिल कर ली है। हालांकि, यह उत्पादन, संसाधनों के गहन दोहन, अनाजों पर केंद्रित एवं क्षेत्रीय पक्षपात वाला रहा है। इसके परिणामस्वरूप अन्य बातों के साथ-साथ वनों की कटाई, भू-क्षरण, जैव विविधता का नष्ट होना, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में वृद्धि, देश के जल संसाधनों पर बढ़ता दबाव आदि ज्वलंत मुद्दे सामने आए। कृषि आदानों की लागत भी काफी बढ़ गई जिससे किसानों की निवल आय में कमी आई।

बढ़ती हुई आदान लागत के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन से कई किसान ऋण जाल में फँस गए। वर्ष 2019 में मरुस्थलीकरण का मुकाबला करने के लिए आयोजित संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन को संबोधित करने के दौरान माननीय प्रधानमंत्री ने स्वयं किसानों से रासायनिक खाद और कीटनाशकों का उपयोग कम करने का आह्वान किया और मृदा संरक्षण के लिए शून्य बजट प्राकृतिक खेती का उपयोग करने का भी उल्लेख किया।

1 .विश्व विकास संकेतक, विश्व बैंक

2 आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय

3 कृषि जनगणना 2015-16, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

4 *http://www.fao.org/india/fao-in-india/india-at-a-glance/*

पारंपरिक खेती की महत्वपूर्ण चुनौतियाँ

i. जलवायु परिवर्तन

कृषि जलवायु पर निर्भर रहती है और तापमान, अवक्षेपण एवं सूरज की रोशनी जैसे मौसमी तत्वों में होने वाले बदलाओं के प्रति अति संवेदनशील होती है। जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल (आईपीसीसी) की रिपोर्ट 2021 के अनुसार मानव प्रेरित जलवायु परिवर्तन पहले से ही विश्व भर के सभी क्षेत्रों में कई मौसम और जलवायवीय चरम सीमाओं को प्रभावित कर रहा है और परिणामस्वरूप अत्यधिक गर्मी, समुद्री ग्रीष्म लहरें, भारी वर्षा, कुछ क्षेत्रों में कृषि और पारिस्थितिकीय सूखे के साथ-साथ तीव्र उष्णकटिबंधीय चक्रवातों में वृद्धि ये ऐसे मुद्दे हैं जिनसे हमें निकट भविष्य में सामना करना पड़ सकता है।

उपज में कमी, खराब फसल, कम होता भू-जल स्तर आदि जलवायु परिवर्तन का ही परिणाम है जो कृषि अर्थव्यवस्था को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है[5]। आईपीसीसी की रिपोर्ट से यह भी पता चला है कि जलवायु परिवर्तन के कारण अत्यधिक वर्षा, बाढ़, ऊष्माघात, शुष्क दौर, अकाल की आवृत्ति और उग्रता आदि में बढ़ोतरी के साथ भूमि अवक्रमण प्रक्रियाएं भी बढ़ी हैं। जलवायु परिवर्तन के इस दौर में फसलों की विविधता, बीजों को प्राइमिंग विधि से उगाना, न्यूनतम कर्षण क्रियाओं के माध्यम से जल धारण क्षमता को बढ़ाना आदि तरीकों का उपयोग पृथक या संयोजित रूप में करने से फसल की ऊपज और अनुकूलन क्षमता को बेहतर बनाया जा सकता है। रिपोर्ट के अनुसार मौजूदा कृषि प्रणालियों में वृद्धिशील परिवर्तनों के माध्यम से अथवा मौजूदा प्रचलित प्रणालीयों में नए पहलुओं को जोड़ने वाले व्यवस्थित परिवर्तनों के माध्यम से उपर्युक्त अनुकूलन क्षमताओं को प्राप्त किया जा सकता हैं।

ii. रासायनिक आदानों का उपयोग

आदान गहन कृषि ने खाद्य उत्पादन और अनाज आत्मनिर्भरता की दृष्टि से भारत को आत्मनिर्भर देश बनाने में निस्संदेह मदद की है। तथापि, समय के साथ-साथ इस प्रकार के तरीकों की सीमान्त उपयोगिता घटती जा रही है। उदाहरण के लिए, खाद्य उत्पादों में कीटनाशकों का अवशेष मिलना, भौम जल स्तर में कमी, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, कीटनाशकों का प्रतिरोध निर्माण, जल की गुणवत्ता में गिरावट, आनुवंशिकी विविधता का क्षरण और उत्पाद लागत में वृद्धि आदि मुद्दे, रासायनिक खेती से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण समस्याएं हैं। 14 देशों के 48 शोधकर्ताओं द्वारा किए गए एक अध्ययन में सभी नाइट्रस ऑक्साइड स्रोतों एवं सिंकों का विस्तृत आकलन करने से यह पाया गया है कि नाइट्रस ऑक्साइड उत्सर्जन का वर्तमान स्तर पैरिस समझौते के अनुकूल नहीं है। कृषि विश्व स्तर पर एक प्रमुख विषय रही है।

भारत में औसत 34.8 कि.ग्रा/हेक्टेयर फास्फोरस (पी) और 11.8 कि.ग्रा/हेक्टेयर पोटेशियम (के) की तुलना में 86.6 कि.ग्रा/हेक्टेयर नाइट्रोजन (एन) का उपभोग होता है, जो हमें 7.3: 3.0 :1.0 एनपीके अनुपात प्रदान करता है। भारत के कृषि क्षेत्र को 24.2% मीथेन और 96% नाइट्रस ऑक्साइड उत्सर्जन का ज़िम्मेदार माना गया है।

iii. मृदा स्वास्थ्य

भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान (आईआईएसएस) ने अपने विज़न 2030 के दस्तावेज़ में बताया कि पिछले चार दशकों के दौरान कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि होने के बावजूद भी अधिकांश मृदा-आधारित मुख्य उत्पादन पद्धतियों ने प्रतिकूल लक्षण दर्शाया है[6]। भारतीय मिट्टी में मृदाजैविक कार्बन का स्तर 1947 में 2.5% था, जो वर्तमान में घटकर 0.4% हो गई है जो कि स्वीकार्य सीमा (1-1.5%) से काफी कम है। देश के अधिकांश भागों की मृदा में एनपीके, गौण पोषक तत्व (सल्फर, कैल्शियम और मैग्नीशियम) और सूक्ष्म पोषक तत्व (बोरॉन, जिंक, कॉपर और आयरन आदि) की कमी खाद्य उत्पादकता बढ़ाने में एक सीमित कारक है[7]। कई कृषि पद्धतियां जैसेकि भूमि की

5 https: //www.ipcc.ch/report/ar6/wg1/downloads/report/IPCC_AR6_WGI_SPM.pdf

6 Vision 2030, Indian Institute of Soil Science (Indian Council of Agricultural Research), Bhopal

7 Guidelines on The National Project on Management of Soil Health and Fertility, Department of Agriculture & Cooperation, Ministry of Agriculture and Farmers welfare

अत्यधिक जुताई, जुताई का अनुचित समय, अनाज-आधारित गहन फसल पद्धतियों में मृदा की नमी की स्थिति के एरोबिक-एनएरोबिक चक्रण मृदा के भौतिक क्षरण का कारण बनते हैं। इसके अलावा, पौधों की सुरक्षा और खरपतवार प्रबंधन के लिए कृषि रसायनों के उपयोग से मृदा में विषैले यौगिकों का संचय होता है[8]। मृदा में जैविक कार्बन की कमी से मृदा के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों का ह्रास हुआ है। इसके अतिरिक्त, कृषि रसायनों के अंधाधुंध उपयोग ने मृदा की जैव-विविधता, संरचना और जैव-रासायनिक प्रक्रियाओं पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है[9]।भारत में औसत वार्षिक मृदा-क्षरण लगभग 16 टन प्रति हेक्टेयर या सालाना लगभग 5 बिलियन टन है[10]। अनियमित जुताई और मल्चिंग की कमी जैसी दोषपूर्ण कृषि क्रियाएं मिट्टी के कटाव का कारण बनती है, जिसके परिणामस्वरूप मृदा में पोषक तत्वों और/या कार्बनिक पदार्थों की हानि होती है।

iv. जल का अभाव

भारत कृषि योग्य भूमि के मामले में दूसरा और उत्पादन के मामले में सातवां सबसे बड़ा देश है। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, भारत में कृषि के अंतर्गत कुल भूमि का केवल 49% ही सिंचित है[11]। भारत के सिंचित क्षेत्र का लगभग 60% भूजल द्वारा पोषित है[12]। इसके परिणामस्वरूप, भारत का 89% भूजल का उपयोग सिंचाई के लिए होता है[13]। केंद्रीय भूजल बोर्ड ने भारत में कुल भूजल मूल्यांकन इकाइयों के 16.2% को 'अति-शोषित' के रूप में और अतिरिक्त 14% को 'क्रिटिकल' या 'सेमी-क्रिटिकल' स्तर पर वर्गीकृत किया है[14]। उदाहरण के लिए, हरियाणा में, 141 मूल्यांकन इकाइयों में से लगभग 69% इकाइयों का या तो अत्यधिक दोहन हो रहा है या गंभीर स्थिति में हैं। भूजल निष्कर्षण का स्तर 135% पर है। वहीं, पंजाब में150 मूल्यांकन इकाइयों में से 82 फीसदी या तो अति-शोषित या गंभीर स्थिति में हैं। भूजल निष्कर्षण का स्तर 164% पर है।

देश में पानी की खपत को कम करने और कृषि उत्पादकता को अधिकतम करने के लिए, सरकार द्वारा पीएमकेएसवाई (प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना) और परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई) जैसे विभिन्न नवाचारों को कृषि क्षेत्र एवं किसानों के लिए समर्पित किया है।

यह स्पष्ट है कि उच्च-आदान, संसाधन सघन पारंपरिक कृषि पद्धतियां, देश की बढ़ती हुई जनसंख्या का भरण-पोषण एवं पर्याप्त कृषि उत्पादन ओर अधिक समय तक प्रदान नहीं कर सकती। इसलिए, कृषि में लागत-प्रभावी एवं पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों का पता लगाने एवं संधारणीयता सुनिश्चित करने के लिए उन विकल्पों को राष्ट्रीय नीतियों में शामिल किए जाने की तत्काल आवश्यकता है।

प्राकृतिक खेती : भविष्य की राह

भारत में परंपरागत कृषि पद्धतियों की समृद्ध विरासत है जो कि पर्यावरण के अनुकूल एवं कम संसाधन गहन है। इन प्राचीन पद्धतियों को व्यवस्थित रूप से सुरपाला द्वारा वृक्षार्युवेद नामक संस्कृत ग्रंथ में प्रलेखित किया गया है। इस पुस्तक में पादप स्वास्थ्य प्रबंधन के तरीके, पौधों के शरीर क्रिया विज्ञान का वर्गीकरण, पौधों में लगने वाले रोगों एवं कीटों के बारे में तथा इनके नियंत्रण एवं प्रबंधन आदि का व्यवस्थित रूप से वर्णन किया गया है। हालांकि, उपनिवेशवाद एवं ऐसे ही अन्य कारकों के कारण, ये पद्धतियां लंबे समय तक प्रमुख रूप से या भारतीय कृषि की अग्रिम पंक्तियों में नहीं रही। भारत में वर्तमान में प्रचलित प्राकृतिक कृषि पद्धतियों की जड़ें इस प्राचीन ग्रंथ में देखी जा सकती हैं।

कृषि पारिस्थितिक पद्धतियां, पारंपरिक उच्च आदान आधारित कृषि का एक विकल्प है, जिसके परिणामस्वरूप भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं

8 Shahane AA and Shivay YS (2021) Soil Health and Its Improvement Through Novel Agronomic and Innovative.

9 https://www.mdpi.com/2073-445X/9/2/34/pdf

10 https://ijcrt.org/papers/IJCRT1704172.pdf

11 https://agricoop.nic.in/

12 Economic survey 2021-22

13 https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1602634

14 Ground Water Year book India 2019-20, Central Ground Water Board, Ministry of Jal Shakti, Govt. of India.

से समझौता किए बिना बेहतर पैदावार प्राप्त की जा सकती है। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा भी इसका समर्थन किया गया है। विभिन्न देशों ने संधारणीय विकास (एस डी जी) के लक्ष्यों को प्राप्त करने और खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन के मुद्दों को संबोधित करने के लिए बड़े पैमाने पर प्राकृतिक कृषि जैसी पद्धतियों को अपनाया है (एफएओ, 2016; यूएनडीपी, 2015)। सतत कृषि विधाओं में; मिश्रित फसल, उत्पादित फसलों की विविधता में वृद्धि एवं खेतों में और उसके आसपास लाभकारी कीड़ों, अन्य जानवरों और पौधों की विविधता को बढ़ाना साथ ही साथ मिट्टी में सूक्ष्म जीवों की विविधता और तीव्रता को बढ़ावा देना इत्यादि शामिल है । इसके अलावा, टिकाऊ कृषि पद्धतियां ऊपरी मिट्टी के कार्बनिक पदार्थ की मात्रा को बढ़ाती हैं, जिससे वर्षा जल को धारण एवं संग्रहीत करने की क्षमता बढ़ जाती है।

भारत में प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक खेती को रसायन-मुक्त एवं स्वदेशी पशु-आधारित खेती के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह स्वयं किसान द्वारा स्वदेशी गायों से तैयार किए गए कृषि-निर्मित संसाधनों पर आधारित है। 1990 के दशक के मध्य के दौरान पदमश्री सुभाष पालेकर ने गाय केंद्रित कृषि की प्राचीन भारतीय पद्धतियों को लोकप्रिय बनाने के लिए काफी प्रयास किए हैं, जिसमें गाय के गोबर, गोमूत्र, गुड़, बेसन इत्यादि प्राकृतिक आदानों का प्रयोग कर बनाए गए प्राकृतिक आदानों का उपयोग, उर्वरकों और कीटनाशकों के स्थान पर पलवार पद्धतियों सहजीवी अंतर-फसल का उपयोग शामिल हैं। उन्होंने देशभर में विभिन्न कार्यशालाओं और प्रशिक्षणों का आयोजन किया।

भारत सरकार, केंद्र प्रायोजित योजना-परंपरागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई) के तहत प्राकृतिक खेती को भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (बीपीकेपी) के रूप में बढ़ावा दे रही है। बीपीकेपी एक विविध कृषि प्रणाली है जो फसलों, पेड़ों और पशुधन को एकीकृत करती है, जिससे कार्यात्मक जैव विविधता का इष्टतम उपयोग किया जा सकता है, साथ ही मिट्टी की उर्वरता की बहाली के साथ-साथ पर्यावरणीय स्वास्थ्य जैसे कई अन्य लाभ प्रदान करते हुए किसान की आय बढ़ाने में भी मदद करती है।

बीपीकेपी के भारत में कई स्वदेशी रूप हैं, जिनमें से सबसे व्यापक रूप आंध्र प्रदेश में प्रचलित है। वर्तमान में, बीपीकेपी को आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, केरल, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, ओडिशा, मध्य प्रदेश और तमिलनाडु सहित देश के लगभग 8 राज्यों द्वारा अपनाया गया है। आंध्र प्रदेश और हिमाचल प्रदेश ने किसानों के कल्याण एवं पर्यावरण के संरक्षण के उद्देश्यसे राज्य स्तरीय समर्पित संस्थाओं जैसे रायथु साधिकार संस्थान (आरवाईएसएस),एवं प्राकृतिक खेती-खुशहाल किसान का गठन किया है। हालांकि, विभिन्न राज्यों के कई किसान भी खुद बड़े पैमाने पर इस खेती का अभ्यास कर रहे हैं।

प्राकृतिक खेती के लाभ

प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास, किसानों की परेशानी एवं भोजन, पानी या वातावरण में उर्वरकों के अवशेष एवं कीटनाशकों से उत्पन्न स्वास्थ्य समस्याओं जैसी चुनौतियों का समाधान प्राकृतिक खेती को अपनाकर किया जा सकता है। रासायनिक आदानों की जगह प्राकृतिक आदानों का उपयोग करने से एक बेहतर जड़ प्रणाली पनपती है और मिट्टी के लाभकारी सूक्ष्मजीवों के साथ जुड़ने की क्षमता प्राप्त होती। मृदा, फसल एवं बीज के स्वास्थ्य, बेहतर उत्पाद गुणवत्ता, बेहतर पैदावार स्तर एवं पैदावार स्थिरता में बढ़ोत्तरी होती है।

अंतरफसल को अपनाना किसानों के लिए नियमित आय सुनिश्चित करता है क्योंकि वे नियमित अंतरालों पर विभिन्न प्रकार के फसल उत्पादों की कटाई कर आय प्राप्त कर सकते हैं। मिश्रित फसल प्रणाली मृदा की पोषण क्षमता को बेहतर बनाती है, जो उत्पादकता के स्तर को बढ़ाती है। हाल के अध्ययनों से पता चला है कि चावल की खेती करने वाले किसानों ने रासायनिक आदानों का प्रयोग करते हुए औसतन रु.5961प्रति एकड़ खर्च किया, जबकि प्राकृतिक कृषि तकनीकों का उपयोग करने वाले किसानों ने प्राकृतिक आदानों की लागत के रूप में केवल रु. 846 प्रति एकड़ खर्च किया[15]।

15 Can Zero Budget Natural Farming Save Input Costs and Fertiliser Subsidies? Evidence from Andhra Pradesh- Niti Gupta, Saurabh Tripathi, and Hem H. Dholakia- CEEW Report | January 2020.

प्राकृतिक खेती में उपयोग की जाने वाली मल्चिंग तकनीक मृदा की जल धारण क्षमता में सुधार करती है, फसल सिंचाई आवश्यकताओं में कमी लाती है तथा भूजल प्रदूषकों पदार्थों की क्षमता को नियंत्रित करती है। आंध्र प्रदेश में किए गए प्रारंभिक अध्ययनों से पता चलता है कि प्राकृतिक खेती की पद्धति को अपनाने से जल की खपत में काफी कमी हो जाती है जिससे बिजली सब्सिडी के बोझ को कम करने में भी सहायता मिल सकती है।

पारंपरागत कृषि में उपयोग किए जाने वाले रासायनिक आदान, कृषकों और उपभोक्ताओं दोनों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं और निक्षलन के कारण जल संसाधनों पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जबकि ऐसे प्रमाण मिले हैं कि प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों ने रासायनिक आदानों का उपयोग न करके स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया है।

20वीं पशुधन गणना के अनुसार भारत इस क्षेत्र में 4.6% प्रति वर्ष की वृद्धि दर के साथ दुनिया का सबसे बड़ा पशुधन मालिक है। हालांकि, इस क्षेत्र की स्थिरता प्रमुख चिंता का कारण बनी हुई है, जिसे प्राकृतिक खेती जैसी कृषि पारिस्थितिकीय पद्धतियों में पशुधन के एकीकरण से सुलझाया जा सकता है।

इसके अलावा, हम केंद्र और राज्य सरकारों पर सब्सिडी के वित्तीय बोझ में कमी देख सकते हैं। उदाहरणतया, केंद्रीय बजट में 2021-22 के लिए 79,530 करोड़ रुपये की बजट उर्वरक सब्सिडी है। अनुमानित शुद्ध बुवाई क्षेत्र (एनएसए) के 14 करोड़ (140 मिलियन) हेक्टेयर के साथ, रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करने वाले एनएसए में 1% की कमी (~14 लाख हेक्टेयर) से केंद्र सरकार को प्रति वर्ष 794 करोड़ रुपये की उर्वरक की बचत हो सकती है। इसी तरह, पानी की खपत में कमी करके बिजली सब्सिडी को भी कम किया जा सकता है। इसे याद रखना महत्वपूर्ण है कि भारत के सिंचित क्षेत्र का लगभग 2/3 भाग भूजल से पोषित होता है। मुख्य रूप से बिजली से चलने वाले नलकूपों के उपयोग;जो कि किसानों के लिए अत्यधिक रियायती अथवा कभी-कभी शुल्क मुक्त भी होता है।

प्राकृतिक खेती की सफलता की कहानियों का सार-संग्रह

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के अपने प्रयासों के एक हिस्से के रूप में, नीति आयोग ने इन प्रथाओं के प्रमाण बनाने के साथ-साथ इन प्रथाओं के सत्यापन की आवश्यकता को महसूस किया और अनुसंधान कार्यकलापों को आरम्भ करने के लिए पहले ही आवश्यक कदम उठाए हैं। यह संग्रह इस दिशा में भारत के विभिन्न राज्यों में किसानों द्वारा अपनाई गई सर्वोत्तम पद्धतियों को एकत्रित करने और उनका दस्तावेजीकरण करने का एक प्रयास है। ये सफलता की कहानियां भारत भर में कृषि विज्ञान केंद्रों (KVK) जैसे आधिकारिक चैनलों के माध्यम से एकत्र किया गया है।यह देखा गया है कि किसानों ने गोबर की खाद (FYM), वर्मीकम्पोस्ट, आदि के उपयोग के साथ-साथ प्राकृतिक खेती के सिद्धांतों को लागू करने के लिए अपनी स्वयं की तकनीक और पद्धतियाँ विकसित की हैं। उन्होंने बहु-फसल पद्धति के अंतर्गत प्राकृतिक खेती के सिद्धांतों को अपनाते हुए अनाज, दालें, सब्जियां, फलों, औषधियों एवं फूलों की खेती सफलता पूर्वक की है।

प्राकृतिक खेती के माध्यम से उगाई जाने वाली फसलें

स. क्र.	राज्य	किसानों की संख्या	फसल
1	आंध्र प्रदेश	21	सब्जियां, सिटरस, रेड ग्राम, धान, काला चावल, मक्का, रागी, मूंगफलीआदि
2	बिहार	03	धान, गेहूँ, मक्का, सब्जियां, सरसों आदि
3	गुजरात	13	केला, फालसा, पपीता, मूंगफली, मिश्रित सब्जियां, धान, गेहूं, नारियल, मूंगफली, मिर्च, चुकंदरआदि
4	हरयाणा	07	गेहूं, चावल, गन्ना, नींबू, केला, अनार, सेब, सब्जियां, जड़ वाली फसलें, गेंदा, चना मटरआदि
5	हिमाचल प्रदेश	14	अनाज और सब्जियों के साथ सेब, सब्जियां, हल्दी, मक्का, सेब और मटर, गन्ना, सूरजमुखी, उड़द

6	केरल	05	सब्जियां, चावल, हल्दी, आर्किड, कंदइत्यादि
7	मध्य प्रदेश	03	आम, धनिया, सरसों, चना, गेहूं, हरा चना, काला चना, हल्दी आदि
8	महाराष्ट्र	08	गन्ना, सोयाबीन, धान, मूंगफली, गेहूं, प्याज, सब्जियां, बीटी कपास, ज्वार आदि
9	उड़ीसा	04	देशी सुगंधित धान, काला चावल, लाल चावल, सब्जियां, लाल चना, हरा चना, बाजरा आदि
10	पंजाब	05	चावल, गेहूं, नाशपाती, सब्जियां, फूल आदि
11	राजस्थान	11	क्लस्टर बीन, मूंग, गेहूं, चना, सरसों, किन्नू, मेथी, मक्का, मेंहदी, तिल आदि
12	उत्तर प्रदेश	14	धान, सुगंधित चावल, गेहूं, गन्ना, पपीता, मूंगफली, आम, आंवला, मौसमी, ब्राह्मी, मोरिंगा, गेहूं + मटर + चना + सूरजमुखी, सरसों + मटर, बाजरा, पुदीना + हरा चना इत्यादि
13	उत्तराखंड	02	गेंहूँ
Total		**110**	

अधिकांश किसानों ने बताया कि प्राकृतिक खेती की पद्धतियों को अपनाने से फसल की गुणवत्ता और मात्रा में सुधार के साथ ही खेती की लागत में काफी कमी आई है। प्राकृतिक खेती से उत्पादित उत्पादों से अधिक कीमतें भी प्राप्त होती है। उन्होंने प्राकृतिक उत्पादों की खेती और खपत के माध्यम से किसानों के साथ-साथ उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सुधार होना बताया है। सर्वोत्तम प्रथाओं के इस संग्रह का उद्देश्य प्राकृतिक खेती के लाभों और वास्तविक प्रथाओं के बारे में जागरूकता फैलाना है ताकि प्राकृतिक खेती को पूरे देश में बड़े पैमाने पर किया जा सके। इस उद्देश्य के साथ, संबंधित किसान के संपर्क विवरण को भी शामिल किया गया है ताकि उनके द्वारा अपनाई जाने वाली प्रथाओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए उनसे संपर्क किया जा सके।

आंध्र प्रदेश

श्री अचिर्ती नारायणमूर्ती

गाँव : पी कोटा गुडेम
मंडल : नातावरम
सम्पर्क : 9963859901
शिक्षा : इंटरमिडीएट

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 0.5 एकड़ के क्षेत्र में प्राकृतिक खेती को अपनाया और दो साल के भीतर धीरे-धीरे पूरी 2 एकड़ भूमि को प्राकृतिक खेती के तहत लाया।
- एक जोड़ी गाय और भैंस के मालिक हैं।
- बीज उत्पादन के लिए 0.4 एकड़ में धान की देसी किस्मों को एसआरआई पद्धति से उगाया।
- सभी प्राकृतिक कृषि आदानों जैसे बीजामृत, घनजीवामृत, द्रवजीवामृत, पीएमडीएस (आच्छादन), विकास प्रवर्तकों (अंडे, अमीनो एसिड, सपतधानयांकुर कषाय और वानस्पतिक अर्क) का उपयोग, और कीट प्रबंधन के लिए कषाय को अपनाया।
- मास्टर किसान या सर्वोत्तम अभ्यास करने वाले किसान, जिन्हें सामुदायिक संसाधन व्यक्ति (सीआरपी) कहा जाता है के रूप में अहम भूमिका निभाते हैं| सभी तकनीक को प्रत्येक किसान तक ले जाते हैं, और नियमित रूप से क्षेत्र के दौरे, किसान क्षेत्र के स्कूलों और प्रशिक्षण वीडियो के माध्यम से किसानों को निरंतर सहायता प्रदान करते हैं।
- महिला एसएचजी बैठकों में किसानों के अनुभवों पर नियमित रूप से चर्चा की जाती है।
- किसान को जब भी कोई समस्या हो वह ग्राम स्तर के सीआरपी से संपर्क कर सकता है। यदि ग्राम स्तरीय सीआरपी समस्या का समाधान करने में सक्षम नहीं है, तो इसे एक वरिष्ठ सीआरपी के पास भेज दिया जाता है जो 5 गांवों के लिए जिम्मेदार होता है।
- एपीसीएनएफ क्षेत्र के कर्मचारियों, किसानों और कृषि विभाग के अधिकारियों की उपस्थिति में फसल कटाई के साथ साथ फसल कटाई प्रयोग भी सम्पन्न कीये जाते है।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	धान (एमटीयू 1121)	धान (एमटीयू 1121)
खेती की लागत(रु.)	42550	55650
उत्पादन (कुंटल)	68.32	52.27
कुल लाभ (रु.)	125470	108050
शुद्ध लाभ (रु.)	82920	52400
लाभ लागत अनुपात	1.94	0.94

लाभ और उपलब्धियां:

- खेत में केंचुओं की संख्या में वृद्धि।
- बढ़ी हुई जल धारण क्षमता के साथ मिट्टी स्पंजी हो गई।
- आस-पड़ोस के किसानों को रसायनों के उपयोग को कम करने के लिए प्रेरित किया।
- परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य में सुधार।
- गांव में चैंपियन किसान बने।

स्रोत: *आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्रीमती अनुगुला वेंकट सुगुणम्मा

गांव : नागामंगलम

मंडल : पलमनेर

जिला : चित्तूर

संपर्क नं. : 9550166197

शिक्षा : इंटरमीडियट

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- एक सामुदायिक संसाधन व्यक्ति द्वारा प्राकृतिक खेती पद्धतियों और लाभों के बारे में मंडल स्तर पर हुई बैठक में भाग लेने के बाद 2018 में प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- 18 एकड़ जमीन की मालिक हैं जिसमें से 15 एकड़ क्षेत्र में आम का बाग, 2 एकड़ क्षेत्र में मूंगफली और 1 एकड़ क्षेत्र में धान की फसल लगाते हैं।
- बीजामृत, घनजीवामृत, द्रवजीवामृत, कषायम आदि सभी प्राकृतिक कृषि अदानों का उपयोग किया।
- 400 किलो घनजीवामृत प्रति एकड़ मिट्टी में डाला, उसके बाद 3 टन गोबर की खाद डाली। द्रवजीवामृत का छिड़काव हर 15 दिन में किया। बीजामृत से बीजोपचार किया।
- नवधान्य को 9 एकड़ भूमि में बोया गया और बाद में इसे मिट्टी में मिला दिया गया।
- गांव के अन्य किसानों को प्राकृतिक कृषि पद्धतियों के बारे में जागरूक किया। एक मौसम के बाद, कई किसान प्रेरित हुए और प्राकृतिक खेती करने लगे।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	धान (धनिस्टा)	धान (आर एन आर-15048)
खेती की लागत(रु.)	25950 (पीएमडीएस लागत सहित)	32450
उत्पादन (कुंटल)	27.4	24
कुल लाभ (रु.)	68500	45600
शुद्ध लाभ (रु.)	42550	13150
लाभ लागतअनुपात	1.6	0.4

लाभ और उपलब्धियां:

- खेती की लागत में कमी।
- परिणामस्वरूप रसायन मुक्त खाद्य प्राप्त हुआ।
- कीट और रोगों के प्रकोप में कमी।

- केंचुओं की संख्या में वृद्धि से मृदा उर्वरता में वृद्धि।
- मृदा संरक्षण और सुधार हुआ।
- चक्रवात के दौरान धान की फसल गिरी नहीं। निवार चक्रवात के दौरान, फसलें बाढ़ के प्रति प्रतिरोधी रही, जबकि, दूसरी ओर, रासायनिक खेती वाले खेतों में काफी नुकसान हुआ था।
- धान को चावल में प्रसंस्करण के बाद बेचकर रासायनिक खेती करने वाले किसानों की तुलना में अधिक लाभ अर्जित किया।

***स्रोत:** आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्रीमती बेलाना श्रीदेवी

जिला : विजयनगरम

संपर्क न. : 9912693789

शिक्षा : डिग्री

अपनाई गई कृषि पद्धतियां:

- रबी सीजन में देसी धान की 9 किस्मों को उगाया।
- धान की खेती से पहले हरी खाद के रूप में नवधान्या का उपयोग किया।
- खरपतवार प्रबंधन के लिए कृषि यंत्रीकरण को अपनाया।
- द्रवजीवामृत, घनजीवामृत, और काषाय जैसे प्राकृतिक आदानों को तैयार किया ।
- प्राकृतिक आदानों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए इनपुट डीलर (डीएईएसआई) कार्यक्रम के लिए कृषि विस्तार सेवाओं में डिप्लोमा के माध्यम से इनपुट डीलरों को प्रशिक्षण दिया।
- कृषि विभाग के किसान फील्ड स्कूल (एफएफएस) प्रशिक्षण में भाग लिया।
- एपीसीएनएफ (आंध्र प्रदेश सामुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती) पर प्रशिक्षण दिया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	धान (आर जी एल – 2537)	धान (आर जी एल – 2537)
खेती की लागत (रु.)	32500	34000
उत्पादन (कुंटल)	67.12	66.56
कुल लाभ (रु.)	140952	139776
शुद्ध लाभ (रु.)	108452	105776
लाभ लागत अनुपात	3.3	3.1

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी।
- कीटों और रोगों का प्रबंधन किया।
- किसानों को आगे आने और एपीसीएनएफ विधियों के साथ एकीकृत प्री-मानसून शुष्क बुवाई (पीएमडीएस) का अभ्यास करने के लिए प्रेरित किया ।
- इसके परिणामस्वरूप रासायनिक मुक्त स्वस्थ भोजन प्राप्त हुआ।
- कृषि अनुसंधान केंद्र (एआरएस) द्वारा उत्तम महिला रायथू से सम्मानित किया गया।

स्रोत: *आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्री आर. भास्कर रेड्डी

गाँव : एन.गुंडलापल्ली
मण्डल : बेलुगुप्पा
जिला : अनंतपुर
संपर्क सं : 9346000811
योग्यता : इंटरमीडीएट

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 2018 में प्राकृतिक खेती शुरू की।
- कुल 15.00 एकड़ खेत में प्राकृतिक खेती के तहत 5 एकड़ भूमि पर खेती की गई। इसमें से 3.50 एकड़ में मूंगफली के साथ अरहर, सेम, लोबिया और अरंडी की अंतरफसलें उगाई। 0.50 एकड़ में मूंगफली मुख्य फसल थी, जबकि प्याज, ज्वार, दाल, बीन और अरंडी की अंतरफसल उगाई गई। टमाटर और सब्जियां 0.50 एकड़ में उगाई हैं, जबकि चारा फसलें जैसे मटर और दाल 0.50 एकड़ में मानसूनपूर्व शुष्क बुवाई (पीएमडीएस) के तहत उगाई जाती हैं।
- घनजीवामृत, द्रवजीवामृत, विभिन्न वानस्पतिक अर्क (नीम का अर्क, छाछ, अग्निस्त्र, कषाय), मल्चिंग, बुआई और बहु-फसल जैसी विधियों को अपनाया।
- प्रति एकड़ में 400 किलोग्राम घनजीवामृत का प्रयोग किया और फसल के पकने तक हर 15 दिन में जीवामृत का छिड़काव किया।
- फसल अवशेषों को पशुओं के चारे के रूप में इस्तेमाल किया जिससे दूध उत्पादन और दूध में मक्खन का प्रतिशत बढ़ा।
- एसएचजी की सहायता से साथी किसानों को प्राकृतिक खेती में इस्तेमाल होने वाले इनपुट के बारे में शिक्षित किया और रायथु भरोसा केंद्रों में सफलता की कहानियों को साझा करके उन्हें प्रेरित किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (2 हेक्टेयर)			पारंपरिक खेती (2 हेक्टेयर)	
फसल	मूँगफली, अरहर, सेम की फली, अरंडी, लोबिया, प्याज, मूंग, उड़द, सब्जियाँ			मूँगफली, अरहर	
खेती की लागत (रु.)	96500			125000	
उत्पादन (कुंटल)	मूँगफली	अन्य फसलें	कुल	मूँगफली	अरहर
	8	24.5	32.5	22	4
कुल लाभ (रु.)	221000			145000	
शुद्ध लाभ (रु.)	124500			20000	
लाभ लागत अनुपात	1.29			0.16	

लाभ और उपलब्धियां

- संबद्ध गतिविधियों के साथ-साथ कृषि के माध्यम से आय में वृद्धि।
- द्रवजीवामृत का छिड़काव करने से कीट एवं रोगों का प्रकोप कम हुआ।
- बहु-फसल से खेत में लाभकारी कीड़ों और गौरैयों की संख्या में वृद्धि हुई।
- मिट्टी की उर्वरता और मिट्टी में केंचुओं की संख्या में वृद्धि।
- फसल ने सूखे की स्थिति का सामना किया।
- फसल अवशेषों के मवेशियों के चरने से दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हुई।
- कम निवेश लागत और बहु-फसल के साथ नियमित आय प्राप्त की।
- बेहतर पारिवारिक स्वास्थ्य।

स्रोत: आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती

श्री चंदू सतीबाबू

गांव : अम्मापलम
मंडल : पेडावेगी
जिला : पश्चिम गोदावरी
राज्य : आंध्र प्रदेश
संपर्क संख्या : 9676647112
शिक्षा : 10वीं
ईमेल : chandusattibabu@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- पिछले 4 वर्ष से प्राकृतिक खेती कर रहे हैं।
- मानसून पूर्व शुष्क बुवाई (पीएमडीएस) का अभ्यास किया जिसमें खरीफ फसल अर्थात् धान से पहले 18 प्रकार के बीजों (नवधान्य) को बिखेर कर बोना (कार्यकाल-2 महीने) शामिल है। तत्पश्चात्, रबी की फसल के रूप में मक्का की पंक्तियों के बीच में नवधान्य बीज बिखेरकर बोने के परिणामस्वरूप मक्का की एकल कृषि पद्धति समाप्त हो गयी।
- एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया।
- समेकित मक्का की खेती का अभ्यास कर रहे किसानों से बातचीत की।
- प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से तथा कृषि विषयक स्कूलों के माध्यम से प्रचार किया।
- किसानों की सफलता की कहानियों और सर्वोत्तम पद्धतियों को प्रदर्शित करते हुए पिको (वीडियो प्रसार के लिए मिनीप्रोजेक्टर) के साथ प्रदर्शन आयोजित किए गए ।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	मक्का	मक्का
खेती की लागत (रु.)	23650	29450
उत्पादन (कुंटल)	48	37
कुल लाभ (रु.)	88800	68450
इंटरक्रॉप्स/नवदन्या से प्राप्त लाभ	3000	-
शुद्ध लाभ (रु.)	68150	39000
लाभ लागत अनुपात	3.7	2.3

लाभ और उपलब्धियां

- फसलों के प्रयोग से पोषक तत्वों को हानि पहुंचाए बिना तथा मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखकर बफर जोन के रूप में उपयोग किया।

- जैव विविधता मे सुधार के परिणामस्वरूप सूक्ष्म जलवायु में संशोधन हुआ है जो लाभकारी कीड़ों को बढ़ावा देता है और मृदा माइक्रोबियल पारिस्थितिकी में सुधार करता है।
- उर्वरकों और कीटनाशकों पर खर्च की गई लागत में कमी आई, क्योंकि नवधान्या अपनी जड़ों के माध्यम से पोषक तत्वों की आपूर्ति करता है।
- फॉलआर्मीवर्म के संक्रमण में कमी आई, क्योंकि नवधान्या ऐसे लाभकारी कीड़ों को बढ़ाता है जो संक्रमण को नियंत्रित करते हैं और ऐसे जीवित पलवार के रूप में भी कार्य करता है जो कार्बन फुट प्रिंट का सृजन करता है।
- फसल बुआई के बाद फसल अवशेषों का चारे के रूप में उपयोग किया।
- रूट मास में वृद्धि हुई।
- श्रम और लागत की बचत हुई।
- अधिक उपज और लाभ प्राप्त हुआ।
- स्थाई रसायन मुक्त भोजन सुनिश्चित हुआ।
- अनाज के वजन में वृद्धि और मक्का में अधिक अनाज पाया गया।

स्रोत: *आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्री दिलीप कुमार

ग्राम : पेधाकोंदुरु
मंडल : दुग्गीराला
जिला : गुंटूर
मोबाइल नंबर : 8919057279
योग्यता : डिग्री

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 2018 में प्राकृतिक खेती को अपनाया और 2019 से खेत की फसल पद्धति को परती धान और मक्का से पीएमडीएस, धान और मक्का में बदलाव किया।
- मुख्य फसलों से पहले, पीएमडीएस को विभिन्न प्रकार के 18 बीजों (ज्वार, मक्का, सनई, पिलिपेसरा, ढैंचा, सरसों, कुल्थी, लोबिया, उड़द, मूंग, बाजरा, ककड़ी, तोरई, मेथी, सोरेल के पत्ते, चौराई, चुक्काकुरा) के साथ अपनाया।
- पत्तेदार सब्जियों तथा लताओं का उपयोग किया और फसलों के अवशेष को मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के लिए मिट्टी में मिलाया।
- धान को प्रसारण विधि से बोया और सभी प्राकृतिक खेती प्रोटोकॉल का अनुपालन किया (कीटों को नियंत्रित करने के लिए द्रावण और वानस्पतिक अर्क, वृद्धि कारकों, पीली प्लेट लगाई, फेरोमोनट्रैप का उपयोग किया)।
- परिवार के उपभोग के लिए धान के मेंड़ों पर अरवी, ग्वारफली, राजमा, सहजन और आम बोया। कीटों को पकड़ने के लिए मेड़ों पर गेंदा बोया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदण्ड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	धान (बीपीटी-5204)	धान (बीपीटी-5204)
खेती की लागत (रु.)	16990 (पीएमडीएस सहित)	26300
उत्पादन (कुंटल)	32.55	24
कुल लाभ (रु.)	52042	35200
शुद्ध लाभ (रु.)	35052	8900
लाभ-लागत अनुपात	2	0.33

लाभ और उपलब्धियां

- उत्पादन लागत में कमी ।
- मुख्य फसल से पहले पीएमडीएस पद्धति के माध्यम से मुख्य फसल की उपज में वृद्धि की।
- केंचुए की संख्या और मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि ।
- जल धारण क्षमता में वृद्धि के परिणामस्वरूप सिंचाई के अंतराल में वृद्धि हुई।
- पीएमडीएस की पद्धति से मुख्य फसल को कीट, रोग और सूखे की स्थिति के लिए प्रतिरोधी बनाया।

- लाभकारी कीड़ों की संख्या में वृद्धि।
- कई किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

***स्रोत:** आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्रीमती. गम्मेली लक्ष्मी

गांव : इथगुप्पा
मंडल : पदेरु
जिला : विशाखापट्टनम
संपर्क नं : 7382505046

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- पंक्ति पद्धति (20 फसलें) का प्रयोग कर बहु-फसल को अपनाया।
- बीजामृत के उपयोग से बीज उपचार किया। नर्सरी बेड बनाकर पौधे उगाए और 20 दिन के होने पर उनका कतार विधि से रोपण किया।
- रागी की नई फसलों पर एक ही दिशा में लकड़ी का तख़्त खींचा जाता है। इस अभ्यास ने टिलर की संख्या में वृद्धि की।
- सीमावर्ती फसलों के रूप में अरहर, मक्का और गेंदा लगाया।
- 400 किलो घनजीवामृत को दो भागों में बांटकर डाला गया; एक शुरुआती खुराक के रूप में और दूसरी प्रत्यारोपण के बाद।
- 1,200 लीटर द्रव्यजीवामृत का तीन अंतरालों में छिड़काव किया और इसे एक टम्ब्लर से प्रत्येक पौधे के नीचे डाल दिया गया।
- निराई हाथ से और साइकिल वीडर की मदद से की गई।
- फेरोमोनट्रैप और पीली/ सफेद चिपचिपी प्लेटों का उपयोग किया गया।
- नीमास्त्र और ब्रह्मास्त्र का एक बार छिड़काव करके कीटों को नियंत्रित किया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	मुख्य फसल: रागी अंतर फसल: कँगनी,छोटा बाजरा, राजमा, ग्वार फली, भिंडी, मक्का, मिर्च, बस्तर, बीन्स,कद्दू, गेंदा	रागी एकल फसल प्रसारण पद्धति
खेती की लागत(रु.)	9500	10750
उत्पादन (कुंटल)	14.23 (रागी: 12.87 अंतर फसल-1.36)	6
कुल लाभ (रु.)	50743	19800
शुद्ध लाभ (रु.)	41243	9050
लाभ लागत अनुपात	4.3	0.8

लाभ और उपलब्धियां

- उच्च फसल विविधता (20+ फसल) के साथ बहु-फसल प्रणाली ने अच्छा कृषि पारिस्थितिकी तंत्र बनाया है। कोई गंभीर कीट और रोग का प्रकोप नहीं देखा गया।

- पिछले वर्ष की तुलना में पत्तेदार सब्जियों की पारिवारिक खपत में वृद्धि हुई है।
- बहु-फसल की उपज पूरे परिवार के लिए पर्याप्त बाजरा और दालें प्राप्त हुईं और अतिरिक्त रागी बेचकर मौद्रिक लाभ प्राप्त किया।
- अपने गांव और आसपास के गांवों में अन्य प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों को प्रेरित किया। उनका खेत पदेरु मंडल में बहु-फसल मॉडल को बढ़ावा देने के लिए एक अच्छा मंच बन गया।

स्रोत: *आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्री गेद्दा अप्पलानायडू

मंडल : गजपतिनगरम
जिला : विजयानगरम
संपर्क न. : 9182442172
शिक्षा : छठी कक्षा

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- बीजामृत, घनजीवामृत, द्रवजीवामृत, प्री-मानसून सुखी बुवाई (पीएमडीएस), वृद्धि कारक (ग्रोथ प्रमोटर्स) (अंडा अमीनो एसिड, सप्तन्याकुरा कषाय और वनस्पति अर्क) जैसे सभी प्राकृतिक खेती प्रोटोकॉल को अपनाया, और कीट प्रबंधन के लिए कषाय का प्रयोग किया।
- पीएमडीएस में 18 से 20 प्रकार की फसल (जिसे नवधान्य कहा जाता है) का छिटकाव शामिल है, जिसमें अनाज, दलहन, फलियां, हरी खाद फसलें, तिलहन, पत्तेदार सब्जियां, मसाले और मसालों को गर्मियों में रिले फसल के रूप में बोया जाता है ताकि गर्मियों में खेतों को विभिन्न फसल विविधता के हरे आवरण से कवर किया जा सके।
- बुवाई के 45-60 दिनों के बाद पीएमडीएस की फसल को पशुओं द्वारा चराया गया और धान की बुआई से पहले इन अवशेषों को मिट्टी में मिलाया गया।
- सामुदायिक कैडर मास्टर किसान ने उन्हें प्राकृतिक खेती करने के लिए प्रेरित किया। पहले वर्ष में कीट नियंत्रण के लिए उन्होंने बीज उपचार के साथ शुरुआत की और वनस्पति अर्क का उपयोग किया। दूसरे वर्ष तक जैसा कि विश्वास बढ़ गया था उन्होंने प्राकृतिक खेती के तहत सभी प्रोटोकॉल की शुरुआत की।
- 400 किलो प्रति एकड़ की दर से मिट्टी में घनजीवामृत का उपयोग किया।
- 15 दिनों के अंतराल पर 200लीटर /एकड़ मिट्टी में द्रवजीवामृत का उपयोग किया।
- बीज उपचार, पत्तियों के ऊपरी भाग की क्लिपिंग, पीला चिपचिपे प्लेट्स, फेरोमोनट्रैप, बर्ड पर्च इत्यादि जैसे सभी गैर-परक्राम्य को अपनाया
- कीट नियंत्रण के लिए वनस्पति अर्क का उपयोग किया और पैदावार बढ़ाने के लिए वृद्धि कारकों को अपनाया।
- सामुदायिक विद्वानों (सीआरपी) नामक मास्टर किसानों ने प्रत्येक किसान को प्रौद्योगिकी प्रदान की और किसान को निरंतर हैंड-होल्डिंग एवं सहायता प्रदान की।
- सीआरपी ने किसानों के लिए नियमित क्षेत्र का दौरा किया और किसान क्षेत्र में नियमित रूप से कृषक फील्ड स्कूल का भी आयोजन किया और प्रथाओं के पैकेज का वीडियो प्रसार किया।
- महिला एसएचजी की बैठक में किसानों के अनुभवों पर नियमित रूप से चर्चा की जाती है।
- किसान को जब भी कोई समस्या हो तो वह ग्राम स्तर के सीआरपी से संपर्क कर सकता है। यदि ग्राम स्तरीय सीआरपी समस्या का समाधान नहीं कर पाता है तो मामले को ऐसे एक वरिष्ठ सीआरपी तक बढ़ा दिया जाता है जो 5 गांवों के लिए जिम्मेदार होता है।

- फसल की कटाई और सीसीई का संचालन और खेती की उपज और लागत की तुलना क्षेत्र दिवस (फील्ड डे) के दिन की जाती है।
- फसल कटाई के साथ-साथ फसल कटाई प्रयोग एपीसीएनएफ फील्ड स्टाफ की उपस्थिति में किया जाता है। इस दिन बड़ी संख्या में किसान एकत्रित होते हैं। क्षेत्र दिवस में स्थानीय गांव के बुजुर्ग और कृषि विभाग के अधिकारी भाग लेते हैं।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1हेक्टेयर)
फसल	धान (एम् टी यु-1121)	धान (एम् टी यु-1121)
खेती की लागत (रु.)	41250	52500
उत्पादन (कुंटल)	74.35	65.48
कुल लाभ (रु.)	137547	121138
कुल लाभ (रु.)	96297	68638
लागत लाभ अनुपात	2.3	1.3

लाभ और उपलब्धियां

- प्राकृतिक खेती के तरीकों को अपनाकर खेती की लागत कम की।
- पीएमडीएस के अभ्यास से मृदा स्वास्थ्य में सुधार हुआ जल धारण क्षमता में वृद्धि हुई, माइक्रोबियल विविधता एवं मृदा कार्बन में वृद्धि हुई।
- वनस्पति अर्क के छिड़काव से कीटों एवं रोगों की घटनाओं में कमी हुई।
- कई फसलों की खेती के माध्यम से खेत में मधुमक्खियों और ड्रैगन मक्खियों जैसे लाभकारी कीटों की संख्या में वृद्धि।
- मिट्टी की उर्वरता, फसल उत्पादकता और मिट्टी में केंचुओं में वृद्धि।
- कई किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

स्रोत: *आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्रीमती हनुमंतु मुत्यलम्मा

गांव : कोसरवानीवलसा
मंडल : पार्वतीपुरम
जिला : विजयनगरम
संपर्क नंबर : 7382430735

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 2018 में 2.5 एकड़ के क्षेत्र में प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- धान की फसल (खरीफ) और दलहन (रबी) के बाद 18 विभिन्न कवर फसलों को शामिल करते हुए प्री-मानसून सूखी बुवाई (पीएमडीएस) का अभ्यास किया, जिसके परिणामस्वरूप आच्छादन यानी 365 दिनों का हरित आवरण प्राप्त हुआ।
- सभी प्राकृतिक कृषि तकनीकों जैसे बीजामृत, घनजीवामृत, द्रवजीवामृत, पीएमडीएस (आच्छादन), विकास प्रवर्तकों (अंडे अमीनो एसिड, सप्तधान्यांकुर कषाय और वानस्पतिक अर्क) को अपनाया, कीट प्रबंधन के लिए कषाय का उपयोग किया।
- घनाजीवमृत को 400 किग्रा/एकड़ की दर से मिट्टी में मिलाएँ।
- 15 दिनों के अंतराल पर द्रवाजीवमृत 200लीटर/एकड़ डालें।
- बीज उपचार, पत्ती युक्तियों की कतरन, पीली चिपचिपी प्लेट, फेरोमोन ट्रैप, बर्ड पर्च आदि तकनीकों को अपनाया।
- कीट के रोकथाम के लिए वानस्पतिक अर्क एवं उपज बढ़ाने के लिए ग्रोथ प्रमोटरों का उपयोग किया|
- सामुदायिक संवर्ग की प्रेरणा से किसान ने प्राकृतिक खेती कर दो वर्षों में उसके लाभों का अनुभव किया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	धान (एमटीयू 1064)	धान (एमटीयू 1064)
खेती की लागत (रु.)	43750	46750
उत्पादन (कुंटल)	57.70	55.55
कुल लाभ (रु.)	106745	102767
शुद्ध लाभ (रु.)	62995	56017
लागत लाभ अनुपात	1.44	1.2

लाभ और उपलब्धियां

- प्राकृतिक खेती के तरीकों को अपनाकर खेती की लागत में कमी।
- तेज गर्मी में पीएमडीएस (आच्छादन) को अपनाने से मिट्टी की सेहत और मुख्य फसलों की उत्पादकता में सुधार हुआ।
- पशुओं के चारे के रूप में उपयोग किए जाने वाले पीएमडीएस चारे से अतिरिक्त आय प्राप्त की।

- वानस्पतिक अर्क के उपयोग से कीटों और रोगों की रोकथाम की।
- बहुफसली खेती के माध्यम से, मधुमक्खी और ड्रैगन मक्खियों जैसे लाभकारी कीड़ों की संख्या में वृद्धि हुई है।
- मिट्टी में केंचुओं की संख्या में वृद्धि।

स्रोत: *आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्री कांतिपुड़ी सूर्यनारायण

गांव : टीपरू
मंडल : पेरावली
जिला : पश्चिम गोदावरी
संपर्क नंबर : 9704231219
योग्यता : 10वीं

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 2020 से 2 एकड़ खेत में प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- अप्रैल से जून की प्रमुख अवधि के दौरान पीएमडीएस को अपनाया और रबी धान की फसल से 3 से 4 दिन पूर्व पीएमडीएस बीज बोया जिससे मिट्टी में अवशिष्ट नमी बनाई जा सके। 18 प्रकार के बीजों में अनाज, दलहन, फलीदार हरी खाद फसलें, तिलहन, पत्तेदार सब्जियां और मसालों का छिड़काव शामिल है।
- अत्यधिक गर्मियों के दौरान, हरी पत्तेदार सब्जियों की कटाई से 1,500–2,000 रुपये अर्जित किए। सब्जियों और पत्तेदार सब्जियों की कटाई के बाद बचे हुए हरे बायोमास को पहले मुख्य फसल अर्थात खरीफ धान की फसल लेने से पूर्व मिट्टी में मिलाया।
- खरीफ धान के लिए उन्होंने सभी एपीसीएनएफ प्रोटोकॉल का पालन किया जैसे कि घनजीवामृत को 400 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से मिट्टी में मिलाया, प्रति 10 दिन में 200लीटर प्रति एकड़ की दर से मिट्टी में द्रवजीवामृत मिलाया और सभी गैर-परक्राम्य अर्थात बीज उपचार, पत्ती टिप्स की कतरन, पीली चिपचिपी प्लेटें, फेरोमोनट्रैप, पक्षी पर्च आदि का भी उपयोग किया।
- उपज बढ़ाने के लिए वृद्धि नियामकों एवं कीट नियंत्रण वृद्धि कारकों के उपयोग हेतु वानस्पतिक अर्क का उपयोग किया।
- नवंबर से दिसंबर अवधि के दौरान रबी सूखी बुवाई (आरडीएस) को अपनाया और खरीफ धान की फसल से 3से 4 दिन पहले आरडीएस बीज बोया। 13 प्रकार के बीजों का छिड़काव किया जिसमें अनाज, दालें और पत्तेदार सब्जियां शामिल हैं।
- 30 दिन के बाद उन्होंने अपने मवेशियों को चरने की अनुमति दी और अवशेष फसलों को मिट्टी में मिलाया।
- रबी धान के लिए भी सभी एपीसीएनएफ प्रोटोकॉल का पालन किया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	धान (एमटीयू 1121)	धान (एमटीयू 1121)
खेती की लागत (रु.)	16000	21500
उत्पादन (कुंटल)	28.5	26.25
कुल लाभ (रु.)	53200	49000
शुद्ध लाभ (रु.)	37200	27500
लागत लाभ अनुपात	2.3	1.2

लाभ और उपलब्धियां

- पीएमडीएस के कारण मृदा में नमी की मात्रा बढ़ी है जिसके परिणामस्वरूप मृदा की जल धारण क्षमता में वृद्धि हुई है।
- मृदा कार्बनिक पदार्थ, मृदा माइक्रोबियल पारिस्थितिकी, मृदा बायोमास और मृदा माइक्रोबायोम में सुधार के माध्यम से मृदा की उर्वरता में वृद्धि हुई।
- पीएमडीएस को चारा के साथ मवेशियों को खिलाकर अधिक वसा वाले दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हुई।
- पीएमडीएस से अतिरिक्त आय अर्जित हुई।
- इसके परिणामस्वरूप खेती में कम लागत और अधिक लागत लाभ अनुपात के साथ खर्च में कमी आई।
- खरपतवार को प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया। पीएमडीएस बायोमास की गहन वृद्धि ने खरपतवार के विकास को दबाया और अंततः एकीनोकोला, साइप्रस रोटनडस आदि जैसे समस्याजनित खरपतवारों की कमी हुई।
- फसल चक्र बनाए रखा।
- सिंचाई की मांग में काफी कमी आई।

स्रोत: *आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्री किल्लो धर्मराव

ग्राम : रंगसीला

मंडल : हुकुमपेटा

जिला : विशाखापत्तनम

संपर्क नंबर : 9493653968

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 2017 में प्राकृतिक खेती को अपनाया। कुल 8.9 एकड़ जमीन है, जिसमें से 2.80 एकड़ में धान, 2 एकड़ में बाजरा, 1 एकड़ में गुली रागी, 1 एकड़ में सिल्वर ओक, 1 एकड़ में सब्जी और 1 एकड़ में एकीकृत पोल्ट्रीमॉडल स्थापित किया।
- गुलिरागी, सब्जियों और धान के खेतों के लिए नियमित रूप से घनजीवामृत और द्रवजीवामृत तैयार करके उपयोग किया।
- रोपण के समय 200 किलोग्राम घनजीवामृत डाला।
- 15 दिनों के अंतराल पर 3 बार 200लीटर द्रवजीवामृत डाला।
- खेत में पीली चिपचिपी प्लेटों की व्यवस्था की गई।
- निराई पर श्रम लागत को कम करने हेतु अंतर-कर्षण कार्यों के लिए बैलों का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- मिलेट मिक्सी का उपयोग घरेलू खपत के लिए कुटकी के प्रसंस्करण के लिए किया जा रहा है। पहले वह कुटकी के प्रसंस्करण के लिए लकड़ी की चक्की का उपयोग करते थे।
- विगत 3 वर्षों से रंगसीला में कुटकी की खेती 1 एकड़ से बढ़कर 7 एकड़ हो गई है।
- कृषि में पशुधन और मत्स्य पालन को एकीकृत किया। मछली पालन के लिए 15 x 15 मीटर आकार के एक फार्म तालाब की स्थापना की और मेड़ों पर सब्जियों की खेती की।
- उनके परिवार द्वारा एक कस्टम हायरिंग सेंटर का संचालन किया जा रहा है और अन्य किसानों को वीडर्स, सोलर पल्लकी (मोबाइल ऊर्जा) और रागी थ्रेशर किराए पर दे रहे हैं।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदण्ड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	रागी	रागी
बुवाई की पद्धति	गुलीरागी	रोपण विधि
खेती की लागत (रु.)	750 (केवल गुड़ और दाल के आटे की कीमत)	750(उन्होंने केवल बुवाई की और बिना किसी पारंपरिक खेती की पद्धति के खेत को छोड़ दिया)
उत्पादन (कुंटल)	14.5	3.75
कुल लाभ (रु.)	36250	9375
शुद्ध लाभ (रु.)	35500	8625
लागत लाभ अनुपात	47.3	11.5

लाभ और उपलब्धियां

- भूमि की तैयारी और कार्य-साझाकरण के माध्यम से जुताई करके श्रम लागत को बचाया।
- कीटों से कोई हानि नहीं पाई गई।
- अन्य किसानों के लिए गुली रागी की फसल की वृद्धि का निरीक्षण करने के लिए मॉडल प्लॉट।
- 2017 में, गांव में केवल दो किसानों द्वारा गुली रागी उगाई गई थी लेकिन अब लगभग 150 किसानों ने खेती की इस पद्धति को अपनाया।.

स्रोत: *आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्री कोथापल्ली शिव रमय्या

गाँव	: टी. कोथापल्ली
मंडल	: मेदुकुर
जिला	: कडपा
योग्यता	: डिग्री
संपर्क सं	: 9848558193

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 2016 में प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- 10 एकड़ का कृषि क्षेत्र। इसमें से 0.30 सेंट में 5-लेयर मॉडल अपनाया गया और 7.70 एकड़ में सिट्रस बाग लगाया गया। शेष 2 एकड़ में धान की खेती (देसी किस्म–मैसूर मल्लिका) 1.5 एकड़ में ड्रम-सीडर के माध्यम से और 0.5 एकड़ में एसआरटी विधि से की।
- गांव में प्राकृतिक कृषि कर्मचारियों के सहयोग से खरीफ मौसम में सिट्रस बागों में मिर्च, टमाटर, गेंदा, बैगन, हरी पत्तेदार सब्जियां जैसे धनिया, मेथी को अंतरफसल के रूप में उगाया गया।
- मुख्य फसल से पहले, पीएमडीएस को 28 प्रकार के बीजों (उड़द , मूंग, सरसों, लोबिया, ज्वार, मक्का, चना, बाजरा, लता, कंद, सब्जियां और पत्तेदार सब्जियां) के साथ बिना किसी खर्च के लगाया क्योंकि उन्होंने अपने घर पर उपलब्ध बीज और आदान (इनपुट) का उपयोग किया।
- 3 अंतरालों में 1,200लीटर द्रव जीवामृत का छिड़काव किया।
- मूंग, उड़द, अम्लबेत, मेथी, मूली और मिट्टी में समाविष्ट शेष फसलों से आय प्राप्त की।
- दो भागों में अर्थात बेसल डोज़ एवं पेनिकल के शुरुआती स्तर पर 800 किग्रा. घनजीवामृत का उपयोग किया।
- विभिन्न प्रकार के कीटों के नियंत्रण के लिए पीली और सफेद चिपचिपी प्लेट, फेरोमोनट्रैप, बर्डपर्च का इस्तेमाल किया।
- कीट और रोग नियंत्रण के लिए नीमास्त्र, दशपर्णी और खट्टी छाछ का छिड़काव किया।
- 45 डीएएस पर अंडा, अमीनोएसिड और 60 डीएएस पर पंचगव्य के विकास प्रमोटर के रूप में इस्तेमाल किया।
- रबी के मौसम में, पूरे खेत में तिल की बुआई की और गर्मियों में पशुओं को चराने के लिए पीएमडीएस को अपनाया।
- मैदिकुरु रायथू बाजार और व्यापारियों को सीधे सब्जियों की आपूर्ति की।
- अपने खेत में प्राकृतिक कृषि कर्मचारियों की मदद से अन्य किसानों के लिए प्राकृतिक खेती में प्रयुक्त इनपुट को तैयार करने संबंधी विधि का प्रदर्शन आयोजित किया।
- एसएचजी बैठकों, पिको प्रसार, क्षेत्र के दौरे और एफएफएस के जरिए तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से प्राकृतिक खेती पर जागरूकता पैदा की।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	धान (मैसूर मल्लिका)	धान (मैसूर मल्लिका)
खेती की लागत (रु.)	21875	28925
उत्पादन (कुंटल)	20	21
कुल लाभ (रु.)	60000	50325
शुद्ध लाभ (रु.)(पीएमडीएस सहित)	41425	21400
लागत लाभ अनुपात	1.8	0.7

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत कम हुई।
- बहु-फसल को अपनाकर खेती करने से आय में वृद्धि हुई।
- पीएमडीएस को अपनाने से कीटों और बीमारियों के प्रकोप में कमी आई है।
- बहु फसलों की खेती के माध्यम से खेत में मधुमक्खियों जैसे लाभकारी कीड़ों की संख्या में वृद्धि हुई।
- मिट्टी की जल धारण क्षमता में वृद्धि।
- परिणामस्वरूप रासायनिक मुक्त उत्पाद।
- साथी किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया।
- बहु-फसल को अपनाने के लिए जिला कलेक्टर द्वारा 2018 में सर्वश्रेष्ठ किसान के रूप में सम्मानित किया गया।

स्रोत: आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती

श्री मागन्ती चंद्रइया

गाँव : एन.गोल्लापलेम
मण्डल : मछीलीपटनम
जिला : कृष्णा
संपर्क सं : 9581182197
योग्यता : 7वीं

अपनाई गईकृषि पद्धतियां

- 3 भैंस, 3 भेड़ और 6 पॉल्ट्री के साथ 2 एकड़ खेती योग्य भूमि है।
- 2017 में, प्राकृतिक खेती के तरीकों के बारे में ग्राम पंचायत में एक बैठक में भाग लिया और तब से बिना किसी रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों के प्राकृतिक खेती का अभ्यास करना शुरू कर दिया।
- प्री-मानसून सूखी बुआई (पीएमडीएस) अपनाई। इसमें अनाज, बाजरा, तिलहन, दालें, सब्जियां और पत्तेदार सब्जियों सहित 18 प्रकार के फसल बीजों की अप्रैल 2020 में बुआई की। पीएमडीएस बायोमास का हरे चारे के रूप में इस्तेमाल किया गया और 45-60 दिनों के बाद मृदा माइक्रोबियल बायोमास को बढ़ाने के लिए मिट्टी में शामिल किया गया।
- पत्तेदार सब्जियों जैसे भारतीय अम्लबेत, ऐमारैंथस आदि की 45 दिनों में कटाई की और सभी उगाई गई फसलों को उनके मवेशियों के लिए और पड़ोसी किसानों के लिए भी चारे के रूप में इस्तेमाल किया गया।
- सगुना चावल तकनीक (एसआरटी) के माध्यम से जून 2020 में मुख्य फसल धान (बीपीटी-5204) की खेती की गई जो हर पौधे के लिए वातन और धूप सुनिश्चित करती है।
- बीज उपचार के लिए 5लीटर/एकड़ की मात्रा में बीजामृत और बीज और मिट्टी से होने वाली बीमारियों का प्रतिरोध करने के लिए बुआई/रोपाई के समय रोपाई के लिए 10लीटर/एकड़ की मात्रा का उपयोग किया।
- घनजीवामृत टाइप-I: 400 किग्रा/एकड़ @200 किग्रा/एकड़ प्रत्येक 20डीएटी (उपचार पश्च दिन), 40डीएटी20 दिनों के अंतराल पर उपयोग किया।
- द्रवजीवामृत का मिट्टी में प्रयोग के रूप में 1000 लीटर/एकड़ @ 200 लीटर की मात्रा में प्रत्येक 35डीएटी, 50डीएटी, 65डीएटी, 80डीएटी, 95 डीएटी से शुरू कर प्रयोग किया।
- 20डीएटी पर अजोला 8 कि.ग्रा./एकड़ प्रयोग किया।
- खरपतवार का हाथों से प्रबंध किया।
- पत्तियों के सिरों को काटना, सीमा की/मेढ़ की/परिधीय फसल, पीले, सफेद चिपचिपे जाल, फेरोमोनट्रैप और पक्षियों के बसेरों जैसे अ-परक्राम्य का पालन किया।
- जुताई की अवस्था में 5लीटर/एकड़ के अनुपात में 100लीटर पानी में पंचगव्य का प्रयोग किया।
- कीट नियंत्रण के लिए नीमास्त्र (2 बार, 200 लीटर/अनुप्रयोग, @20 डीएटी और 40 डीएटी) और खट्टी छाछ (1 बार, 150 लीटर पानी में 8 लीटर, @30 डीएटी) का इस्तेमाल किया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	धान (बीपीटी- 5204)	धान (बीपीटी- 5204)
खेती की लागत (रु.)	19670 (पीएमडीएस सहित)	25670
उत्पादन (कुंटल)	43.4	40.3
कुल लाभ (रु.)	81200 (पीएमडीएस सहित)	72666
शुद्ध लाभ (रु.)	61530	46996
लाभ लागत अनुपात	3.1	1.8

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की कम लागत।
- प्राकृतिक खेती को अपनाने से मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि।
- कीट और रोगों की प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि।
- केंचुओं और लाभदायक कीड़ों की संख्या में वृद्धि।
- झुलसा और फफूंदी में कमी।
- फसल ने चक्रवात और बाढ़ को झेला।
- रसायन मुक्त भोजन का उपभोग किया।

स्रोत: आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती

श्री मनेती गांगी रेड्डी

गांव : चेन्नामराजूपल्ली

क्लस्टर : चेन्नामराजूपल्ली

मंडल : पेंडलीमारी

जिला : कडप्पा, आंध्र प्रदेश

मोबाइल नंबर : 9502147401

शिक्षा : इंटरमीडिएट

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- शून्य/न्यूनतम जुताई अपनाई।
- जीवामृत, कषाय आदि प्राकृतिक कृषि आदानों को तैयार कर इस्तेमाल किया।
- 1 एकड़ भूमि में 5 लेयर (परत) मॉडल अपनाया।
    - पहली परत: बेरी जामुन (लगाए गए लेकिन फल नहीं लगते)
    - दूसरी परत: अनार, कस्टर्ड सेब (लगाए गए लेकिन फल नहीं लगते)
    - तीसरी परत: सहजन
    - चौथी परत: सब्जियां जैसे मिर्च, टमाटर, भिंडी, क्लस्टर बीन
    - पांचवीं परत: पत्तेदार सब्जियां जैसे गोगू, मूली
    - बॉर्डर फसल: सेसबनिया
- मानसून पूर्व सूखी बुवाई (पीएमडीएस) को अपनाया|
- देसी बीज बैंक विकसित किया और किसानों के लिए देसी बीज की शुरुआत की।
- प्राकृतिक खेती और इनपुट को तैयार करने के बारे में बताया।
- गैर कीट प्रबंधन (एनपीएम) दुकान की स्थापना की।
- खेती के तरीकों पर नियमित रूप से कार्यशालाओं का आयोजन और फील्ड स्कूल चलाना।
- स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से काम किया|
- प्रदर्शनों के लिए प्रयुक्त आईसीटी तंत्र (व्हाट्सएपसमूह, वीडियोप्रदर्शन)।
- प्रदर्शनियों और मंचों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	सहजन,मिर्च, टमाटर, भिंडी, क्लस्टर बीन, गोगू, मूली, सेसबानिया	भिंडी, सेसबानिया, क्लस्टर बीन, अमरुद, चमेली
खेती की लागत (रु.)	68300	70000

उत्पादन (कुंटल)	68.45	21.7
कुल लाभ (रु.)	166400	90000
शुद्ध लाभ (रु.)	98100	20000
लाभ लागत अनुपात	1.4	0.28

लाभ और उपलब्धियां

- आदान लागत और श्रम लागत में कमी आई।
- अधिक पैदावार अर्जित की।
- समय की बचत हुई।
- रासायनिक मुक्त उत्पाद।
- 2006 से गैर-कीटनाशक प्रबंधन (एनपीएम) इनपुट शॉप चला रहे हैं।
- प्राकृतिक खेती के लिए गांव स्तर पर मास्टर ट्रेनर विकसित किए।
- कार्यशालाओं, फील्ड स्कूल और प्रशिक्षणों के माध्यम से किसानों को लाभ पहुंचाया।
- खेती की पद्धतियों में पीएमडीएसको शामिल कर किसानों की आय दोगुनी की।
- 2010 में आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा राष्ट्र उत्तमा रायथू पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

स्रोत: *आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्रीमती मुप्पाला निरमालम्मा

गांव : अरिमेनुपाडू
मंडल : ओजिली
जिला : एसपीएसआरनेल्लोर
संपर्क संख्या : **8978853723**
शिक्षा : **9वीं**

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- सिट्रस खेत में अंतर फसल की खेती की।
- बीज उपचार और बीजामृत में सीडलिंग रूटडिपिंग को अपनाया।
- जीवामृत और अन्य पौधों पर आधारित कषाय जैसी जैविक खादें तैयार कीं।
- गांव में सामूहिक रूप से बड़े पैमाने पर घनजीवामृत तैयार कराया।
- जड़ के पास के क्षेत्र के चारों ओर जीवित पलवार और मृत पलवार का उपयोग किया।
- प्रकाश एवं फेरोमोन जाल का उपयोग किया।
- 18 प्रकार के बीज के साथ नवधान्य/प्री मानसून शुष्क बुवाई (पीएमडीएस) विधि अपनाई।
- पीएमडीएस बीज किट तैयार की और सहयोगी किसानों को वितरित किया।
- प्रति वर्ष प्राकृतिक खेती के बारे में गांव में रैलियां और जन अभियान आयोजित किए ।
- गांव में रसोई उद्यान स्थापित करने में सहायता की।
- जिला और राज्य स्तरीय प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण में भाग लिया ।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	साइट्रस	साइट्रस
खेती की लागत (रु.)	18900	35100
उत्पादन (कुंटल)	48	45
कुल लाभ (रु.)	99100	76250
शुद्ध लाभ (रु.)	80200	41150
लाभ : लागत अनुपात	4.24	1.17

लाभ और उपलब्धियां

- आदान लागत में कमी।
- खेती की लागत में कमी।

- फलों की अच्छी गुणवत्ता, आकार और वर्धित शेल्फ लाइफ के साथ अधिक पैदावार हुई।
- सब्जियों को इंटरक्रॉप के रूप में उगाकर शुद्ध आय में वृद्धि हुई।
- समुदाय को रासायनिक मुक्त भोजन की बिक्री की एवं उपभोग किया।
- केंचुएं की उत्तम प्रजाति से मिट्टी की उर्वरता में सुधार।

***स्रोत:** आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्रीमती वाई पद्मवतम्मा बी.

गांव : लोदीपल्ली
मंडल : ऑरवाकल
जिला : कुरनूल
संपर्क संख्या : 9177199878
योग्यता : 10वीं

अपनाई गई कृषि पद्धतियां:

- 2016 से प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- 10.50 एकड़ के कृषि क्षेत्र में खेती की। इसमें से आम का बाग 5.00 एकड़ में स्थापित है और शेष 5.50 एकड़ में मक्का, ज्वार, सब्जियां, बंगाल चना, चारा फसल आदि कई फसलों की खेती प्री-मानसून शुष्क बुवाई (पीएमडीएस) विधि से की जाती है।
- कृषि विज्ञान केंद्र, बनगणपल्ली की तकनीकी सहायता से आम के बाग में इंटरक्रॉप्स के रूप में सीओ-4, सुपरनेपियर, दरवाड़ नेपियर, बीएआईएफ जैसे विभिन्न चारा प्रजाति लगाईं। चारे का उपयोग डेयरी पशुओं के लिए किया जाता है।
- कुरनूल जिले के कुछ हिस्सों में और तेलंगाना के किसानों को भी चारे की आपूर्ति की।
- गांव में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2018 में गैर-कीटनाशक प्रबंधन (एनपीएम) की दुकान की स्थापना की और घनजीवामृत, द्रवजीवामृत और विभिन्न कषाय जैसे आवश्यक आदानों की आपूर्ति की।
- आई.बी. टीम की सहायता से अन्य किसानों के लिए प्राकृतिक खेती में उपयोग किए गए आदान सूत्रण का प्रदर्शन किया ।
- व्हाट्सएप के माध्यम से प्राकृतिक खेती के बारे में जागरूकता पैदा की।
- कृषि विभाग के साथ-साथ फार्मर्स फील्ड स्कूल (एफएफएस) का आयोजन किया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	लाल चना	लाल चना
खेती की लागत (रु.)	16000	21000
उत्पादन (कुंटल)	4	2.5
कुल लाभ (रु.)	60000	45000
शुद्ध लाभ (रु.)	44000	24000
लाभ लागत अनुपात	2.7	1.1

लाभ और उपलब्धियां

- वनस्पति अर्क छिड़ककर कीटों और रोगों में कमी की।
- कई फसलों की कृषि के माध्यम से खेत में मधुमक्खियों जैसे लाभकारी कीटों की संख्या में वृद्धि की।

- मिट्टी की उर्वरता और मिट्टी में केंचुओं में वृद्धि की।
- फसलों को सूखे की स्थिति के लिए प्रतिरोधी बनाया।
- खेती की लागत में कमी की।
- इसके परिणामस्वरूप रासायनिक मुक्त उत्पाद उत्पन्न हुआ।
- संबद्ध गतिविधि के साथ-साथ खेती के माध्यम से आय में वृद्धि हुई।
- कई किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया ।
- प्रथम श्रेणी के शहरों से ऑर्डर प्राप्त किए।
- 2018 में कृषि विभाग से सर्वश्रेष्ठ महिला किसान पुरस्कार प्राप्त किया।
- 2019 में क्रिभको और कृषि विज्ञान केंद्र से सर्वश्रेष्ठ महिला किसान पुरस्कार प्राप्त किया।

स्रोत: *आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्री बी रामकोटेश्वर राव

मंडल	:	कलासापडू
जिला	:	कडप्पा
राज्य	:	आंध्र प्रदेश
संपर्क संख्या	:	7799230278
शिक्षा	:	10वीं
ईमेल	:	Ramram68229@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 1.10 एकड़ भूमि को 22 प्रकार की सब्जियों सहित स्थायी हलरेखा (कूँड़) और क्यारी विधि के साथ शून्य जुताई में परिवर्तित किया गया।
- प्राकृतिक खेती के लिए आदान तैयार किया और उपयोग किया।
- ग्राम स्तरीय बैठकों, ग्रामसभाओं आदि में अपनी कृषि की पद्धतियों को प्रदर्शित करके मंडल में उत्पादों का विपणन किया।
- सभी ग्राम स्तर की बैठकों में भाग लिया और कृषि की प्रथाओं, नए मॉडलों और पद्धतियों के बारे में बताया।
- स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की बैठकों का आयोजन किया और एक पिको प्रोजेक्टर का उपयोग कर प्राकृतिक कृषि वीडियो का प्रदर्शन किया।
- किसानों के साथ कषाय˙ की तैयारियों का लाइव प्रदर्शन किया।
- एफएफएस (फार्मरफील्ड स्कूल) को अपनाया।
- प्राकृतिक कृषि आकांक्षी किसानों के लिए एनएफएपी (प्राकृतिक कृषि वार्षिक कार्य योजना)तैयार किया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	सब्जियाँ	सब्जियाँ
खेती की लागत (रु.)	14500	21800
उत्पादन (कुंटल)	32	29
कुल लाभ (रु.)	51800	47500
शुद्ध लाभ (रु.)	37300	25700
लाभ लागत अनुपात	2.56	1.17

लाभ और उपलब्धियां

- रासायनिक आदानों से परहेज किया।
- स्वयं के स्रोतों से बीज क्रय किया।

- खेती की लागत कम की।
- समय की बचत की।
- 150 से अधिक किसानों को प्राकृतिक खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया।
- परिणामस्वरूप, क्षेत्र में वर्ष के सभी 365 दिनों मेंहरियाली आ गई है।
- मंडल स्तर पर 2018 में सर्वश्रेष्ठ किसान पुरस्कार प्राप्त किया।
- आंध्र प्रदेश सामुदायिक प्रबंधित प्राकृतिक कृषि (एपीसीएनएफ) परियोजना में आईसीआरपी (आंतरिक सामुदायिक संसाधन व्यक्ति) के रूप में चयनित।

स्रोत: *आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्री सयाम रघुनाथ

मंडल : बुचैयापेटा
जिला : विशाखापट्टनम
संपर्क संख्या : 9705650295,9398303947
शिक्षा : बीए
ईमेल : sayamraghu2@gmail.com

अपनाई गईकृषि पद्धतियां:

- 20 गायों, 4 भेड़, मुर्गी पालन, धान, गन्ना और आम के बाग के साथ अंतर फसलों, 5 सेंट के न्यूट्री-गार्डन और 40 सेंट के मछली धान के साथ 1 हेक्टेयर में एकीकृत कृषि प्रणाली (आईएफएम)की स्थापना की।
- प्राकृतिक खेती की पद्धति के माध्यम से देसी धान की किस्में विकसित कीं।
- वर्ष भर निरंतर आय के लिए जफारा और नारियल के पौधों के साथ आम के बाग के आसपास बोर्डर फसलें लगाई।
- चावल गहनता (श्री) धान प्रौद्योगिकी और ड्रम सीडर प्रौद्योगिकी की प्रणाली अपनाई।
- अंतर-फसल के रूप में हरे चने और सब्जियों के साथ गन्ने के रोपण की 2 *4, 2 * 8 पद्धति अपनाई।
- घरेलू जरूरत के लिए न्यूट्रिया-गार्डन लगाए।
- प्राकृतिक खेती के लिए बीजामृत, घनजीवामृत, द्रवजीवामृत, और वनस्पति अर्क जैसे अग्निअस्त्र, भ्रामास्त्र, मज्जिगा-कषाय, नीमास्त्र आदि अदानों को तैयार एवं उपयोग किया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	धान (नवर-रेड-राइस)	धान (आर जी एल – 2537)
खेती की लागत (रु.)	18000	22000
उत्पादन (कुंटल)	32	28
कुल लाभ (रु.)	57350	48205
शुद्ध लाभ (रु.)	39350	26205
लाभ लागत अनुपात	2.1	1.1

लाभ और उपलब्धियां

- आदान लागत और खेती की लागत में कमीं।
- श्रम लागत में बचत की।
- अधिक पैदावार।
- स्वस्थ भोजन।

- न्यूट्रीगार्डन की स्थापना करके सब्जियों पर होने वाले मासिक खर्च में कमी।
- इंटरक्रॉप्स, बॉर्डर फसलों और पोल्ट्री से वर्ष भर आय में वृद्धि हुई।
- 2020-21 में गन्ने के सर्वश्रेष्ठ किसान के रूप में श्री मल्ला जगन्नाथ मेमोरियल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- विशाखापत्तनम जिला स्तर पर सत्र 2016-17 के लिए सर्वश्रेष्ठ गन्ना बीज डेवलपर और ड्रिस्टिब्यूटर के रूप में सम्मानित किया गया।
- कृषि विभाग बुचियापेटा मंडल, विशाखापत्तनम जिला, आंध्र प्रदेश द्वारा वर्ष 2018 में कृषि कल्याण कार्यशाला में सम्मानित किया गया।
- विशाखा डेयरी इकाई हेतु उच्च गाय दुग्ध उत्पादन के लिए 5 वर्ष तक निरंतर पुरस्कार प्राप्त किया।

स्रोत: *आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्री बी श्रीनिवास राव

ग्राम : कोनिथवाड़ा
मंडल : वीरवसाराम
जिला : पश्चिमगोदावरी
संपर्कनंबर : 7036503397
योग्यता : माध्यमिक
ईमेल : bheesettisrinivasaraosrinivasa@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 3 धान आधारित फसल प्रणाली का प्रयोग किया: पूर्व-मानसून सूखी बुवाई (पीएमडीएस) जिसमें 18 विभिन्न कवर फसलें शामिल हैं; खरीफ धान और रबी धान।
- पीएमडीएस, प्राकृतिक खेती करने का एक नया तरीका हैं जिसमें 18 से 20 फसल के बीज (जिसे नवधान्य कहा जाता है) बिखेरे जाते है जो गर्मियों में रिले फसल के रूप में बोए जाते है ताकि भीषण गर्मी में खेत विभिन्न फसल विविधता के हरित आवरण से ढका हो।
- गर्मियों में पीएमडीएस के साथ संयुक्त प्राकृतिक खेती करने से पूरे वर्ष के लिए जीवित फसल के माध्यम से मिट्टी हरित आवरण से ढकी रहती है (365 दिन हरित आवरण–आच्छादन)।
- बुवाई के 45-60 दिनों के बाद पीएमडीएस की फसल को मवेशी द्वारा चराया गया। शेष फसल अवशेषों को मिट्टी में मिला दिया गया जिसके बाद, खेत धान की रोपाई के लिए तैयार हुआ।
- बीजामृत, घनजीवामृत, द्रवाजीवामृत, पीएमडीएस (अच्छादन), उत्पादनसंवर्धक (एग अमीनोएसिड, सप्तधानयांकुर कषाय और वनस्पति अर्क) और कीट प्रबंधन के लिए कषाय जैसे सभी प्राकृतिक कृषि प्रोटोकॉल को अपनाया|

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1हेक्टेयर)
फसल	धान (एम् टी यु 7029)	धान (एम् टी यु 7029)
खेती की लागत (रु.)	45000	55000
उत्पादन (कुंटल)	60	52.5
कुल लाभ (रु.)	116760	102165
शुद्ध लाभ (रु.)	71760	47165
लाभ लागत अनुपात	1.6	0.85

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की कम लागत के साथ पीएमडीएस जैसी प्राकृतिक कृषि पद्धतियों को अपनाने से किसानों की निवल आय में वृद्धि हुई।
- भीषण गर्मी में पीएमडीएस तरीको को अपनाने से मृदा कार्बनिक पदार्थ, मृदा स्वास्थ्य और जल संचयन क्षमता में सुधार

हुआ, जिसके परिणामस्वरूप मुख्य खरीफ फसल और रबी फसल की उत्पादकता में वृद्धि हुई।

- पशुओं के चारे के रूप में इस्तेमाल होने वाले पीएमडीएस के चारे से अतिरिक्त आमदनी होती है।
- मृदा वनस्पतियों और जीवों की विविधता में वृद्धि हुई।
- कीट और बीमारियों के कम मामले देखे गए।
- कम खरपतवार निकला।
- खाद्य स्थिरता सुनिश्चित हुई।
- खपत के लिए रासायनिक मुक्त और पोषक भोजन|
- ह्यूमस का विकास देखा गया|
- पशुओं को पीएमडीएस चारा खिलाने से प्रति दिन प्रति पशु दूध में 0.5 लीटर की वृद्धि के साथ दूध में वसा की मात्रा में वृद्धि देखी गई|

स्रोत: आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती

श्री के. वेंकटरमना

गाँव : दुदूकुरु
मंडल : देवरापल्ली
जिला : वेस्ट गोदावरी
सम्पर्क : 9505044036
शिक्षा : चौथी

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- वर्ष 2016 में 30 वर्षों के बाद पारंपरिक खेती से प्राकृतिक खेती में स्थानांतरित हो गया। दूसरे वर्ष में, प्राकृतिक खेती के लाभों का अनुभव किया और प्राकृतिक कृषि तकनीकों का उपयोग करके सभी फसलों को उगाना शुरू किया।
- 4.0 एकड़ क्षेत्र में धान की संकर किस्में उगाई।
- धान की फसल में पूर्व-मानसून सूखी बुवाई (पीएमडीएस) जिसमें 18 विभिन्न कवर फसलें शामिल हैं; धान की फसल (खरीफ); और दालें (रबी) का अभ्यास किया।
- प्री-मानसून सूखी बुवाई (पीएमडीएस), एक प्राकृतिक कृषि नवाचार है जिसमें 18 से 20 किस्मों के बीजों का प्रसारण शामिल है जिसमें अनाज, दालें, फलियां हरी खाद वाली फसलें, तिलहन, पत्तेदार सब्जियां, मसाले और एक रिले फसल के रूप में बोए गए मसाले शामिल हैं। यह तेज गर्मी में खेत को विभिन्न फसल विविधता के हरित कालीन से ढककर रखते हैं|
- सभी प्राकृतिक कृषि तकनीकों जैसे बीजामृत, घनजीवमृत, द्रवजीवमृत, पीएमडीएस (आच्छादन), विकास प्रवर्तकों (अंडे अमीनो एसिड, सप्त धान्यंकूर कषाय और वानस्पतिक अर्क) का उपयोग, और कीट प्रबंधन के लिए कषाय को अपनाया।
- बुवाई के 45-60 दिनों के बाद, पीएमडीएस फसल को मवेशियों द्वारा चर लिया गया और अवशेष को धान की रोपाई से पहले मिट्टी में मिला दिया गया।
- घनाजीवामृत को 400 किग्रा/एकड़ की दर से मिट्टी में डाला और 15 दिनों के अंतराल पर 200 लीटर/एकड़ की दर से द्रवजीवामृत डाला।
- बीज उपचार, पत्ती युक्तियों की कतरन, पीली चिपचिपी प्लेट, फेरोमोन ट्रैप और बर्ड पर्च आदि तकनीको को अपनाया।
- कीटों को नियंत्रित करने के लिए वानस्पतिक अर्क और उपज बढ़ाने के लिए वृद्धि प्रवर्तकों का उपयोग किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1हेक्टेयर)
फसल	धान (एमटीयू 1061)	धान (एमटीयू 1061)
खेती की लागत (रु.)	39500	54000
उत्पादन (कुंटल)	65.62	60
कुल लाभ (रु.)	127696	116760
शुद्ध लाभ (रु.)	88196	62760
लाभ लागत अनुपात	2.2	1.1

लाभ और उपलब्धियां

- पीएमडीएस (आच्छादन) के परिणामस्वरूप पूरे वर्ष हरित आवरण बना रहा।
- पशुओं के चारे के रूप में इस्तेमाल होने वाले पीएमडीएस के चारे से अतिरिक्त आमदनी हुई।
- कम कीट और रोग।
- अत्यधिक बारिश और बाढ़ के दौरान भी जड़ तनाव के प्रति धान सहनशील।
- शुद्ध आय में वृद्धि।
- खेतों में केंचुओं की उपस्थिति ने पक्षियों की कुछ दुर्लभ प्रजातियों को आकर्षित किया, जिससे खेत के पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार हुआ।
- भूजल स्तर में वृद्धि देखी गई।
- जैविक कार्बन में वृद्धि, मिट्टी स्पंजी हुई, जिससे जल धारण क्षमता (WHC) में वृद्धि हुई

स्रोत: *आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

श्रीमती टी. यामिनी

गांव : इन्नुगुंटा
मंडल : ओजिली
जिला : नेल्लूर
संपर्क सं. : 7674061118
योग्यता : इंटर

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- समुदाय संसाधन व्यक्ति द्वारा गांव में किए गए डेमो प्लॉट के माध्यम से प्राकृतिक खेती की जानकारी लेने के बाद 2016 में प्राकृतिक खेती की शुरूआत की।
- उपज और मिट्टी की उर्वरता में सकारात्मक परिणाम मिलने के बाद 50 सेंट में प्राकृतिक खेती शुरू की और इसके बाद 2 एकड़ तक बढ़ा दी।
- 2019 से मानसून-पूर्व सूखी बुवाई (पीएमडीएस) की पद्धति अपनाई जिसमें फसल की कटाई से पूर्व 9 से 18 प्रकार के बीजों को बिखेरकर बोया और 45 से 60 दिन के बाद, इसे मिट्टी को उपजाऊ बनाने के लिए मिला दिया।
- मेढ़ पर उगाई जाने वाली फसलों के रूप में पीएमडीएस फसल से पत्तेदार सब्जियों मक्का और गेंदा से आय प्राप्त की।
- अंतिम जुताई के समय घनजीवामृत टाइप-1 150 किग्रा और टाइप-2 150 किग्रा डाला।
- बीज को 5 लीटर बीजामृत से उपचारित कर बिखेरकर बोया गया।
- 21 दिन वाले पौधों को उखाड़कर 30 लीटर बीजामृत में डुबोने के बाद पत्तियों के सिरों को काट कर मुख्य खेत में रोपाई की। प्रत्येक 2 मीटर के अंतराल पर 30 सेमी चौड़ी गली बनाई।
- 15 डीएटी के बाद, 1 एकड़ जमीन में 5 किलो अजोला डाली।
- 30 डीएटी के बाद, पीली प्लेट प्रति 10 एकड़ और फेरोमोनट्रैप प्रति 7 एकड़ में लगाया।
- द्रवजीवामृत को 200 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20 डीएटी पर और बाद में हर 15 दिन में 4 बार मिट्टी में डाला।
- 25 डीएटी पर 100 लीटर प्रति एकड़ में नीमास्त्र का छिड़काव किया।
- फूल आने पर अंडे के अमीनोएसिड का छिड़काव 0.5लीटर प्रति एकड़ के हिसाब से किया।
- गांव में पूरे 365 दिनों के लिए किचन गार्डन को बढ़ावा दिया।
- एसएचजी की बैठकों के माध्यम से महिला किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया।
- प्राकृतिक खेती के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए प्रति सप्ताह तीन बार पिको प्रस्तुतियों का आयोजन किया।
- गांव में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए रायथू भरोसा केंद्रों (आरबीके) में किचन गार्डन सीड किट, पीली प्लेट और अन्य आवश्यक सामग्री जैसे घनजीवामृत, द्रवजीवामृत और विभिन्न अर्कों की आपूर्ति की।
- गांव में जन-जागरुकता अभियान चलाए और लोगों के इनपुट तैयार किए।

- इनपुट और कषायम की तैयारी वाले वीडियो साझा करके टेलीग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्राकृतिक खेती पर जागरूकता फैलाई।
- ग्राम कृषि सहायक (वीएए) की सहायता से प्राकृतिक खेती और रासायनिक खेती के बीच अंतर दर्शाने के लिए किसान फील्ड स्कूल (एफएफएस) का आयोजन किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदण्ड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	धान (आर एन आर 15048)	धान (आर एन आर 15048)
खेती की लागत (रु.) (पीएमडीएस सहित)	26500	30000
उत्पादन (कुंटल)	26.4	24.8
कुल लाभ (रु.) (पीएमडीएस सहित)	61232	52824
शुद्ध लाभ (रु.)	34732	22824
लागत लाभ अनुपात	1.3	0.76

लाभ और उपलब्धियां

- वानस्पतिक अर्क का छिड़काव करने से कीटों और बीमारियों के प्रकोप में कमी आई।
- मिट्टी उपजाऊ और अधिक भुरभुरी हुई।
- केंचुओं की वृद्धि से मिट्टी की उर्वरता में सुधार हुआ।
- खेती की लागत में कमी आई।
- रसायन मुक्त उपज हुई।
- संबद्ध कार्यकलापों के साथ-साथ खेती के माध्यम से आय में वृद्धि हुई।
- कई किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

स्रोत: *आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती*

बिहार

श्रीमती बिन्दु देवी

गाँव	:	पातालघाट
मण्डल	:	मानपुर
जिला	:	गया
संपर्क	:	9939354964
शिक्षा	:	अशिक्षित

अपनाई गई कृषि पद्धतियां:

- प्रक्रतिक पद्धति से श्री विधि द्वारा धान, गेहूँ, सरसों, सब्जियों एवं मूँग की खेती की।
- बीज उपचार के लिए श्रीबीजामृत का प्रयोग करते हैं।
- विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक अदानों जैसे श्रीजीवामृत, श्रीघनजीवामृत, श्रीप्रणामृत, श्रीगजरामृत आदि का उपयोग किया जाता है।
- रोग, कीट व बीमारियों की रोकथाम हेतु विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक कीटनाशकों जैसे श्रीनीमस्त्र, श्रीआगनेयास्त्र, श्रीब्रह्मास्त्र, श्रीदासपर्नियार्क, श्रीलोहस्त्र आदि का इस्तेमाल किया।
- विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक कवकनाशी जैसे श्रीमठास्त्र, श्रीसोठास्त्र आदि का उपयोग किया जाता है।
- विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक पौधों के विकास नियामक जैसे श्रीअमृत, श्रीमूँगअमृत, श्रीउपलामृत आदि का उपयोग किया जाता है।
- कीट नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रैप, स्टिकी प्लेट्स, बर्ड पिचर्स, बोनफायर, कीट ट्रैप जैसे विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक तरीकों का इस्तेमाल किया।
- कीट प्रबंधन के लिए मिश्रित फसल और बॉर्डर फसल जेसे उपयोग भी सफल हुए है।
- पानी की बचत के लिए ड्रिप सिंचाई का इस्तेमाल किया है।
- मलचिंग के तौर पर जड़ क्षेत्र के चारों ओर सजीव गीली घास और मृत गीली घास का उपयोग किया गया है।
- किचन गार्डन स्थापित करने में पड़ोसी किसानों की सहायता की।
- जिला और राज्य स्तरीय प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती के बीच तुलना

मानदंड	पृाकृतिक खेती (0.06 हेक्टेयर)	परंपरागत खेती (0.06 हेक्टेयर)
फसल / किस्म	सरसों / आरपी 09 (लोकल)	सरसों (इम्प्रूव्ड किस्म)
खेती की लागत (रु.)	1000	1100
उत्पादन (कुंटल)	2.5	0.40
कुल लाभ (रु.)	25000	4000
शुद्ध लाभ (रु.)	24000	2900
लाभ : लागत अनुपात	24	2.63

मानदंड	प्राकृतिक खेती (0.08 हेक्टेयर)	परंपरागत खेती (0.08 हेक्टेयर)
फसल / किस्म	गेहूँ / एचडी 2967	गेहूँ / एचडी 2967
खेती की लागत (रु.)	1500	2190
उत्पादन (कुंटल)	2.5	1.5
कुल लाभ (रु.)	5000	3000
शुद्ध लाभ (रु.)	3500	810
लाभ : लागत अनुपात	2.3	0.36
मानदंड	**प्राकृतिक खेती (0.04हेक्टेयर)**	**परंपरागत खेती (0.04हेक्टेयर)**
फसल / किस्म	आलू / पोखराज	आलू / पोखराज
खेती की लागत (रु.)	3200	5500
उत्पादन (कुंटल)	12	7
कुल लाभ (रु.)	18000	10500
शुद्ध लाभ (रु.)	14800	5000
लाभ : लागत अनुपात	4.6	0.9

लाभ और उपलब्धियां

- न्यूनतम इनपुट लागत।
- खेती की कुल लागत मे कमी।
- फल की अच्छी गुणवत्ता, आकार और बढ़ी हुई शेल्फ लाइफ के साथ उच्च पैदावार।
- प्राकृतिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग से शुद्ध आय में वृद्धि।
- स्वयं एवं सपूर्ण समुदाय को रसायन मुक्त खाद्यान का सेवन और बिक्री करना।
- केंचुए की उच्च संख्या के साथ बेहतर मृदा स्वास्थ्य।

स्रोत: *प्राण एन जी ओ रामपुर, गया, बिहार – 823001*

श्रीमती बबीता देवी

ग्राम : बरसोना

मंडल : टनकुप्पा

जिला : गया

संपर्क नंबर : 9631653287

शिक्षा : मैट्रिक

अपनाई गई कृषि पद्धतियां:

- प्रक्रतिक पद्धति से श्री विधि द्वारा धान, गेहूँ, सरसों एवं सब्जियों की खेती की।
- बीज उपचार के लिए श्रीबीजामृत का उपयोग करते हैं।
- विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक उर्वरकों जैसे श्रीजीवामृत, श्रीघनजीवामृत, श्रीप्रणामृत, श्रीगजरामृत आदि का उपयोग किया जाता है।
- रोग, कीट व बीमारियों की रोकथाम हेतु विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक कीटनाशकों जैसे श्रीनीमस्त्र, श्रीआगनेयास्त्र, श्रीब्रह्मास्त्र, श्रीदासपर्नियार्क, श्रीलोहस्त्र आदि का इस्तेमाल किया।
- विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक कवकनाशी जैसे श्रीमठास्त्र, श्रीसोठास्त्र आदि का उपयोग किया जाता है।
- विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक पौधों के विकास नियामक जैसे श्रीअमृत, श्रीमूँगअमृत, श्रीउपलामृत आदि का उपयोग किया जाता है।
- कीट नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रैप, स्टिकीप्लेट्स, बर्डपिचर्स, बोनफायर, कीट ट्रैप जैसे विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक तरीकों का इस्तेमाल किया।
- कीट प्रबंधन के लिए मिश्रित फसल और बॉर्डर फसल जेसे उपयोग भी सफल हुए है।
- मलचिंग के तौर पर जड़ क्षेत्र के चारों ओर सजीव गीली घास और मृत गीली घास का उपयोग किया गया है।
- गांव में किचन गार्डन स्थापित करने में सहायता की।
- जिला स्तरीय प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (0.2 हेक्टेयर)	परंपरागत खेती (0.2 हेक्टेयर)
फसल / किस्म	धान / दामिनी	धान / दामिनी
खेती की लागत (रु.)	4000	5800
उत्पादन (कुंटल)	12.50	6.0
कुल लाभ (रु.)	21250	10200
शुद्ध लाभ (रु.)	17250	4400
लाभ : लागत अनुपात	4.3	0.75

घटक	पृाकृतिक खेती (0.08 हेक्टेयर)	परंपरागत खेती (0.08 हेक्टेयर)
फसल / किस्म	गेहूँ / एचडी 2967	गेहूँ / एचडी 2967
खेती की लागत (रु.)	1500	2190
उत्पादन (कुंटल)	2.5	1.5
कुल लाभ (रु.)	5000	3000
शुद्ध लाभ (रु.)	3500	810
लाभ : लागत अनुपात	2.33	0.36

लाभ और उपलब्धियां

- न्यूनतम इनपुट लागत।
- खेती की कुल लागत मे कमी।
- फल की अच्छी गुणवत्ता, आकार और बढ़ी हुई शेल्फ लाइफ के साथ उच्च पैदावार।
- प्राकृतिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग से शुद्ध आय में वृद्धि।
- स्वयं एवं सपूर्ण समुदाय को रसायन मुक्त खाद्यान का सेवन और बिक्री करना।
- केंचुए की उच्च संख्या के साथ बेहतर मृदा स्वास्थ्य।

स्रोतः *प्राण एन जी ओ रामपुर, गया, बिहार – 823001*

श्रीमती माधुरी देवी

गाँव : बरसोना
मण्डल : टनकपुर
जिला : गया
संपर्क : 9771533421
शिक्षा : मेट्रिक

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- प्रक्रतिक पद्धति से श्री विधि द्वारा धान, गेहूँ, सरसों एवं सब्जियों की खेती की।
- बीज उपचार के लिए श्रीबीजामृत का उपयोग करते हैं।
- विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक उर्वरकों जैसे श्रीजीवामृत, श्रीघनजीवामृत, श्रीप्रणामृत, श्रीगजरामृत आदि का उपयोग किया जाता है।
- रोग, कीट व बीमारियों की रोकथाम हेतु विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक कीटनाशकों जैसे श्रीनीमस्त्र, श्रीआगनेयास्त्र, श्रीब्रह्मास्त्र, श्रीदासपर्नियार्क, श्रीलोहस्त्र आदि का इस्तेमाल किया।
- विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक कवकनाशी जैसे श्रीमठास्त्र, श्रीसोठास्त्र आदि का उपयोग किया जाता है।
- विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक पौधों के विकास नियामक जैसे श्रीअमृत, श्रीमूँगअमृत, श्रीउपलामृत आदि का उपयोग किया जाता है।
- कीट नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रैप, स्टिकीप्लेट्स, बर्डपिचर्स, बोनफायर, कीट ट्रैप जैसे विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक तरीकों का इस्तेमाल किया।
- कीट प्रबंधन के लिए मिश्रित फसल और बॉर्डर फसल जेसे उपयोग भी सफल हुए है।
- मलचिंग के तौर पर जड़ क्षेत्र के चारों ओर सजीव गीली घास और मृत गीली घास का उपयोग किया गया है।
- गांव में किचन गार्डन स्थापित करने में सहायता की।
- जिला स्तरीय प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

घटक	प्राकृतिक खेती (0.2 हेक्टेयर)	परंपरागत खेती (0.2 हेक्टेयर)
फसल / किस्म	सरसों / आरपी 09	सरसों / इम्प्रूव्ड किस्म
खेती की लागत (रु.)	1000	1100
उत्पादन (कुंटल)	2.5	0.40
कुल लाभ (रु.)	25000	4000
शुद्ध लाभ (रु.)	24000	2900
लाभ : लागत अनुपात	24	2.63

घटक	प्राकृतिक खेती (0.08 हेक्टेयर)	परंपरागत खेती (0.08 हेक्टेयर)
फसल / किस्म	गेहूँ / एचडी 2967	गेहूँ / एचडी 2967
खेती की लागत (रु.)	1500	2190
उत्पादन (कुंटल)	2.5	1.5
कुल लाभ (रु.)	5000	3000
शुद्ध लाभ (रु.)	3500	810
लाभ : लागत अनुपात	2.3	0.37

लाभ और उपलब्धियां

- न्यूनतम इनपुट लागत।
- खेती की कुल लागत मे कमी।
- फल की अच्छी गुणवत्ता, आकार और बढ़ी हुई शेल्फ लाइफ के साथ उच्च पैदावार।
- प्राकृतिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग से शुद्ध आय में वृद्धि।
- स्वयं एवं सपूर्ण समुदाय को रसायन मुक्त खाद्यान का सेवन और बिक्री करना।
- केंचुए की उच्च संख्या के साथ बेहतर मृदा स्वास्थ्य।

स्रोत: प्राण एन जी ओ रामपुर, गया, बिहार - 823001

गुजरात

श्री चौहान वनराजसिंह दिलीपसिंह

गांव : बावलीया
जिला : वडोदरा
राज्य : गुजरात
संपर्क संख्या : 9586339266
शिक्षा : एचएससी
ईमेल : vanrajsinhc077@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- कृषि यंत्रीकरण विधियों (ड्रिप, स्प्रिंकलर, पावर टिलर और ट्रैक्टर) को अपनाया।
- जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत आदि को तैयार किया।
- अनाजों को प्रोसेस किया, ग्रेडिंग की, पैक किया और सीधे ग्राहकों को मूल्य वर्धन के साथ बेचा।
- श्री गोरस गाय-स्कूल फार्म, बायलिया में किसान-वैज्ञानिक वार्ता का आयोजन किया।
- सुभाष पालेकर प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से अन्य किसानों का मार्गदर्शन किया।
- आतमा (ATMA) कृषि-मेला, प्रदर्शनी और अभिनव किसान समारोह में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1हेक्टेयर)		प्राकृतिक खेती (1हेक्टेयर)	
फसल	धान (देसी बी आर के)	गेहूँ (बंशी)	धान (गुजरात 17)	गेहूँ (496)
खेती की लागत (रु.)	60000	30000	60000	55000
उत्पादन (कुंतल)	45	40	45	40
कुल लाभ (रु.)	200000	150000	100000	80000
शुद्ध लाभ (रु.)	140000	120000	40000	25000
लाभ लागतअनुपात	2.33	4	0.66	0.45

लाभ और उपलब्धियां

- मिट्टी के पोषण, उपजाऊ क्षमता और कीटों का प्रबंधन करने के लिए प्राकृतिक सामग्री का उपयोग किया।
- खेती की लागत कम हुई और आय दोगुनी हो गई।
- अनाज और भूसे की अधिक उपज प्राप्त की
- मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि।
- ग्राम स्तर पर एसपीएनएफ के लिए मास्टर ट्रेनर के रूप में नामित किया गया।
- 12,000 किसानों ने "श्री गोरस गाय-स्कूल गाय प्रजनन केंद्र" का दौरा किया है।

- जिला स्तर पर सर्वश्रेष्ठ आत्मा (ATMA) किसान पुरस्कार, प्रगतिशील खेती वीएनएम पर्यावरण उत्कृष्टता पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ पशुवादी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

***स्रोतः** आतमानिदेशालय और समेटी, पी-7, 'एम' मंजिल, कृषिभवन, गांधीनगर। पिन–382010, गुजरात*

श्री चौहान विक्रम सिंह जेसंगभाई

गाँव : बावलिय
मंडल : शिनोर
जिला : वडोदरा
शिक्षा : एच एस सी
सम्पर्क : 7984593170

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- प्राकृतिक खेती के माध्यम से सब्जियों की खेती की।
- जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत जैसे आदान तैयार कर उपयोग किए गए| पौधों की सुरक्षा के लिए नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, अग्निस्त्र और दशपर्णी अर्क जैसे उपाय अपनाए।
- आत्मा कृषि-मेला, प्रदर्शनी और अभिनव किसान मिलन कार्यक्रम के साथ-साथ प्रथाओं के प्रसार के लिए आत्मा की अन्य गतिविधियों में भाग लिया।
- अन्य किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।
- परिवार-किसान की अवधारणा को अपनाकर सप्ताह में दो बार घर पर मौसमी सब्जियां पहुंचाई।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	कुंदरू (टिश्यू एफ 2)	कुंदरू (टिश्यू एफ 2)
खेती की लागत (रु.)	36000	42000
उत्पादन (कुंतल)	218	174
कुल लाभ (रु.)	269884	139200
शुद्ध लाभ (रु.)	233884	97200
लाभ लागतअनुपात	6.5	2.13

लाभ और उपलब्धियां

- 3-4 वर्षों में वित्तीय स्थिति में काफी सुधार हुआ।
- खेती की कम लागत।
- अधिक उपज प्राप्त की।
- मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि।
- प्राकृतिक खेती के लिए ग्राम स्तर पर मास्टर ट्रेनर के रूप में नामित और 300 से अधिक किसानों को प्रशिक्षित किया।

- मानीय राज्यपाल, गुजरात द्वारा सम्मानित।
- प्रगतिशील खेती वीएनएम पर्यावरण उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित।

स्रोत: *आतमा (ATMA)निदेशालय और समेटी, पी-7, 'एम' मंजिल, कृषिभवन, गांधीनगर। पिन–382010, गुजरात*

श्री देवशीभाई मेराभाई सोलंकी

गांव : बोलस
तालुका : वेरावल
जिला : गिरसोमनाथ
राज्य : गुजरात
संपर्क संख्या : 9723491145
शिक्षा : एचएससी

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- नारियल और मूंगफली में प्राकृतिक खेती का तरीका अपनाया।
- नारियल और फसलों की खेती के लिए खेत पर उपलब्ध प्राकृतिक उत्पादों का इस्तेमाल किया।
- स्वनिर्मित जीवामृत, बीजामृत, दसपर्णी आदि का प्रयोग किया।
- स्व-विकसित विपणन और प्रत्यक्ष बिक्री पद्धतियों को अपनाया।
- कृषि उपज की गुणवत्ता और शुद्धता बनाए रखी।
- प्राकृतिक खेती के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए किसानों को प्रशिक्षित किया।
- प्राकृतिक खेती पर व्याख्यान दिया।
- आत्मा (ATMA) और बागवानी विभाग के सहयोग से काम किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती		प्राकृतिक खेती	
	नारियल (जी जी 20) (1हेक्टेयर)	मूंगफली (टी डी एवं डी टी) (1हेक्टेयर)	नारियल (जी जी 20) (1हेक्टेयर)	मूंगफली (टी डी एवं डी टी) (1हेक्टेयर)
खेती की लागत (रु.)	84000	52000	110000	71500
उत्पादन (कुंटल)	25230 संख्या	28	21400 संख्या	27
कुल लाभ (रु.)	334000	186000	300000	155000
शुद्ध लाभ (रु.)	250000	134000	190000	83500
लाभ लागत अनुपात	2.97	2.57	1.72	1.16

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत को कम करके अधिक लाभ प्राप्त किया।
- मूल्य संवर्द्धन के माध्यम से आय में वृद्धि।
- पानी का कम उपयोग किया।
- जीवामृत के उपयोग से साफ पानी मिला।

***स्रोत:** आतमा (ATMA)निदेशालय और समेटी, पी-7, ‘ एम’ मंजिल, कृषिभवन, गांधीनगर। पिन–382010, गुजरात*

श्री दीक्षित बी पटेल

गांव : संग्रामपुरा

तालुका : खेडब्रह्मा

जिला : साबरकांठा

संपर्क : 9426513642

शिक्षा : बीई (इलेक्ट्रॉनिक्स)

Email : smearing@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- प्राकृतिक खेती का प्रयोग करके केले, दालें (अंतर-फसल) और 25 से अधिक सब्जियों की खेती की।
- मल्चिंग के लिए खेत में उपलब्ध घास-फूस का प्रयोग किया।
- 'परिवार किसान अवधारणा' को लागू किया और इसके प्रसार के लिए किसानों को प्रशिक्षित किया।
- प्राकृतिक खेती को अपनाने के लिए ग्राम स्तर पर मुख्य प्रशिक्षकों को विकसित किया।
- 2016 से 14,900 किसानों की कुल भागीदारी के साथ प्राकृतिक खेती पर 5 कार्यशालाओं का आयोजन किया।
- आत्मा अमृत आहार महोत्सव, फार्म फ्रेश फेस्टिवल, प्रदर्शनी और अभिनव किसानों की बैठक/कार्यक्रम और अन्य गतिविधियों में भाग लिया।
- कुशल तरीके से सूचनाओं के प्रसार के लिए गूगल मीट, व्हाट्सएप, यूट्यूब, फेसबुक आदि जैसे प्लेटफार्मों का प्रयोग किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1हेक्टेयर)
फसल	केला (जी 9)	केला (जी 9)
खेती की लागत (रु.)	40000	175000
उत्पादन (कुंतल)	100	70
कुल लाभ (रु.)	400000	380000
शुद्ध लाभ (रु.)	360000	205000
लाभ लागतअनुपात	9.0	1.17

लाभ और उपलब्धियां

- कम लागत।
- फलों और सब्जियों में गुणवत्ता और स्वाद बढ़ा।
- प्राकृतिक भोजन के सेवन से रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार होता है।

- बेहतर मृदा स्वास्थ्य ने ग्रीनहाउस गैसों के कम उत्सर्जन के कारण ग्लोबल वार्मिंग प्रभाव को कम करने में योगदान दिया।
- एसपीएनएफ के राज्य समन्वयक और एसपीएनएफ की सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में नामित।

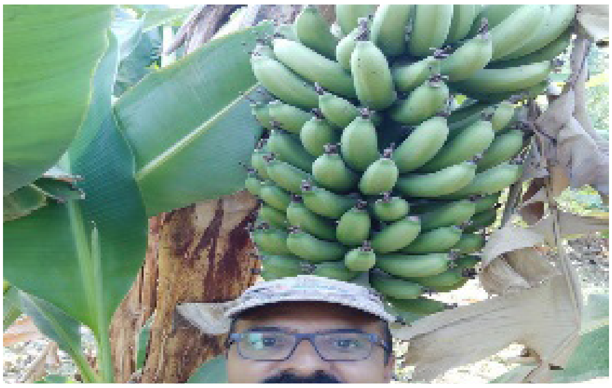

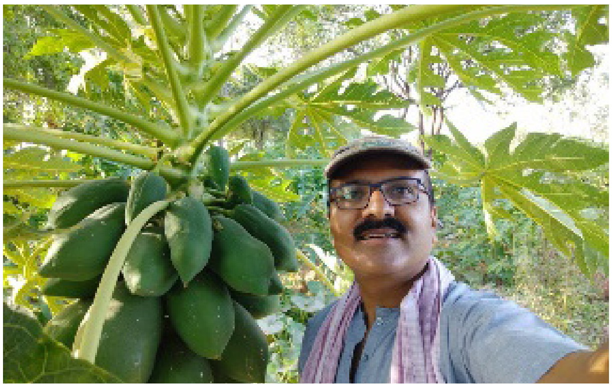

स्रोत: *आतमानिदेशालय और समेटी, पी-7, 'एम' मंजिल, कृषिभवन, गांधीनगर । पिन–382010, गुजरात*

श्री शक्तिसिंह वनराजसिंह जडेजा

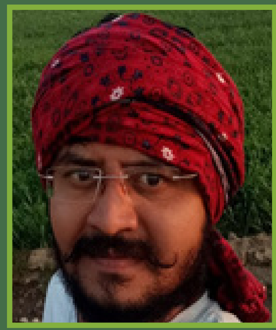

गांव : खोखरी

तालुका : पदाधारी

जिला : राजकोट

राज्य : गुजरात

शिक्षा : एम.ए.बी.एडपीएचडी (जारी)

संपर्क संख्या : 97257 42304

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- प्राकृतिक खेती को अपनाकर सब्जियों की खेती की।
- फसल उत्पादन के लिए जीवामृत, धनजीवामृत और बीजामृत का प्रयोग किया।
- अपनाई गई आच्छादन (मल्चिंग) प्रक्रिया और कीट और रोगों को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न प्राकृतिक अदानों जैसे नीमास्त्र, अग्निशास्त्र, ब्रह्मास्त्र, सप्तधानयांकुर अर्क आदि।
- आससपास के किसानों को प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण दिया गया।
- सेमिनार और प्रशिक्षण में भाग लिया।
- उपज के विपणन के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाने वाले विभिन्न किसानों के साथ जुड़े हुए हैं।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1हेक्टेयर)		पारंपरिक खेती (1हेक्टेयर)	
फसल	मिर्च (ओजस कश्मीरी व् देसी)		मिर्च (ओजस कश्मीरी व् देसी)	
खेती की लागत (रु.)	35000		46000	
उत्पादन (कुंटल)	बीज	फली	बीज	फली
	5	30	4	27
कुल लाभ (रु.)	350000		200000	
शुद्ध लाभ (रु.)	315000		154000	
लाभ लागत अनुपात	9		3.34	

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी और अधिक पैदावार के माध्यम से लाभ में वृद्धि।
- गांव स्तर पर प्राकृतिक खेती के मास्टर ट्रेनर के रूप में नियुक्त।
- प्राकृतिक खेती में लगभग 500 किसानों को प्रशिक्षित किया।
- जिला स्तर पर 'सर्वश्रेष्ठ आत्मा (ATMA) किसान पुरस्कार' प्राप्त किया।

स्रोत: *आतमानिदेशालय और समेटी, पी-7, 'एम' मंजिल, कृषिभवन, गांधीनगर। पिन–382010, गुजरात*

श्री मनोजभाई पुरुषोतमभाई सोलंकी

गाँव	:	मधापर
मंडल	:	भुज
जिला	:	कच्छ
राज्य	:	गुजरात
सम्पर्क	:	9825428100/9879928100
ईलमे	:	ramkrushnatrust@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- सन् 2001 से 100 एकड़ भूमि में प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- गौशाला में 425 कांकरेंज गाय और 2 बैल।
- ककुमा में वे अपने फार्म में किसानों को हर महीने प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।
- गोबर, गोमूत्र का मूल्यवर्धन; और ग्राम उद्योग के लिए 100 से अधिक उत्पाद बनाना, उपज का मूल्यवर्धन और प्रत्यक्ष विपणन।
- प्राकृतिक खेती के प्रशिक्षण हेतु कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी (एटीएमए) योजना तथा के.वी.के के सहयोग से कार्य कर रहे हैं।
- राज्य के विभिन्न जिलों के किसानों के लिए एक दिवसीय जैविक खेती प्रशिक्षण का आयोजन कर रहे हैं।
- विविध औषधीय पौधों के लिए नर्सरी की स्थापना की और लोगों को मुफ्त में पौधे प्रदान किए।
- देशी बीजों की खेती, भंडारण और परिरक्षण।
- वह अपने उत्पादों को अपने घर से बेच रहे हैं और उन्होंने एक दुकान भी शुरु की है।
- कम्पोस्ट बनाने के लिए संयंत्र स्थापित किया; और कम्पोस्ट बेचने तथा किसानों को प्रशिक्षित करने की योजना बना रहे हैं।
- अब तक उनके फार्म पर 76 आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं, जो प्रति महीने की 12 से 14 तारीख के बीच आयोजित किए गए जिसमें प्राकृतिक कृषि पर 2763 किसानों को प्रशिक्षित किया गया।
- जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए एक फिल्म 'जग्या व्यार थी सावर' ("જાગ્યા ત્યારથી સવાર") बनाई।
- उनके द्वारा विभिन्न जैविक उर्वरक जैसे सुपर कम्पोस्ट उर्वरक, प्रोम उर्वरक, मृदा उर्वरक, गाय हर्न उर्वरक, गोबर उर्वरक, गाय समृद्धि उर्वरक, ठोस खाद जैसे गैस घोल, सूक्ष्म पोषक तत्व, माइक्रोजाइम, ह्यूमिक एसिड आदि और विभिन्न कीटनाशक जैसे फायरआर्म्स, ब्रह्मास्त्र, निमास्त्र, निम्प्लस, एंटीसेप्टिक बनाया जाता है और खेतों में उनका प्रयोग किया जाता है।
- खेत में विभिन्न फसलें जैसे – मिर्च, बैंगन, टमाटर, पत्ता गोभी, खीरा, फूलगोभी, वेलोर, पालक, मूली, मेथी, धनिया, छोटी लौकी को खेत में उगाया जाता है।
- गेहूं, ज्वार, बाजरा जैसे अनाजों की खेती की जाती है।
- सरसों, मूंगफली, अरंडी जैसी तिलहन फसलों की खेती की जाती है।

- चारे के लिए घास की फसलें जैसे राजका बजरी, ज्वार, राजको, जिंजवो, सुपर नेपियर, देशी गाजर और मक्के की खेती की जाती है।
- उन्होंने गोबर से विभिन्न उत्पाद जैसे बर्तन, फूलदानी, घड़ी, दीया आदि बनाए।
- वे मिट्टी और जल परीक्षण हेतु प्रयोगशाला स्थापित करते हैं।
- वे कृषकों को देशी बीज को बढ़ावा देने के लिए देशी बीज बैंक की स्थापना करते हैं।

प्राकृतिक खेती उपज संबंधी उत्पादन

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)			पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)		
फसल	गेहूं (जीवी 9) (1 ha)	राजका बाजरी (जुद्दा) (1 ha)	नेपियर (सुपर नेपियर) (1 ha)	गेहूं (जीवी 9) (1 ha)	राजका बाजरी (जुद्दा) (1 ha)	नेपियर (सुपर नेपियर) (1 ha)
खेती की लगत (रु.)	69641	56240	326654	110230	85763	546983
उत्पादन (कुंटल)	45.44	714.32	18.25	44.46	395	18.5
कुल लाभ (रु)	221300	178600	964782	189080	148963	910106
शुद्ध लाभ (रु)	151659	122360	638128	78850	63200	363123
लाभ : लागत अनुपात	2.17	2.17	1.95	0.71	0.73	0.66

लाभ और उपलब्धियाँ

- सभी फसलों की गुणवत्ता और मात्रा में वृद्धि हुई।
- खेती की लागत में कमी।
- मूल्यवर्धन करके अधिक लाभ प्राप्त हुआ।
- मृदा की उर्वरता और उत्पादकता में वृद्धि।
- मिश्रित फसल पद्धति से अधिकतम लाभ अर्जन।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के गवार्निंग बॉडी एवं सामान्य बोर्ड के सदस्य।

स्रोत: *आतमानिदेशालय और समेटी, पी-7, ‘ एम’ मंजिल, कृषिभवन, गांधीनगर। पिन–382010, गुजरात*

श्री नरवन सिंह के गोहिल

ग्राम : शेवदिवादरी
तालुका : जेसारी
जिला : भावनगरी
संपर्क नंबर : 9316639313
शिक्षा : 8वीं पास

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 2017 में प्राकृतिक खेती को लागू किया और प्राकृतिक खेती के सभी पांच सिद्धांतों यानी जीवामृत, बीजामृत, आच्छादन, वापासा और पौधे संरक्षण आर्क का अभ्यास किया।
- एक खेत में 20 से अधिक सब्जियों के साथ मिश्रित फसल प्रणाली तैयार की।
- मल्चिंग के लिए फसलों के अवशेषों का इस्तेमाल किया जाता है।
- प्राकृतिक खेती पर व्याख्यान दिया।
- मार्केटिंग के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल किया।
- आत्मा से सहयोग मिल और इसकी गतिविधियों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1हेक्टेयर)
फसल	केला (जी -9)	केला (जी -9)
खेती की लागत (रु.)	166000	300000
उत्पादन (कुंटल)	563	460
कुल लाभ (रु.)	1126000	764307
शुद्ध लाभ (रु.)	960000	464307
लाभ लागत अनुपात	5.78	1.54

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की कम लागत।
- उपज का बेहतर मूल्य।
- रासायनिक अवशेष मुक्त कृषि उत्पाद।
- उन्नत समुदाय के स्वास्थ्य और कल्याण।
- कम ग्रीनहाउस प्रभाव।

स्रोत: *आतमानिदेशालय और समेटी, पी-7, 'एम' मंजिल, कृषिभवन, गांधीनगर । पिन–382010, गुजरात*

श्री रमेशभाई दहियाभाई प्रजापति

गांव : वंच
तालुका : दस्क्रोई
जिला : अहमदाबाद
राज्य : गुजरात
संपर्क संख्या : 9924623692
शिक्षा : कक्षा 10

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- प्राकृतिक खेती से फालसा की खेती की।
- गाय के गोबर, गोमूत्र, छाछ आदि से बनी सामग्री का इस्तेमाल किया।
- सिंचाई में जीवामृत के उपयोग से कीट और पोषण मूल्य का प्रबंधन किया।
- प्रत्यक्ष विपणन तकनीकों का प्रयोग करके उच्च राजस्व अर्जित किया।
- एसपीएनएफ के तहत खेती के तरीकों में किसानों को प्रशिक्षित किया।
- व्हाट्सएप, गूगल मीट आदि जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से साथी किसानों को जानकारी का प्रसार किया।
- प्रदर्शनियों, कृषि मेला और अन्य कार्यक्रमों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	फालसा	फालसा
खेती की लागत (रु.)	30800	43500
उत्पादन (कुंटल)	14.6	14
कुल लाभ (रु.)	141400	125000
शुद्ध लाभ (रु.)	110600	81500
लाभ लागतअनुपात	3.57	2.87

लाभ और उपलब्धियां

- प्राकृतिक खेती के माध्यम से खेती की लागत में कमी।
- बिना रसायनिक खाध व उर्वरकों के प्रयोग के अधिक उपज हुई।
- पारंपरिक बाजार/एपीएमसी की तुलना में उपज का बेहतर मूल्य प्राप्त हुआ।
- विविध फसल खेती के माध्यम से एक अच्छे बाजार के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

- मिट्टी की स्थिति में सुधार।
- आत्मा , अहमदाबाद के किसान हित समूह (फिग) के सदस्य के रूप में नामित।
- फालसा में अभिनव कृषि पद्धतियों के लिए जिला आत्मा पुरस्कार से सम्मानित।
- गांव में एसपीएनएफके मास्टर ट्रेनर के रूप में नियुक्त।

स्रोत: *आतमानिदेशालय और समेटी, पी-7, ‘ एम’ मंजिल, कृषिभवन, गांधीनगर । पिन–382010, गुजरात*

श्री राताड़िया माछीभाई

गांव	:	नैनिवडी
तालुका	:	कलावद
जिला	:	जामनगर
राज्य	:	गुजरात
संपर्क संख्या	:	8160752101
ईमेल	:	machabhairatadiya@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- गेहूं, मूँगफली और अन्य फसलों में प्राकृतिक खेती को लागू किया।
- गेहूं उत्पादन में कृषि यंत्रीकरण (ड्रिप एंड स्प्रिंकलर सिंचाई, ड्रिल, हार्वेस्टर और रीपर) का प्रयोग किया।
- 2 गिर गायों और 2 बैलों के साथ पशुपालन का पालन किया।
- एसपीएनएफ के मास्टर ट्रेनर के रूप में किसानों को प्रशिक्षण प्रदान किया।
- अनाज एवं सब्जियों का देसी बीज बैंक विकसित किया।
- उपज के मूल्य वर्धन के लिए प्रत्यक्ष विपणन तकनीक अपनाई।
- तालुका स्तर पर हर महीने प्राकृतिक खेती पर बैठक का आयोजन किया और एसपीएनएफ प्रशिक्षण और कार्यशालाओं में भाग लिया।
- आत्मा परियोजना, जामनगर के साथ जुड़े हुए हैं
- सूचना के प्रसार के लिए व्हाट्सएप, यूट्यूब, फेसबुक आदि जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1हेक्टेयर)
फसल	मूँगफली (जी जी -20)	मूँगफली (जी जी -20)
खेती की लागत	35520	50000
उत्पादन (कुंटल)	43	35
कुल लाभ (रु.)	126850	120000
शुद्ध लाभ (रु.)	91330	70000
लाभ लागतअनुपात	2.57	1.4

लाभ और उपलब्धियां

- गेहूं की गुणवत्ता में वृद्धि।
- खेती की लागत में कमी करके और बेहतर उपज से किसान की आय दोगुनी हुई ।

- मिट्टी की उत्पादकता में वृद्धि।
- एसपीएनएफके मास्टर ट्रेनर के रूप में नामित।

7 કૃષિ પ્રભાત
ખેડૂત બોલે ખેતરેથી...

स्रोतः आत्मा निदेशालय और समेटी, पी-7, 'एम' मंजिल, कृषिभवन, गांधीनगर। पिन–382010, गुजरात

श्री राठवा छेलियाभाई आपसिंहभाई

ग्राम : काशीपुर
तालुका : गोधरा
जिला : पंचमहल
शिक्षा : 7वीं
संपर्क नंबर : 9327052127/9537188573

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- बेसहारा देसी गाय को अपनाकर प्राकृतिक खेती किया।
- प्राकृतिक खेती के माध्यम से धान की खेती की।
- फसल उत्पादन के लिए जीवामृत, घनजीवामृत और बीजामृत का उपयोग किया।
- कीटों और रोगों को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न प्राकृतिक आदानों जैसे नीमस्त्र, अग्निस्त्र, ब्रह्मास्त्र, सप्तधन्यकुर अर्क आदि का इस्तेमाल किया।
- आस-पास के किसानों को प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण प्रदान किया।
- संगोष्ठियों और प्रशिक्षणों में भाग लिया।
- उत्पादों के विपणन के लिए प्राकृतिक खेती का प्रयोग करने वाले अन्य किसानों के साथ जुड़े ।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	धान	धान
खेती की लागत(रु.)	17000	22000
उत्पादन (कुंतल)	40	36
कुल लाभ (रु.)	70000	63000
शुद्ध लाभ (रु.)	53000	41000
लाभ लागत अनुपात	3.11	1.86

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी से लाभ में वृद्धि हुई ।
- इन्हें गांव और तालुका स्तर पर प्राकृतिक खेती के मास्टर ट्रेनर के रूप में नियुक्त किया गया।
- प्राकृतिक खेती में 100 से अधिक किसानों को प्रशिक्षित किया।

स्रोतः *आत्मा निदेशालय और समेटी, गांधीनगर, गुजरात*

श्री सेठिया रतिलाल विट्ठलदास

गांव : गुनातीतपुर
तालुका : भचाऊ
जिला : कच्छ
राज्य : गुजरात
संपर्क नं : 9909219303
ई-मेल : ratilal124@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- इन्होंने सन् 2008 से प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- प्राकृतिक रूप से उधानिकी, सब्जियां, एवं अन्य फसलें उगाई|
- पांच स्तरीय फसल प्रणाली अपनाई|
- 40 गिर गाय और 2 बैलों के साथ पशुपालन।
- जीवामृत का सिंचाई के साथ उपयोग करने के लिए मशीनीकरण को अपनाया। इन्होने ५ स्वचालित जीवामृत टैंक्स जिनकी प्रत्येक की क्षमता 5000 लीटर है का निर्माण किया|
- केवल प्राकृतिक आदानों का प्रयोग किया जाता है। खाद के रूप में प्राकृतिक आदान और कीट नियंत्रण के लिए जीवामृत, घनजीवामृत, ब्रह्मास्त्र, सप्तधानयांकुर अर्क, नीमास्त्र और दसपर्णी अर्क आदि तैयार करके उनका प्रयोग किया जाता है।
- जैव ईंधन पलवार का उपयोग किया एवं इसे नियमित अभ्यास के रूप में अपनाया।
- गेहूं के खेत में सिंचाई हेतु टपक विधि, स्प्रिंकलर विधि, सीड ड्रिल, हार्वेस्टर एवं रीपर का उपयोग किया|
- प्रदर्शनी एवं अमृत आहार महोत्सव और अन्य मंचों पर भाग लिया|
- कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी (आत्मा) परीयोजना से जुड़े एवं आवश्यक मदद प्राप्त की|
- सुचना प्रसार एवं विपणन के लिए सोशल मिडिया जेसे व्हाटसेप, यु-ट्यूब, फेसबुक एवं अन्य माध्यमों का उपयोग किया|
- अपने फार्म में प्रत्येक माह के दूसरे रविवार को प्राकृतिक खेती पर कार्यशाला का आयोजन करते हैं।
- अनाज एवं सब्जियों के देशी बीज बैंक स्थापित किया।
- उत्पाद का मूल्यवर्धन और प्रत्यक्ष विपणन।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

i. प्राक्रतिक खेती

फसल	अनार	आम	मूंगफली	पपीता	अमरुद
किस्में	सिंदूरी	केसर	जी यु जे 7	ताइवान	ताइवान पिंक
खेतीकीलागत(रु.)	125000	250000	50000	375000	250000
उत्पादन (कुंटल)	145	100	22.6	825.5	163
कुल लाभ (रु.)	422000	660000	188000	869000	602000
शुद्ध लाभ (रु.)	297000	410000	138000	494000	352000
लाभ लागत अनुपात	3.38	2.64	3.76	2.32	2.41

ii. परम्परागत खेती

फसल	अनार	आम	मूंगफली	पपीता	अमरुद
किस्में	सिंदुरी	केसर	जी यु जे 7	ताइवान	ताइवान पिंक
खेतीकीलागत(रु.)	250000	350000	100000	500000	325000
उत्पादन (कुंटल)	108.8	90.7	18	816	136
कुल लाभ (रु.)	324000	600000	150000	810000	525000
शुद्ध लाभ (रु.)	74000	250000	50000	310000	200000
लाभ लागत अनुपात	1.30	1.71	1.50	1.62	1.62

लाभ और उपलब्धियाँ

- बीजामृत द्वारा बीजोपचार करने से मृदा जनित रोगों से बचाव एवं शत प्रतिशत अंकुरण होता है|
- प्राकृतिक खेती को अपनाने से आदान लागत न्यूनतम हो हो जाती है एवं उत्पादन भी अधिक प्राप्त होता है जिससे लाभ भी अधिक होता है।
- कई कृषकों एवं आम लोगों ने जैविक कृषि के संबंध में परामर्श लिया।
- खेती की लागत न्यूनतम ।
- मशीनीकरण से श्रम लागत और समय की बचत।
- प्राकृतिक खेती पद्धति के परिणामस्वरूप समय की बचत।
- खेतों पर बीज और पौधे तैयार किए जाने के कारण लागत में अतिरिक्त कमी।
- मिश्रित फसल पद्धति से अधिकतम लाभ की प्राप्ति।
- प्राकृतिक कृषि उत्पादों का मूल्यवर्धन।
- अच्छे पोषण मूल्य के फलस्वरूप आसान विपणन और ग्राहक पक्ष की ओर से बहुत अच्छी मांग।
- २०० से ज्यादा प्राकृतिक उत्पादों के लिए 500 नियमित ग्राहकों के लिए बाजार विकसित किया|

स्रोत: आत्मा निदेशालय और समेटी, गांधीनगर, गुजरात

श्री ठक्कर हरेशभाई मोरारजीभाई

गांव : वावडी

तालुका : भुज

जिला : कच्छ

राज्य : गुजरात

संपर्क नं. : 9825553331

□□□□□ : ramkrushnatrust@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां:

- उन्होंने विभिन्न फलों जेसे स्ट्राबेरी, आम, ड्रेगन फ्रूट, केला, पपीता, अनार, खजूर, अमरुद, खरबूज, तरबूज, शकरकंद, मीठा नींबू, माल्टा, अंजीर, आदि और सब्जियों जेसे मिर्च, शिमला मिर्च, गोभी, बेंगन, खीरा, स्पोंज गार्ड, लोकी, करेला, चुकन्दर, ब्रोकली, बीन्स, जुकीनी, टमाटर, चेरी, लेटुस, पालक, प्याज, सहजन इत्यादि के उत्पादन में प्राकृतिक कृषि को अपनाया।
- वे 32 देसी कांकरेज गाय और एक बैल (नंदी) के साथ पशुपालन का कार्य करते हैं।
- सब्जियों और फलों के उत्पादन के लिए स्वचालन के साथ ड्रिप सिंचाई प्रणाली का प्रयोग करते हैं। ये अपने खेतों पर फसलों की सिंचाई हेतु फिल्टर्ड स्वचालन प्रणाली के माध्यम से एक बार में 80,000 लीटर पानी के द्वारा जीवामृत देते हैं।
    - इन्होंने अपने खेतों में केले के फूलों से कैल्शियम, कैक्टस से फफूंदनाशक और चूने से फोलिक एसिड, साथ ही छसमृत, पंचगव्यय, सप्तधन्यकुर अर्क, जीवामृत, जैविक पोटाश, जैविक फास्फोरस और जैविक नाइट्रोजन का प्रयोग किया ।
    - अपने खेत में सीडड्रील, हार्वेस्टर और कटाई मशीन आदि का प्रयोग करते हुए ड्रिप और छिड़काव सिंचाई को अपनाया।
- अपने घर में उत्पाद का मूल्यवर्धन और प्रत्यक्ष विपणन किया।
- सूचना और विपणन के प्रसार हेतु व्हाटसएप, यूट्यूब, फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्म का उपयोग।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती			पारम्परिक खेती (1 हेक्टेयर)		
फसल	स्ट्राबेरी (1 हे)	आम (1 हे)	ड्रेगन फ्रूट (1 हे)	स्ट्राबेरी (1 हे)	आम (1 हे)	ड्रेगन फ्रूट (1 हे)
किस्म	विंटर डाउन	केसर	रेड	विंटर डाउन	केसर	रेड
खेती की लागत (रु.)	2250000	100000	311250	2650000	162500	371250
उत्पादन (कुंटल)	350	175	125	125	150	100
कुल लाभ (रु.)	6000000	625000	2250000	3750000	500000	1721250
शुद्ध लाभ (रु.)	3750000	525000	1938750	1100000	337500	1350000
लाभ लागत अनुपात	2.66	6.25	7.23	1.41	3.07	4.64

लाभ और उपलबधियां

- संविदा खेती के माध्यम से लगभग 135 किसानों की 4000 एकड़ भूमि में केला, पपीता, आम, तरबूज, गन्ना जैसी विविध फसलों की खेती की।
- खेती की लागत कम होने और मूल्यवर्धन के फलस्वरूप दोगुनी आय।
- मृदा उर्वरता और उत्पादकता में सुधार
- उत्पादों की अधिक कीमत प्राप्त की।
- अन्य किसानों को नेट हाउस में खेती करने के लिए प्रेरित किया।
- विभिन्न देशों जैसे इज़राइल, अज़्बेकिस्तान, संयुक्त अरब अमीरात आदि के प्रतिनिधिमंडल द्वारा खेत का दौरा किया गया।

स्रोत: आतमा (ATMA) निदेशालय और समेटी, पी-7, 'एम' मंजिल, कृषिभवन, गांधीनगर। पिन–382010, गुजरात

श्री उमेशगिरी शैलेशगिरी गोस्वामी

गांव : नरसंडा
तालुका : नडियाद
जिला : खेड़ा
राज्य : गुजरात
संपर्क संख्या : 09909078344
शिक्षा : बी. कॉम

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- प्राकृतिक खेती के माध्यम से कंद फसल चुकंदर की खेती की।
- फसल उत्पादन के लिए बीजामृत, जीवामृत, घनजीवामृत एवं कीट नियंत्रण के लिए नीमास्त्र व अग्निस्त्र का प्रयोग किया।
- ड्रिप सिंचाई प्रणाली लागू की गई जहां फसल रेज्ड बेड पर बोया गया था।
- बेहतर बाजार मूल्य के लिए साफ और वर्गीकृत कृषि उपज।
- "गिरी" फार्म की स्थापना की और अन्य किसानों के लिए प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण का आयोजन किया।
- आत्मा (ATMA) द्वारा आयोजित प्रदर्शनियों और प्रशिक्षणों में मददगार व्यक्ति के रूप में भाग लिया।
- व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से जानकारी का प्रसार किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	चुकंदर (नामदेव उमा जी)	चुकंदर (नामदेव उमा जी)
खेती की लागत (रु.)	65000	105000
उत्पादन (कुंतल)	29	24
कुल लाभ (रु.)	295000	245000
शुद्ध लाभ (रु.)	230000	140000
लाभ लागत अनुपात	3.54	1.33

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में काफी कमी आई।
- उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादन के कारण चुकंदर की खेती के माध्यम से अधिक आय अर्जित हुई।
- स्वदेशी चुकंदर के बीज विकसित किए।
- प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के माध्यम से 300 + किसानों को लाभ पहुँचाया।
- जिला स्तर पर सर्वश्रेष्ठ आत्मा (ATMA) किसान पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

__स्रोत:__ आत्मा (ATMA) निदेशालय और समेटी, पी-7, ‘ एम’ मंजिल, कृषिभवन, गांधीनगर। पिन–382010, गुजरात

हरियाणा

श्री आचार्य देवव्रत, माननीय राज्यपाल, गुजरात

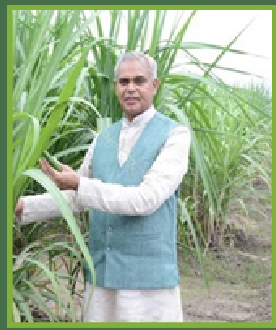

शहर	:	कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय III गेट के पास,
रोड	:	ढांड रोड, हरियाणा 136119
जिला	:	कुरुक्षेत्र
संपर्क नंबर	:	91-8689001228, 01744-238048, 238648
शिक्षा	:	मैट्रिक (10 वीं कक्षा)
Email	:	gurukul_kkr@yahoo.com, kurukshetragurukul@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने माननीय राज्यपाल गुजरात आचार्य देवव्रत के मार्गदर्शन में पिछले 8 वर्षों से 72 हेक्टेयर क्षेत्र में प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- शुरुआत में गुरुकुल फार्म के एक हिस्से को रासायनिक खेती से जैविक खेती में बदल दिया गया था। जैविक खेती में खेती की लागत बढ़ी और उपज कम हुई। इसलिए 72 हेक्टेयर क्षेत्र में प्राकृतिक खेती अपनाने का उचित निर्णय लिया गया।
- प्राकृतिक खेती के तहत मुख्य फसलें चावल, गेहूँ, गन्ना, आलू के साथ-साथ अन्य सब्जियों और विभिन्न चारे और फलों की फसलें आती हैं।
- गन्ने की फसल को एकल फसल के साथ-साथ खीरे, सरसों, प्याज और कुछ अन्य फसलों के साथ अंतरफसल के रूप में लिया जाता है।
- अपनाई जा रही प्रमुख पद्धतियों में चावल की रोपाई से पहले ढैंचा (सेसबनिया एसपीपी) और मूंग की हरी खाद डालना, जहाँ भी संभव हो पलवार बिछाना एवं कम/न्यूनतम जुताई, अवशेष निगमन/प्रतिधारण और अंतरफसल शामिल हैं।
- मिट्टी में जीवाणुओं और केंचुओं की बढ़ोत्तरी के लिए अनुकूल वातावरण के निर्माण को आसान बनाने के लिए प्रत्येक अभ्यास को संशोधित किया जाता है।
- धान की फसल लगाने और वृद्धि के लिए तत्काल पोषक तत्व की प्राप्ति हेतु साथ ही साथ सूक्ष्म जीवाणुओं की बढ़ोत्तरी हेतु ढैंचा/मूँग की हरी खाद का उपयोग किया जाता है।
- सूक्ष्म जीवों और केंचुओं की तेजी से बढ़ोत्तरी के लिए फसल अवशेषों को नष्ट नहीं किया जाता है जो मिट्टी की सूक्ष्म जीव की स्थिति में सुधार के अलावा कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन में भी मदद करते हैं, एवं बदले में गैसों के ग्रीन हाउस प्रभाव को कम करने में योगदान करते हैं।
- पलवार से पानी की बचत, खरपतवारों का प्रभावी नियंत्रण, गर्मी की लहरों में कमी का लाभ मिलता है और सीधी धूप से मृदा को बचाती है जो अन्यथा मिट्टी के जैविक कार्बन को नष्ट कर देती है और मौसम की चरम स्थिति के दौरान केचुओं की बढ़ोत्तरी के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करती है।
- प्राकृतिक खेती में कम/न्यूनतम जुताई एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि अत्यधिक जुताई और 350 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान में वृद्धि से मिट्टी में जैविक कार्बन का 45% से अधिक नष्ट हो जाता है।
- खेत में उपयोग किए जाने वाले मुख्य सूत्र जीवामृत, घनजीवामृत, नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, अग्निस्त्र, दशपर्णी अर्क और खट्टी लस्सी (खट्टी छाछ) हैं।

- जीवामृत का उपयोग सिंचाई के पानी के साथ किया जाता है लेकिन फसल के विकास में तेजी लाने के लिए आवश्यकता पड़ने पर छिड़काव भी किया जाता है।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (हेक्टेयर)		पारंपरिक खेती (हेक्टेयर)	
फसल	धान (नॉन–सेन्टेड)	गेहूँ (बंशी)	धान (नॉन–सेन्टेड)	गेहूँ (एचडी-2967)
खेती की लागत (रु.)	29412	26255	42802	33835
उत्पादन (कुंतल)	72.50	31.25	65.25	47.50
कुल लाभ (रु.)	126875	125000	10937	82412
शुद्ध लाभ (रु.)	97463	98745	66135	48577
लाभ लागत अनुपात	4.31	4.76	2.54	2.44

लाभ और उपलब्धियां

- मिट्टी की रासायनिक, भौतिक और जैविक स्थिति के संदर्भ में मृदा स्वास्थ्य में सुधार हुआ।
- सीसीएसएचएयू हिसार में विश्लेषण किए गए मिट्टी के नमूने 2017 में जैविक कार्बन (ओसी) में 30% की प्रचुरता पाई गई, जबकि 2 साल तक प्राकृतिक खेती को अपनाने के बाद 90% से अधिक मिट्टी के नमूने जैविक कार्बन में समृद्ध थे। इसी तरह के परिणाम तब दर्ज किए गए जब 2019 और 2020 में पीएयू, लुधियाना और सीएसएसआरआई, करनाल जैसे अन्य संस्थानों में मिट्टी के नमूनों का विश्लेषण किया गया।
- प्राकृतिक कृषि पद्धतियों को अपनाने से बृहद और सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपलब्धता में भी वृद्धि हुई।
- अन्य फसल प्रणालियां की तुलना में चावल आधारित प्रणालियों में संभवतः चावल की फसल में जीवाणुओं की गतिविधि के कारण जैविक कार्बन में वृद्धि अधिक स्पष्ट थी। चावल की फसल में, जीवाणुओं की गतिविधि वायुजीवी, जलमग्न और अर्ध-जलमग्न परिस्थितियों में आगे बढ़ती है अर्थात् वायुजीव, अवायुजीव और वैकल्पिक अवायुजीव कार्बन पृथक्करण को सुगम बनाने के लिए और वायुमंडलीय नाइट्रोजन को ठीक करने हेतु चावल के सूक्ष्म वातावरण में एक साथ काम करते हैं।
- कुछ क्षेत्रों में जैविक कार्बन 1.25% से अधिक दर्ज किया गया।
- मई 2017 में एकत्र किए गए मिट्टी के नमूनों में दर्ज फॉस्फोरस की उपलब्धता के मुकाबले मई 2018, अक्तूबर 2018 और मई 2019 में एकत्र किए गए मिट्टी के नमूनों में फास्फोरस की उपलब्धता में 89, 32 और 179% की वृद्धि हुई।
- इसी तरह मई 2017 में मिट्टी के संग्रहित नमूनों के मुकाबले मिट्टी के नमूनों के संग्रह की संबंधित अवधि के दौरान उपलब्ध औसत पोटैशियम में 7, 17 और 66% की वृद्धि हुई।
- मई 2017 से मई 2018 तक एक वर्ष की अवधि के दौरान सूक्ष्म पोषक तत्वों में वृद्धि की सीमा क्रमशः जिंक, आयरन, कॉपर और मैंगनीज में 32, 27, 31 और 114% थी।.
- इनपुट लागत और खेती की लागत कम हुई।
- रासायनिक आदानों का उपयोग शून्य हो गया।
- रसायन मुक्त भोजन का उत्पादन किया गया।

- केंचुओं की संख्या में वृद्धि के अलावा गुरुकुल फार्म में सूक्ष्मजीवों की संख्या में कई गुणा वृद्धि हुई।
- फसल प्रणाली पर ध्यान दिए बिना गुरुकुल के खेतों की मिट्टी में जीवाणुओं की कुल संख्या किसानों के खेत की मिट्टी में दर्ज की गई मात्रा से औसतन 528 गुना अधिक पाई गई।
- गुरुकुल के खेतों में प्रति ग्राम मिट्टी में कॉलोनी कृषि इकाइयों की संख्या 161 करोड़ थी, जबकि किसानों के खेतों की मिट्टी में 30.5 लाख थी।
- जीवामृत में गुड़ और बेसन (दाल का आटा) मिलाने से जीवाणुओं की संख्या में कई गुना वृद्धि हुई।
- जीवामृत की तैयारी के पहले दिन पाई गई 2000 सीएफयू बैक्टीरिया की संख्या दिसंबर के महीने में की गई तैयारी में 14 दिनों के बाद 7400 करोड़ प्रति मिलीलीटर तक पहुँच गई।
- गुरुकुल फार्म में, गैर-बासमती चावल की किस्मों का औसत उपज स्तर आमतौर पर 70-80 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के बीच होता है।
- बंसी किस्म के गेहूँ की औसत उत्पादकता 25-35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म के अनाज की कीमत उपभोक्ताओं की लगातार मांग की वजह से 4000 रुपये प्रति क्विंटल से अधिक होती है।
- गन्ने की उपज 850-1100 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसत उत्पादकता के साथ 1300 क्विंटल/हेक्टेयर को पार कर गई।
- आलू की औसत उत्पादकता 250-350 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के दायरे में है।

***स्रोत** : कृषि विज्ञान केंद्र , सीसी एस एच ए यू , कुरुक्षेत्र, हरियाणा*

श्री अशोक कुमार

गाँव : लोकरा

जिला : गुरुग्राम

राज्य : हरियाणा

संपर्क नंबर : 9813891213

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- कीटों को नियंत्रित करने के लिए प्राकृतिक कृषि उत्पादों जैसे जीवामृत और नीम-बाण जैसे जैव कीटनाशकों का इस्तेमाल किया।
- मृदा में जैविक कार्बन की मात्रा को बढ़ाने के लिए वर्मीकम्पोस्ट को तैयार और प्रयोग किया। खेत के कचरे की खाद बनाने के लिए अपशिष्ट अपघटकों का इस्तेमाल किया।
- कम लागत वाली संरक्षित संरचना का उपयोग करके सब्जी और पपीते की नर्सरी तैयार की।
- पपीते के खेत में सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली को अपनाया।
- अरंडी की पंक्तियों के बीच सब्जियों की अंतर फसल को अपनाया।
- रोगों और कीड़ों को कम करने के लिए ट्राइकोडर्मा हर्जियानम और जीवामृत का उपयोग किया।
- समूह चर्चाओं, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथ-साथ वैज्ञानिक मंचों और प्रदर्शनियों में भागीदारी के माध्यम से सूचना का प्रसार।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती				पारंपरिक खेती			
फसल	अरंड	घिया (पूसा नवीन)	गेहूँ (काला गेहूँ)	सब्जियाँ (ब्रोकली)	अरंड	घिया (पूसा नवीन)	गेहूँ (काला गेहूँ)	सब्जियाँ (ब्रोकली)
क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	1	0.5	0.5	0.5	1	0.5	0.5	0.4
खेती की लागत (रु.)	71500	36750	16800	72000	61894	38700	12250	73500
उत्पादन (कुंटल)	33.5	120	21.6	72	29	110	15.25	58.9
कुल लाभ (रु.)	216500	180000	75800	230400	187418	165000	33357	188480
शुद्ध लाभ (रु.)	145000	143250	59000	158400	125524	126300	21107	114980
लाभ लागत अनुपात	2.02	3.89	3.51	2.2	1.9	3.26	1.7	1.56

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत कम हुई।
- फसलों के विविधीकरण के परिणामस्वरूप अधिक आय प्राप्त हुई।
- समय और श्रम की बचत हुई।

- मृदा स्वास्थ्य में सुधार हुआ जहां मृदा के जैविक कार्बन अंश में 0.35% से 0.70% की वृद्धि हुई।

स्रोत: *कृषि विज्ञान केंद्र (आईएआरआई) शिकोहपुर,गुरुग्राम,हरियाणा*

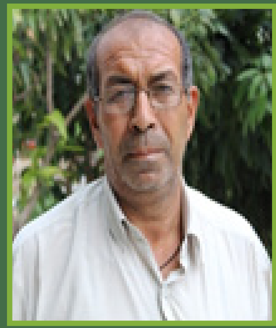

श्री जगत राम

गांव : नसीरपुर
मंडल : करनाल
जिला : करनाल
राज्य : हरियाणा
संपर्क नं. : 07027385200
ईमेल : □□□□□□□1994.□□74@□□□□□□.□□□
शिक्षा : 8वीं

अपनाई गई कृषि पद्धतियां:

- प्राकृतिक खेती और जैविक उत्पादों के प्रयोग के लिए एक प्रगतिशील किसान के रूप में माने जाते हैं।
- लगभग 125 फलों, सब्जियों और अन्य फसलों की खेती की।
- बीजामृत, जीवामृत और नीम तेल जैसे कई प्राकृतिक कृषि सामग्री तैयार की और उनका प्रयोग किया।
- नमी को बनाए रखने और खरपतवार के संक्रमण को रोकने के लिए फसलों के पलवार के लिए, धान एवं भूसे के अवशेषों का प्रयोग किया।
- पिछली फसलों के फसल अवशेषों को विघटित कर जैविक खाद तैयार किया।
- ड्रिप सिंचाई पद्धति को अपनाया।
- विनाशकारी कीट और रोग प्रबंधन के लिए तंबाकू जैसे ट्रैप फसल का प्रयोग किया।
- फलों और सब्जियों की फसलों का देसी बीज बैंक विकसित किया।
- प्रत्येक रविवार को जैविक खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।
- जैविक उत्पादों के विपणन के लिए "भारतीय भागीदारी गारंटी प्रणाली" और नाबार्ड से जुड़े।
- विपणन के लिए आईसीटी उपकरणों का प्रयोग किया (व्हाट्सएप ग्रुप और अन्य सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म)।
- जागरूकता पैदा करने के लिए मेलों, प्रदर्शनियों और मंचों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	मिश्रित फल एवं सब्जियां	
खेती की लागत (रु.)	96000	136000
उत्पादन (कुंटल)	76	80
कुल लाभ (रु.)	240000	164000
शुद्ध लाभ (रु.)	144000	28000
लाभ लागतअनुपात	1.50	0.20

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत कम हुई।
- फल और सब्जियों की अधिक उपज हुई।
- मिट्टी की उर्वरता में सुधार हुआ।
- उत्पादों की मांग में वृद्धि हुई।
- जैविक उत्पादों के विपणन के लिए करनाल शहर में अपना स्टोर (रघुकुल नेचुरल्स) स्थापित किया।
- लगभग 10,000 किसानों को प्राकृतिक खेती करने का प्रशिक्षण दिया।

स्रोतः- *कृषि विज्ञान केन्द्र, आईसीएआर – एनडीआरआई, करनाल, हरियाणा-132001*

श्री फूल कुमार

गाँव : भैणीमातो
मंडल : मेहम
जिला : रोहतक
राज्य : हरियाणा
संपर्क नंबर : 9468245297
शिक्षा : मैट्रिक (10 वीं कक्षा)
ईमेल : phoolmato@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- प्राकृतिक खेती और प्राकृतिक तैयारी में परामर्श दिया।
- रोहतक जिले में प्राकृतिक खेती के लिए किसानों के एक समूह की स्थापना की।
- अनाजों और सब्जियों का बीज बैंक विकसित किया।
- पांच स्तरीय खेती प्रणाली को अपनाया: नींबू, केला, सहजन, अनार और सेब।
- हरियाणा गाय की नस्ल की दो गायों को पाला और बायोगैस संयंत्र की स्थापना की।
- बायो-पलवार का अभ्यास किया।
- स्प्रिंकलर सिंचाई के साथ सोलरवाटरपंप को स्थापित किया।
- नियमित रूप से किसान गोष्ठी और फार्म विजिट का आयोजन किया।
- केवीके, रोहतक और सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती (एसपीएनएफ) समूह से जुड़ाव किया।
- जैविक उत्पादों के विपणन के लिए आईसीटी उपकरणों (व्हाट्सएप ग्रुप) का उपयोग किया।
- कृषि मेलों और प्रदर्शनियों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1.25 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1.25 हेक्टेयर)
फसल	नींबू, केला , सहजन ,अनार , सेब	सब्जियों की फसलों जैसे प्याज ,हल्दी,खीरा एवं कंद वाली फसलें
खेती की लागत (रु.)	350000	85000
उत्पादन (कुंतल)	48	38
कुल लाभ (रु.)	750000	190000
शुद्ध लाभ (रु.)	400000	105000
लाभ लागतअनुपात	1.14*	1.2

*प्राकृतिक खेती के अंतर्गत लाभ लागत अनुपात कम आया है क्योंकि बाग में स्थापित करने की प्रारंभिक लागत अधिक होती है और कुछ फलों के पौधों में फल इस वर्ष (2021) में लगेंगे।

लाभ और उपलब्धियां

- प्राकृतिक/जैविक खेती के माध्यम से आय में वृद्धि।हर साल लगभग 250 किसानों को प्रशिक्षण और विभिन्न फसलों के बीज उपलब्ध कराकर लाभ पहुंचाया।
- प्रगतिशील किसान होने के नाते 18-19 सितंबर, 2017 को कृषि मेलों (रबी) के दौरान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (सीसीएसएचएयू), हिसार से स्मृति चिन्ह प्राप्त किया।
- 15 -17 फरवरी को गन्नौर, सोनीपत, हरियाणा में आयोजित चौथे कृषि नेतृत्व शिखर सम्मेलन-2019 में भाग लेने के लिए कृषि एवं किसान कल्याण विभाग,हरियाणा सरकार से स्मृति चिन्ह प्राप्त किया ।
- 9 जनवरी, 2020 को ग्राम बोहर, रोहतक, हरियाणा में सर छोटू राम (किसान नेता) की 75वीं पुण्यतिथि के दौरान चौधरी छोटू राम गौरव पुरस्कार प्राप्त किया।

***स्रोत** : कृषि विज्ञान केंद्र,रोहतक-124001*

श्री राज कुमार आर्य

गाँव : महरा

खंड : लाडवा

जिला : कुरुक्षेत्र

राज्य : हरियाणा

संपर्क नंबर : 9416570414,9416914051

शिक्षा : बीकॉम

ईमेल : rajkumarbangarh99@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- पिछले 12 वर्षों से प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- प्राकृतिक खेती के तहत गेहूँ, धान, गन्ना, हरा चना, उड़द, बाजरा और सब्जियों की खेती की।
- फसल इंजीनियरिंग (फसल की आवश्यकता के अनुसार पहियों/ब्लेड को बदलना) और सी-3 (धान और गेहूं) और सी-4 (मकई, चारा और गन्ना) पौधों के अभिविन्यास के माध्यम से प्राकृतिक खेती में अग्रणी।
- प्राकृतिक खेती से इष्टतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए दोनों प्रकार के पौधों का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग किया जाता है। इसने अंतर-संस्कृति संचालन को आसान, सस्ता और मिट्टी की स्थिति को बेहतर बना दिया।
- फसल के स्वास्थ्य और पौधों की सुरक्षा के लिए देसी गाय और पौध आधारित उत्पादों जैसे बीजामृत, जीवामृत, नीमास्त्र और ब्रह्मास्त्र का उपयोग किया।
- ढैंचा/सेसबनिया, सनहेम्प, लोबिया, हरे चने, उड़द और सूरजमुखी की हरी खाद तैयार की।
- फसल के अवशेषों की पलवार, क्यारी में बुवाई और मेड़ पर बुवाई जैसी जल संरक्षण प्रौद्योगिकियों का अभ्यास किया।
- पलवार के माध्यम से खरपतवार प्रबंधन किया। इसके अलावा, खरपतवार प्रबंधन की मशीनरी और औजारों में कुछ बदलाव जैसे पहियों को बदलना, 12”चौड़ाई की कुदाल आदि पर काम करने के लिए समायोजन किया। इसने श्रम की आवश्यकता को 80% तक कम कर दिया जिसके परिणामस्वरूप खेती की लागत में कमी आई।
- फसल अवशेष का प्रबंधन का अभ्यास किया।
- गेहूँ, चावल, सब्जियां, गुड़, खांड, शक्कर आदि जैसे जैविक उत्पादों को प्रत्यक्ष विपणन प्रणाली से बेचा ।
- सूचना के प्रसार के लिए व्हाट्सएप और यूट्यूब जैसे डिजिटल मीडिया का उपयोग किया।
- केविके कुरुक्षेत्र और कृषि और किसान कल्याण विभाग, कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित किसान मेलों, किसान क्लब की बैठकों में भाग लेकर जागरूकता पैदा की।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती(1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती(1हेक्टेयर)
फसल	गन्ना (सी जे 85)	गन्ना (सी ओ 238)
खेती की लागत (रु.)	150200	155000
उत्पादन (कुंतल)	825	758
कुल लाभ (रु.)	622900	272950
शुद्ध लाभ (रु.)	472700	117950
लाभ लागतअनुपात	3.1	0.76

नोट: *भूमि के किराये के मूल्य को छोड़कर परिवर्तनीय लागत पर प्रतिलाभ*

लाभ और उपलब्धियां

- बाहरी कृषि उत्पादों पर निर्भरता कम की।
- पारंपरिक खेती की तुलना में अधिक उपज प्राप्त की।
- ग्राहकों को कीटनाशक मुक्त उत्पाद उपलब्ध कराकर उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य में सुधार किया।
- प्राकृतिक संसाधनों का कुशल और किफायती उपयोग सुनिश्चित किया।
- माना जाता है कि प्राकृतिक खेती जलवायु अनुकूल कृषि की ओर एक कदम है।
- अन्य राज्यों के किसानों को प्राकृतिक खेती में मार्गदर्शन प्रदान किया।
- प्राकृतिक खेती में महत्वपूर्ण योगदान के लिए आईसीएआर भाकृअनुप-आईआईडब्ल्यूबीआर, करनाल द्वारा पुरस्कृत।
- 03 फरवरी, 2017 को राज्य स्तरीय स्वर्ण जयंती किसान सम्मेलन के दौरान कृषि एवं किसान कल्याण विभाग और बागवानी विभाग, हरियाणा द्वारा जैविक खेती में उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया।
- किसान मेला-2018 के दौरान प्राकृतिक खेती में महत्वपूर्ण योगदान के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (सीसीएसएचएयू), हिसार से प्रशंसा प्रमाण पत्र प्राप्त किया।
- 24-26 मार्च 2018 को आयोजित तीसरे कृषि नेतृत्व शिखर सम्मेलन-2018 के दौरान 'जैविक खेती में उपलब्धि का प्रमाण पत्र' से सम्मानित किया गया।
- 28-29 नवंबर 2019 के दौरान (राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान) एआईटीटीआरन, चंडीगढ़ द्वारा प्राकृतिक खेती में पहचान प्रमाण पत्र से सम्मानित।

स्रोत:कृषि *विज्ञान केंद्र, कुरुक्षेत्र, हरियाणा*

श्री सतीश कुमार

ग्राम : मनकरोला

जिला : गुरुग्राम

राज्य : हरियाणा

संपर्क नंबर : 9873449296

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- प्राकृतिक कृषि आदानों जैसे जीवामृत और जैव कीटनाशकों जैसे नीम-बाण का उपयोग कीटों को नियंत्रित करने के लिए किया।
- मृदा में जैविक मात्रा को बढ़ाने के लिए वर्मीकम्पोस्ट तैयार और प्रयोग किया। वर्मीवाश को ड्रिप सिंचाई के द्वारा उपयोग किया। सिंचाई के माध्यम से और स्वस्थानै हरी खाद का भी उपयोग किया।
- वर्षा जल संचयन (25 लाख घन लीटर क्षमता) किया और सिंचाई के लिए पानी का समुचित तरीके से उपयोग किया।
- एकीकृत कृषि प्रणाली (आईएफएस) अपनाया जिसमें उच्च मूल्य वाली सब्जियों के लिए पॉली हाउस, उच्च तकनीक वाली नर्सरियों, वर्मी-खाद इकाइयों, डेयरी (6 भैंस और 4 गाय), बायोगैस, किन्नू बगीचों में सब्जियों की अंतरफसलों और सब्जियों के लिए नालियां भी शामिल है।
- कोको पीट, वर्मीक्यूलाइट और पेर्लाइट के मिश्रण का उपयोग करने के बजाय, स्व-स्वामित्व वाली इकाई में 30% कोको पीट और 70% वर्मी-कम्पोस्ट के मिश्रण का उपयोग करके लागत को 90% तक कम किया।
- मृदारहित माध्यम (कोको-पीट, वर्मीक्यूलाइट और पेर्लाइट) में सब्जियों की पौध का उत्पादन किया।
- समन्वय में आसानी के लिए आईसीटी तंत्र (व्हाट्सएप और फेसबुक) का उपयोग किया।
- वैज्ञानिक मंचों और प्रदर्शनियों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

i. प्राकृतिक खेती

फसल	क्षेत्रफल (हेक्टेयर	उत्पादन (कुंटल)	खेती की लागत (रु.)	कुल लाभ (रु.)	शुद्ध लाभ (रु.)	लाभ लागत अनुपात
सरसों (आरएच-0749)	1.0	28.75	45750	143750	98000	3.14
गेहूँ (एचडी-2967)	1.0	56.12	61250	152609	91359	2.49
तरबूज (शुगरबेबी)	0.50	102.5	30000	225000	195000	7.50
घिया (पूसा नवीन)	0.16	32.65	15000	67000	52000	4.46

ii. पारम्परिक खेती

फसल	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	उत्पादन (कुंटल)	खेती की लागत (रु.)	कुल लाभ (रु.)	शुद्ध लाभ (रु.)	लाभ लागत अनुपात
सरसों (आरएच-0749)	1.0	22.0	38500	110000	71500	2.85
गेहूँ (एचडी-2967)	0.80	46.0	53000	124200	71200	2.34
तरबूज (शुगरबेबी)	0.40	88.0	32500	193170	160670	6.0
घिया (पूसा नवीन)	0.50	105.0	37500	157500	120000	4.2

लाभ और उपलब्धियां

- फसलों का विविधीकरण हुआ।
- खेती की लागत कम हुई।
- विभिन्न घटकों से उत्पादन और आय में वृद्धि हुई।
- समय और श्रम की बचत।
- बेहतर मृदा स्वास्थ्य।
- आईएफएस खेती मॉडल को अपनाकर 2000 से अधिक किसानों को लाभ पहुंचाया।
- 2018-19 में कृषि रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- आईएआरआई इनोवेटिव किसान पुरस्कार-2017 से सम्मानित किया गया।

स्रोत: *कृषि विज्ञान केंद्र (आईएआरआई) शिकोहपुर,गुरुग्राम,हरियाणा*

श्री शैलेंदर कुमार

गांव : उपलाना

मंडल : असंध

जिला : करनाल

राज्य : हरियाणा

संपर्क नं. : 09896003809

शिक्षा : बीएससी

ईमेल : kingsorganic9999@gmail.com

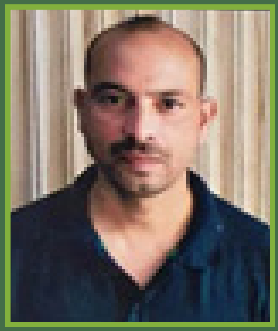

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- काबुली चना(एचसी-5) की उन्नत किस्म की खेती की।
- बीजारोपण के लिए बहुफसल बोने की मशीन का इस्तेमाल किया।
- धान की फसल अवशेष प्रबंधन में कृषि यंत्रीकरण को अपनाया।
- प्राकृतिक खाद (गाय का गोबर, गोमूत्र) और जैव कीटनाशकों का प्रयोग किया।
- मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाने के लिए हरी खाद (ढैंचा और मूंग) का प्रयोग किया।
- बीजामृत, जीवामृत, अग्निस्त्र और नीम तेल जैसे प्राकृतिक सामग्री को बनाया और उसका उपयोग किया।
- काबुली चना तथा अन्य ऐसे उत्पादों का दाल के रूप में संसाधित करके विपणन कर काबुली चना का मूल्य संवर्धन किया।
- बहुत से किसानों को प्रशिक्षित किया और उन्हें प्राकृतिक खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया।
- प्राकृतिक उत्पादों के विपणन के लिए "भारतीय भागीदारी गारंटी प्रणाली" (पीजीएस भारत) से जुड़े।
- विपणन के लिए आईसीटी उपकरणों का प्रयोग किया (व्हाट्सएप ग्रुप और अन्य सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म)।
- जागरुकता पैदा करने के लिए मेलों, प्रदर्शनियों और मंचों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	काबुली चना	काबुली चना
खेती की लागत (रु.)	10332	22540
उत्पादन (कुंटल)	15.50	13
कुल लाभ(रु.)	79050	66300
शुद्ध लाभ (रु.)	68718	43760
लाभ : लागत अनुपात	6.65	1.94

लाभ और उपलब्धियां

- आदान लागत में कमी हुई जिसके कारण खेती की लागत बड़े पैमाने पर कम हो गई।
- समय और श्रम की बचत हुई।
- उपज और उत्पादों की मांग में वृद्धि हुई।
- मिट्टी की उर्वरता में सुधार हुआ।

स्रोत: *कृषि विज्ञान केन्द्र, आईसीएआर-एनडीआरआई, करनाल, हरियाणा-132001*

हिमाचल प्रदेश

श्री अजय रत्तन

गांव : नीयून

ब्लॉक : घुमारवीन

जिला : बिलासपुर

राज्य : हिमाचल प्रदेश

सम्पर्कनं. : 9816739041

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- लागत प्रभावी, जलवायु तन्यक प्राकृतिक कृषि को अपनाया ।
- पलवार व् अंतर-फसल का अनुसरण किया।
- स्थानीय संसाधनों के द्वारा प्राकृतिक आदान जेसे जिवाम्रत, घंजीवामृत, द्सपारनी अर्क, सप्तधान्यांकुर अर्क आदि तैयार कर उपयोग किये|
- नाइट्रोजन निर्धारण के लिए फलोद्दयान पगडंडियों में फलीदार / दलहनी फसलों को उगाया।
- गांव और पंचायत स्तर पर प्राकृतिक खेती पर कार्यशाला का आयोजन किया।
- कुशल समन्वय के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किया|
- प्राकृतिक खेती के संबंध में जागरूकता लाने के लिए प्रदर्शनियों और अन्य कार्यक्रमों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (2 हेक्टेयर)			पारंपरिक खेती (2 हेक्टेयर)		
	रबी	खरीफ	वार्षिक	रबी	खरीफ	वार्षिक
फसल	मटर,गेहूं, चना, लहसुन, प्याज	मक्का, गन्ना, अन्य सब्जियां एवं सूरजमुखी	रबी + खरीफ	गेहूं, चना,प्याज, लहसुन	मक्का मटर, शिमला मिर्च	रबी + खरीफ
उत्पादन (कुंटल)	95	125	220	55	60	115
खेती की लागत (विपणन लागत सहित) (रु.)	23000	19000	42000	45000	40000	85000
कुल लाभ (रु.)	171000	275000	446000	99000	108000	207000
शुद्ध लाभ (रु.)	148000	256000	404000	54000	68000	122000
लाभ लागत अनुपात	6.4	13.4	9.6	1.2	1.7	1.4

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी
- पैदावार में वृद्धि
- बेहतर आय

- प्राकृतिक खेती और सामग्री तैयार करने के बारे में परामर्श दिया।
- प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए 1500 किसानों को प्रशिक्षित किया और 250 किसानो को मार्गदर्शन किया।
- हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल द्वारा "कृषि अनन्या" परुस्कार प्रदान किया|
- सीएसकेएचपीकेवी पालमपुर द्वारा श्रेष्ठ किसान का पुरूस्कार प्राप्त हुआ|

प्राकृतिक खेती कुशहाल किसान योजना, राज्य परियोजना कार्यान्वयन यूनिट कृषि भवन, शिमला-05

श्री अनुभव बंसल

गांव : दत्तोवाल

ब्लॉक : नालागढ़

जिला : सोलन

राज्य : हिमाचल प्रदेश

संपर्क संख्या : 9418093007

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- लागत प्रभावी, जलवायु अनुरूप प्राकृतिक खेती का मॉडल लागू किया।
- मल्चिंग और अंतर फसल को अपनाया।
- स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके विभिन्न काढ़ा (जीवामृत, घनजीवामृत, दशपर्णीअर्क, सप्तधांनकुर अर्क आदि) बनाया गया।
- बाग में नाइट्रोजन स्थिरीकरण के लिए फलिदार / दलहनी फसलें उगाई जाती हैं।
- गांव और पंचायत स्तर पर प्राकृतिक खेती पर कार्यशालाएं आयोजित की।
- बेहतर समन्वय (व्हाट्सएप समूह) के लिए आईसीटी तंत्र का इस्तेमाल किया।
- जागरूकता पैदा करने के लिए प्रदर्शनियों और सेमिनारों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1.2 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1.2 हेक्टेयर)
फसलें	हल्दी, दालें, गेहूं, टमाटर, फ्रेंच बीन और लहसुन	हल्दी
खेती की लागत (विपणन लागत सहित) (रु.)	36000	37000
उत्पादन (कुंटल)	44.2	42.5
कुल लाभ (रु.)	360000	306000
शुद्ध लाभ (रु.)	324000	269000
लाभ लागतअनुपात	10	8.27

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की कम लागत।
- उपज और आय में वृद्धि हुई।
- "प्योराफार्म्स" नाम से व्यक्तिगत ब्रांड बनाया।
- प्राकृतिक खेती, आदान तैयार करने और प्राकृतिक उत्पाद के विपणन में सलाह दी ।

स्रोत: प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान, राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई कृषि भवन, शिमला-05

श्री अर्जुन सिंह

ग्राम : पराडा

ब्लॉक : नाहन

जिला : सिरमौर

सम्पर्कनं. : 98052-74263

शैक्षिक योग्यता : एम.ए. (समाजशास्त्र), आयुर्वेद फार्मेसी में डिप्लोमा

अपनाई गई कृषि पद्धतियां:

- 2018 में प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- 0.96 हेक्टेयर क्षेत्रफल में पालक, मूली और अन्य मौसमी सब्जियों के साथ लहसुन की खेती की।
- गांव में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने और घनजीवामृत, जीवामृत, सप्तधन्यांकुर अर्क और अन्य विभिन्न मिश्रणों जैसे आवश्यक आदानों की आपूर्ति हेतु सरकार की सहायता से संसाधन भंडार की स्थापना की।
- एटीएमए के पदाधिकारियों के सहयोग से अन्य किसानों के लिए प्राकृतिक खेती में उपयोग की जाने वाली आदान की तैयारियों पर प्रदर्शन आयोजित किए।
- व्हाट्सएप और फेसबुक के माध्यम से प्राकृतिक खेती पर जागरूकता पैदा की।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदण्ड	प्राकृतिक खेती (0.96 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.96 हेक्टेयर)
फसल	लहसुन (पालक और मूली)	लहसुन
खेती की लागत (विपणन लागत सहित) (रु.)	70000	121000
उत्पादन (कुंटल)	89	85
कुल लाभ (रु.)	445000	425000
शुद्ध लाभ (रु.)	375000	304000
लाभ लागत अनुपात	5.4	2.5

लाभ और उपलब्धियां

- विभिन्न मिश्रणों के छिड़काव से कीटों और बीमारियों के प्रकोप में कमी।
- कई फसलों की खेती के माध्यम से खेत में लाभकारी कीड़ों की संख्या में वृद्धि।
- मिट्टी में केंचुओं की संख्या में वृद्धि देखी गई।
- मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि।
- फसलों को सूखे की स्थिति के लिए प्रतिरोधी बनाया।
- खेती की लागत में कमी।

- रासायन मुक्त उत्पाद की प्राप्ति।
- संबद्ध गतिविधियों के साथ-साथ प्राकृतिक खेती से आय में वृद्धि।
- 200 से अधिक किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।
- पंचायत के अन्य किसानों के साथ "आपका किसान परिवार" नामक एफपीओ बनाया।
- कृषि विभाग से सम्मान पुरस्कार और 2021 में जिला प्रशासन की ओर से प्रशंसा प्रमाण पत्र प्राप्त किया।
- डीएफएसी का सदस्य मनोनीत किया गया।

***स्रोत:** राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई, पीकेवाई, हिमाचल प्रदेश*

श्री दीवान चंद

गांव : नारेश

ब्लॉक : कुल्लू

जिला : कुल्लू

राज्य : हिमाचल प्रदेश

संपर्क नं. : 889497160

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- खेती के प्राकृतिक पद्धति अपनाई एवं जीवामृत, घनजीवामृत, दशपर्णी अर्क, सप्त धान्यांकुर अर्क आदि जैसे विभिन्न आदान तैयार एवं उपयोग किए गए।
- पलवार और अन्तर-फसल की पद्धति अपनाई।
- गांव और पंचायत स्तर पर प्राकृतिक खेती पर कार्यशालाओं का आयोजन किया ।
- कुशल समन्वय (व्हाट्सएप समूह) के लिए आईसीटी तंत्र का उपयोग किया गया।
- जागरूकता पैदा करने के लिए प्रदर्शनियों और कार्यक्रमों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.16 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.16 हेक्टेयर)
फसल	सेब, मटर, टमाटर, राजमा, मक्का, ककड़ी, अनार	सेब, मटर, अनार, टमाटर
खेती की लागत (विपणन लागत सहित) (रु.)	86500	202500
उत्पादन (कुंटल)	55	50
शुद्ध लाभ (रु.)	825000	750000
कुल लाभ (रु.)	738500	547500
लाभ लागत अनुपात	8.5	2.7

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत कम।
- अधिक पैदावार।
- अनार फल का बढ़ा हुआ शेल्फ जीवन।
- बेहतर आय।

स्रोत: *प्राकृतिक खेती कुशहाल किसान योजना, राज्य परियोजना कार्यान्वयन यूनिट कृषि भवन,शिमला-05*

श्री गगन पाल

गांव : सायरडोभा
ब्लॉक : बिलासपुर सदर
जिला : बिलासपुर
राज्य : हिमाचल प्रदेश
संपर्क नं : 8219733214

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- लागत प्रभावी और जलवायु तन्यक प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- पलवार और अंतर-फसल का अनुसरण किया।
- स्थानीय संसाधन का उपयोग करके बनाई गई जीवामृत, घनजीवामृत, दशपर्णी अर्क, सप्तधान्यांकुर अर्क जैसी विभिन्न सामग्रियों को तैयार और उनका उपयोग किया।
- गांव और पंचायत स्तर पर प्राकृतिक खेती पर कार्यशालाओं का आयोजन किया ।
- प्रचार प्रसार हेतु सोशल मिडिया का इस्तेमाल किया गया|
- जागरूकता पैदा करने के लिए प्रदर्शनियों और कार्यक्रमों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.64 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.64 हेक्टेयर)
फसल	मक्का, मूंग, उड़द, रतालू, टमाटर, शिमला मिर्च, अदरक, गेहूं, सोयाबीन, तोरई, लौकी, लहसुन	मक्का, गेहूं, अदरक,शिमला मिर्च, उड़द
खेती की लागत (विपणन लागत सहित) (रु.)	54000	72000
उत्पादन (कुंटल)	82	77
कुल लाभ (रु.)	205000	192500
शुद्ध लाभ (रु.)	151000	120500
लाभ लागत अनुपात	2.8	1.67

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत कम।
- अधिक पैदावार।
- सब्जियों की शेल्फलाइफ में वृद्धि।
- अधिक आय।
- स्वास्थ्य में सुधार, रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों से मुक्ति।

स्रोत: प्राकृतिक खेती कुशहाल किसान योजना, राज्य परियोजना कार्यान्वयन यूनिट कृषि भवन, शिमला-05

श्री कालजांग लाड्डे

गांव : चीचम

ब्लॉक : काज़ा

जिला : लाहौल और स्पीती

राज्य : हिमाचल प्रदेश

सम्पर्क नं. : 9459758656

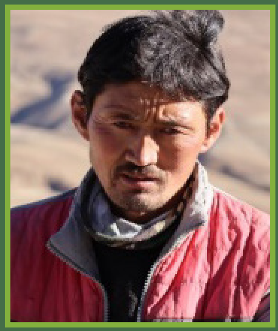

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- लागत प्रभावी, जलवायु तन्यक प्राकृतिक खेती को कार्यान्वित किया।
- आय बढ़ाने के लिए पलवार अंतर-फसल का अनुसरण किया।
- स्थानीय संसाधनों का प्रयोग करते हुए विभिन्न आदानो जैसे जीवामृत, घनजीवामृत, दशपर्णी अर्क, सप्तधान्यांकुर अर्क इत्यादी का इस्तेमाल किया |
- नाइट्रोजन निर्धारण के लिए फलोद्दयान पगडंडियों में दलहनी फसलों को उगाया।
- गांव और पंचायत स्तर पर प्राकृतिक खेती पर कार्यशाला का आयोजन किया।
- आईसीटी तंत्र (व्हाटसएप ग्रुप) के माध्यम से साथ मिलकर काम किया।
- जागरूकता पैदा करने के लिए प्रदर्शनियों और अन्य कार्यक्रमों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1.2 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1.2 हेक्टेयर)
फसल	आलू,जौ, उड़द, फूलगोभी, मूली, टमाटर	आलू,जौ, उड़द, फूलगोभी, मूली, टमाटर
खेती की लागत (विपणन लागत सहित) (रु.)	40000	52000
उत्पादन (कुंतल)	120	107
कुल लाभ (रु.)	300000	267000
शुद्ध लाभ (रु.)	260000	215500
लाभ लागत अनुपात	6.50	4.14

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत मे कमी
- उच्च पैदावार
- सब्जियों की शेल्फ आयु में वृद्धि
- आय में वृद्धि

स्रोत: *प्राकृतिक खेती कुशहाल किसान योजना, राज्य परियोजना कार्यान्वयन यूनिट कृषि भवन,शिमला-05*

श्री माया राम

गांव : स्यांज
प्रखंड : गोहर
जिला : मंडी
राज्य : हिमाचल प्रदेश
संपर्क संख्या : 9882289848

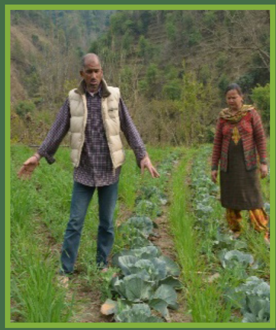

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- प्राकृतिक खेती के तहत लागत प्रभावी, जलवायु अनुकूल प्रथाओं को लागू किया।
- मल्चिंग और मिश्रित फसलों को अपनाया गया।
- जीवामृत, घनजीवामृत, दशपर्णी अर्क और सप्तधान्यांकुर अर्क जैसे प्राकृतिक खेती में प्रयोग होने वाले अवयवों को तैयार और प्रयोग किया गया|
- नाइट्रोजन स्थिरीकरण के लिए बाग में फल वाले पौधों के साथ फलीदार/दलहनी फसलों की बुवाई की गई।
- गांव और पंचायत स्तर पर प्राकृतिक खेती पर कार्यशालाओं का आयोजन किया।
- प्रभावी समन्वय (व्हाट्सएप समूह) के लिए आईसीटी तंत्र लागू किया गया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.56 हेक्टेयर)			पारंपरिक खेती (0.56 हेक्टेयर)		
	रबी	खरीफ	वार्षिक	रबी	खरीफ	वार्षिक
फसलें	मटर,गोभी, सरसों, लहसुन, चना	फ्रेंचबीन्स, मटर, फूलगोभी मक्का, राजमा, अदरक	रबी + खरीफ	मटर, पत्तागोभी, लहसुन	फूलगोभी, फ्रेंचबीन्स, अदरक	रबी + खरीफ
खेती की लागत (विपणन लागत सहित) (रु.)	20000	28000	48000	26250	48125	74375
उत्पादन (कुंतल)	65	70	135	52.5	65.6	118.1
कुल लाभ (रु.)	227500	210000	437500	183750	196875	380625
शुद्ध लाभ (रु.)	207500	182000	389500	157500	148750	306250
लाभ लागत अनुपात	10.37	6.5	8.1	6	3.09	4.11

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत को कम किया।
- जीवामृत और घनजीवामृत के प्रभावी अनुप्रयोग के माध्यम से खाद्यान्न, अनाज और फल की अधिक पैदावार हुई और मृदा-स्वास्थ्य में सुधार हुआ।

- पोषक तत्वों से भरपूर मिट्टी से लाभ में वृद्धि हुई।
- आय में वृद्धि हुई।
- प्राकृतिक खेती पर लगभग 25 किसानों को सलाह दी।

स्रोत: *प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान, राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई कृषि भवन, शिमला-05*

श्री मोती लाल

गांव : मुडग्राम
ब्लॉक : केलांग
जिला : लाहौल और स्पीति
राज्य : हिमाचल प्रदेश
संपर्क संख्या : 9418464234

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- लागत प्रभावी और जलवायु अनुकूल प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- आय बढ़ाने के लिए मल्चिंग और इंटरक्रॉपिंग को अपनाया।
- जीवामृत, घनजीवामृत, दशपर्णी अर्क, सप्तधान्यांकुर अर्क आदि विभिन्न प्राकृतिक आदानों का प्रयोग किया।
- गांव और पंचायत स्तर पर प्राकृतिक खेती पर कार्यशालाओं का आयोजन किया।
- कुशल समन्वय (व्हाट्सएप समूह) के लिए आईसीटी तंत्र का उपयोग किया।
- जागरूकता पैदा करने के लिए प्रदर्शनियों और मंचों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.32हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.32 हेक्टेयर)
फसलें	मटर, आलू, राजमा, फूलगोभी, कुथ	मटर, फूलगोभी, आलू, जौ
खेती की लागत (विपणन लागत सहित) (रु.)	8000	13500
उत्पादन (कुंटल)	42	35
कुल लाभ (रु.)	210000	175000
शुद्ध लाभ (रु.)	202000	161500
लाभ लागतअनुपात	25.25	11.96

लाभ और उपलब्धियां

- मटर, फूलगोभी, गोभी और सेब में होने वाले रोगों में कमी।
- आदान लागत न्यूनतम ।
- उपज में उल्लेखनीय वृद्धि।
- सब्जियों और फलों के शेल्फ जीवन में वृद्धि।
- आय में वृद्धि।

स्रोत: *प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान, राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई कृषि भवन, शिमला-05*

श्री पूरन देव ठाकुर

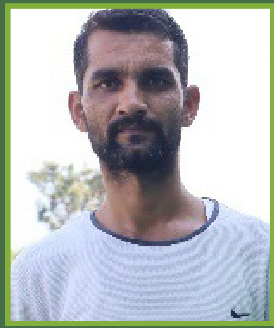

ग्राम	:	सोडा ध्यादि
प्रखंड	:	पच्छाद
जिला	:	सिरमौर
संपर्क नंबर	:	98165-83756
अर्हता	:	10+2

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 2018 से प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- 8 हेक्टेयर भूमि में टमाटर, बीन, भिंडी, अरबी और खीरा की खेती की।
- गांव में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने और अन्य किसानों को घनजीवामृत, जीवामृत, सप्तधान्यांकुर अर्क तथा कई तरह के मिश्रण आदानों की आपूर्ति करने के लिए सरकार की सहायता से एक संसाधन भंडार की स्थापना की।
- आत्मा पदाधिकारियों के सहयोग से अन्य किसानों के लिए प्राकृतिक खेती में प्रयुक्त आदान तैयार करने संबंधी प्रदर्शन किए।
- वाट्सएप और फेसबुक के माध्यम से प्राकृतिक खेती संबंधी जागरूकता पैदा की।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.8 हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (0.8 हेक्टेयर)
फसल	टमाटर, बीन, भिंडी, अरबी, खीरा	टमाटर
खेती की लागत (रु.)	74000	111000
उत्पादन (कुंतल)	265	258
कुल लाभ (रु.)	477000	464400
शुद्ध लाभ (रु.)	403000	353400
लाभ लागत अनुपात	5.4	3.2

लाभ और उपलब्धियां

- कई तरह के मिश्रण का छिड़काव करने से कीटों और बीमारियों का प्रकोप कम हुआ ।
- कई फसलों की खेती करने से खेत में लाभकारी कीड़ों की संख्या में वृद्धि हुई ।
- मिट्टी की उर्वरता और मिट्टी में केंचुए की वृद्धि हुई।
- फसलों को सूखे की स्थिति के लिए प्रतिरोधी बनाया।
- खेती की लागत कम हुई।
- परिणामस्वरूप रासायनिक मुक्त उत्पाद प्राप्त हुआ।

- संबद्ध गतिविधियों के साथ-साथ खेती से आय में वृद्धि हुई।
- युवा किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया|

स्रोत: राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई, पीके3वाई एचपी

श्री रूप चंद राही

गांव : धवारा

ब्लॉक : सेराज

जिला : मंडी

राज्य : हिमाचल प्रदेश

संपर्क संख्या : 8219235492

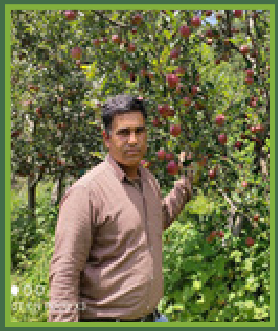

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- कृषि और बागवानी के लिए एक सफल प्राकृतिक खेती मॉडल विकसित किया।
- मल्चिंग और मिश्रित खेती को अपनाया।
- स्थानीय संसाधन का उपयोग करके विभिन्न द्रव्यों जैसे जीवामृत, घनजीवामृत, दशपर्णीअर्क, सप्तधान्यांकुर अर्क आदि बनाया गया।
- नाइट्रोजन स्थिरीकरण के लिए बाग में फलों के साथ-साथ फलीदार/दलहनी फसलें उगाई हैं।
- गांव और पंचायत स्तर पर प्राकृतिक खेती पर कार्यशालाओं का आयोजन किया।
- प्रभावी समन्वय (व्हाट्सएप समूह) के लिए आईसीटी का उपयोग किया।
- प्राकृतिक खेती के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए प्रदर्शनियों और संगोष्ठी में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.96 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.96 हेक्टेयर)
फसलें	सेब, अनाज, सब्जी	सेब, अनाज, सब्जी
खेती की लागत (विपणन लागत सहित) (रु.)	285000	345000
उत्पादन (कुंटल)	180	150
कुल लाभ (रु.)	1080000	900000
शुद्ध लाभ (रु.)	795000	555000
लाभ लागत अनुपात	2.79	1.6

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत कम हुई।
- रासायनिक खेती से प्राकृतिक खेती में बदलाव करके सेब का उत्पादन 450 बक्से से (एक बॉक्स में 20 किलोग्राम) से बढ़ाकर 650 कर दिया।
- फलों की गुणवत्ता में सुधार हुआ।
- राजस्व और आय में वृद्धि हुई।

***स्रोत:** प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान, राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई कृषि भवन, शिमला-05*

श्री शैलेंद्र शर्मा

गांव : दयाराग बुखार
ब्लॉक : सोलन
जिला : सोलन
राज्य : हिमाचल प्रदेश
संपर्क संख्या : 7018502988

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- सब्जी उत्पादन के लिए एक सफल प्राकृतिक खेती का मॉडल विकसित किया।
- मल्चिंग और मिश्रित खेती को अपनाया।
- जीवामृत, घनजीवामृत, दशपर्णीअर्क, सप्तधान्यांकुर अर्क आदि जैसे विभिन्न प्राकृतिक खेती के आदानों को तैयार और उपयोग किया।
- नाइट्रोजन स्थिरीकरण के लिए बाग में फलों के साथ-साथ फलीदार/ दलहनी फसलों की खेती की।
- गांव और पंचायत स्तर पर प्राकृतिक खेती पर कार्यशालाओं का आयोजन किया।
- प्रभावी समन्वय (व्हाट्सएप समूह) के लिए आईसीटी तंत्र का उपयोग किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.40 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसलें	शिमला मिर्च, टमाटर, कोंछड़ा, राजमा	शिमला मिर्च, टमाटर
खेती की लागत (विपणन लागत सहित) (रु.)	20700	55000
उत्पादन (कुंटल)	115	105
कुल लाभ (रु.)	402500	367500
शुद्ध लाभ (रु.)	381800	312500
लाभ लागतअनुपात	18.44	5.68

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की कम लागत हुई।
- अधिक पैदावार हुई।
- सब्जियों की शेल्फलाइफ में वृद्धि हुई।
- बढ़ी हुई आय।
- रासायनिक कीटनाशकों से बचाव करके बेहतर स्वास्थ्य प्राप्त हुआ।

स्रोत: *प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान, राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई कृषि भवन, शिमला-05*

श्री जे सी शर्मा

गांव : कोटी

ब्लॉक : थओग

जिला : शिमला

राज्य : हिमाचल प्रदेश

संपर्क नं. : 701850298

अपनाई गई पद्धतियां

- सेब के उच्च घनत्व वाले वृक्षारोपण के लिए प्राकृतिक खेती को लागू किया गया।
- पलवार और अन्तर-फसल का अनुसरण किया।
- जीवामृत, घनजीवामृत, दशपर्णी अर्क, सप्तधान्यांकुर अर्क आदि जैसे विभिन्न आदान तैयार किए और उपयोग किए गए।
- बाग में फंगल इंफेक्शन की रोकथाम के लिए खट्टी लस्सी (खट्टा छाछ) और जीवामृत का इस्तेमाल किया।
- नाइट्रोजन निर्धारण के लिए फलोद्यान पगडंडियों में दलहनी फसलें उगाई जाती हैं।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.48 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.48 हेक्टेयर)
फसलें	सेब, मटर	सेब
खेती की लागत (विपणन लागत सहित) (रु.)	60500	102000
उत्पादन (कुंटल)	62	4
कुल लाभ (रु.)	679800	547200
शुद्ध लाभ (रु.)	619300	445200
लाभ लागत अनुपात	10.23	5.36

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत कम।
- अधिक पैदावार।
- सेब के शेल्फ जीवन और गुणवत्ता में वृद्धि हुई है।
- बेहतर आय।
- विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित हिमाचल प्रदेश बागवानी विकास परियोजना (एचबीएचडीपी) के प्रमुख रणनीतिकार के रूप में नामित।
- हिमाचल प्रदेश के बागवानी सचिव के रूप में कार्य किया, जहां उन्होंने इस क्षेत्र में नए हस्तक्षेप शुरू किए।

स्रोत: सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती, राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई कृषि भवन, शिमला-05

श्री सुभाष सदरू

गांव : शक्तिनगर
ब्लॉक : रोहड़ू
जिला : शिमला
राज्य : हिमाचल प्रदेश
संपर्क संख्या : 7018194064

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- प्राकृतिक खेती की पहल के तहत लागत प्रभावी, जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीली प्रथाओं को लागू किया और फल उत्पादन के लिए एक सफल प्राकृतिक खेती मॉडल विकसित किया ।
- आय बढ़ाने के लिए मल्चिंग और मिश्रित खेती की।
- स्थानीय संसाधनों से विभिन्न द्रव्योंको (जीवामृत, घनजीवामृत, दशपर्णीअर्क, सप्तधान्यांकुर अर्क आदि) बनाया और प्रयोग किया।
- नाइट्रोजन स्थिरीकरण के लिए बाग के बीच में फलीदार / दलहनी फसलों की बुवाई की।
- गांव और पंचायत स्तर पर प्राकृतिक खेती पर कार्यशालाओं का आयोजन किया ।
- प्रभावी प्रचार प्रसार के लिए आईसीटी तंत्र के माध्यम से समन्वय कार्य किया।
- प्राकृतिक खेती से संबंधित प्रदर्शनियों और अन्य कार्यक्रमों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.64 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.64 हेक्टेयर)
फसलें	सेब, अनाज और सब्जियां	सेब, अनाज और सब्जियां
उत्पादन (कुंटल)	144	110
खेती की लागत (विपणन लागत सहित) (रु.)	2,16,500	3,00,000
कुल लाभ (रु.)	8,64,000	6,60,000
शुद्ध लाभ (रु.)	6,47,500	3,60,000
लाभ लागतअनुपात	3.99	2.20

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी और आय में वृद्धि हुई।
- पिछले तीन वर्षों में उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि के कारण अधिक पैदावार हुई।
- प्राकृतिक खेती के माध्यम से उगाए जाने वाले सेब की फसलने मौसम की विषम परिस्थिति को सहन किया।
- प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के माध्यम से लगभग 1200 किसानों को लाभ पहुंचाया।

स्रोत: *प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान, राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई कृषि भवन, शिमला-05*

श्री विजय सिंह

ग्राम : शोरन

प्रखंड : कुल्लू

जिला : कुल्लू

संपर्क नंबर : 98576-72945

अर्हता : कला स्नातक

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- यू-ट्यूब पर वीडियो देखकर प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- 2019 में प्रशिक्षण में भाग लिया और प्राकृतिक खेती को बड़े पैमाने पर अपनाया।
- 1.5हेक्टेयर के क्षेत्र में सेब, अनाज, सब्जियां और मौसमी फसलें उगाई।
- गांव में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने और अन्य किसानों को घनजीवमृत, जीवामृत, सप्तधान्यांकुर अर्क और कई तरह के मिश्रण आदानों की आपूर्ति करने के लिए सरकार की सहायता से एक संसाधन भंडार की स्थापना की।
- आत्मा पदाधिकारियों के सहयोग से अन्य किसानों के लिए प्राकृतिक खेती में प्रयुक्त आदान तैयार करने संबंधी प्रदर्शन किए।
- वाट्सएप और कार्यशालाओं के माध्यम से प्राकृतिक खेती संबंधी जागरूकता पैदा की।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदण्ड	प्राकृतिक खेती (1.5 हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (1.5 हेक्टेयर)
फसल	सेब(अनाज, सब्जियां)	सेब
खेती की लागत	480000	570000
उत्पादन (कुंटल)	336	330
कुल लाभ (रु.)	1680000	1650000
शुद्ध लाभ(रु.)	1200000	1080000
लाभ लागत अनुपात	2.4	1.9

लाभ और उपलब्धियां

- कई तरह के मिश्रण का छिड़काव करने से कीटों और बीमारियों का प्रकोप कम हुआ।
- कई फसलों की खेती करने से खेत में मधुमक्खियों जैसे लाभकारी कीटों की संख्या में वृद्धि हुई।
- मिट्टी में केचुओं को शामिल करके मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि की।
- फसलों को सूखे की स्थिति के लिए प्रतिरोधी बनाया।
- खेती की लागत कम हुई।
- पिछले वर्षों की तुलना में गाय के गोबर की आवश्यकता में 13 गुना कमी आई

- विभिन्न प्राकृतिक खेती के लिए स्थानीय पौधों की पहचान की और किसानों और जिला अधिकारियों के साथ जानकारी साझा की।
- संबद्ध गतिविधियों के साथ-साथ खेती से आय में वृद्धि हुई।
- साथी किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

स्रोत: *राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई, पीके3वाई एचपी*

केरल

श्री ओमन कुमारन

गांव	:	तिरुवल्ला
मंडल	:	पुलिकेषु
जिला	:	पत्तनमतिट्टा
राज्य	:	केरल
संपर्क नं.	:	09446388261
शिक्षा	:	डी. सिविल
ई-मेल	:	gvannaturalfarm@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- प्राकृतिक खेती के तहत देशी धान की किस्में जैसे रक्तशाली, कुंजुकुंजु, कन्नुकुलम्पन, ञवरा (औषधीय चावल) उगाई।
- धान में 27 क्विंटल/एकड़ की औसत उपज के साथ प्राकृतिक कृषि आदानों जैसे घनजीवामृत, द्रवजीवामृत और ताजी पत्तियों का उपयोग किया। नीमास्त्र का उपयोग कीट और रोग नियंत्रण के लिए किया गया।
- कीट नियंत्रण के लिए सब्जियों, कंद फसलों, अदरक और केले में दशपर्णी कषाय का प्रयोग किया।
- धान की बुवाई के लिए ड्रमसीडर और खरपतवार नियंत्रण के लिए कोनोवीडर का उपयोग किया।
- देशी धान (60 किस्मों), केले (14 किस्मों), कंद फसलों (15 किस्मों) और अदरक-बी किस्म को बनाए रखा।
- देसी गाय की नस्ल वेचूर और कासरगोड को पालते हैं।
- केरल में अन्य राज्यों के साथ-साथ प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण आयोजित किया और प्रति वर्ष लगभग 600 किसानों को प्रशिक्षित किया।
- प्राकृतिक खेती को अपनाने वाले अन्य किसानों को उनकी उपज बेचने में मदद की।
- गोवर्धन प्रकृति कृषि प्रचारक संघ के मास्टर किसान के रूप में नियुक्त।
- प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए व्हाट्सएप, फेसबुक, यूट्यूब पर सोशल मीडिया पर उपस्थिति बनाए रखी।
- प्राकृतिक खेती पर प्रदर्शनियों और मेलों में भाग लिया।
- जैविक खेती के लिए एक सलाहकार के रूप में कार्य किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदण्ड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1हेक्टेयर)
फसल	धान (ज्योति)	धान (ज्योति)
खेती की लागत(रु.)	125000	120000
उत्पाद (कुंटल)	67.5	65
कुल लाभ (रु.)	168750	162500
शुद्ध लाभ(रु.)	43750	42500
लाभलागतअनुपात	0.35	0.35

लाभ और उपलब्धियां:

- ऑन-फार्म इनपुट उत्पादन का संचालन किया।
- स्व-उत्पादित बीजों का उपयोग किया।
- श्रम लागत बचाया।
- बेहतर कीमत और गुणवत्ता पर प्राकृतिक आदानों का विपणन किया।
- रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सर्वश्रेष्ठ जैविक किसान पुरस्कार प्राप्त किया।
- तिरुवल्ला कृषि भवन का सर्वश्रेष्ठ जैविक किसान पुरस्कार प्राप्त किया।
- चेरुकोलपुष्पाहिंदुमत महा मंगलम जैविक किसान पुरस्कार प्राप्त किया।

स्रोत: *आईसीएआर-कृषि विज्ञान केंद्र सीएआरडी, कोलाभागम, पत्तनमतिट्टा*

श्रीमती प्रीता कुमारी जयकुमार

गांव : इरविपेरूर
मंडल : कोइप्रम
जिला : पत्तनमतिट्टा
राज्य : केरल
संपर्क नं. : 09495537648
शिक्षा : एम.कॉम, पीजीडीसीए
ई-मेल : preethajp@yahoo.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- 10 देसी गायों और 5 बैंलो का पालन किया।
- देसी सब्जियां, अदरक और कंद फसलों को उगाया ।
- वर्षा आश्रय (रेन-शेल्टर) खेती का प्रयोग किया।
- जिमीकंद में मिनीसेट खेती का प्रयोग किया।
- जैविक आदानों का उत्पादन।
- मछली के चारे के रूप में अजोला/डकवीड की खेती की।
- मुर्गी की कड़कनाथ, नेक्ड नेक, फयूमी किस्मों का पालन किया।
- देशी बत्तख- चारा, चेम्बल्ली का पालन किया।
- प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण आयोजित किया।
- विपणन के लिए आईसीटी साधनों (व्हाट्सएप समूह) का उपयोग किया।
- प्रदर्शनियों और मंचों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (0.12 हेक्टेयर)	प्राकृतिक खेती (0.12 हेक्टेयर)
फसल	हल्दी	हल्दी
खेती की लागत (रु.)	51750	53700
उत्पाद (कुंतल)	4.8 (सूखी हल्दी)	5.1 (सूखी हल्दी)
कुल लाभ (रु.)	96000	75600
शुद्ध लाभ(रु.)	44250	21900
लाभलागतअनुपात	0.85	0.41

लाभ और उपलब्धियां:

- खेती की लागत कम किया।
- आदान लागत न्यूनतम हुई ।
- श्रम लागत और समय बचाया।
- प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के माध्यम से प्रति वर्ष लगभग 2500 किसानों को लाभान्वित किया।
- दूरदर्शन महिला किसान पुरस्कार 2019 में भाग लिया।
- कृषि भवन सर्वश्रेष्ठ महिला किसान पुरस्कार प्राप्त किया।
- केरल पशुधन विकास बोर्ड सर्वश्रेष्ठ महिला किसान पुरस्कार 2020 प्राप्त किया।

स्रोत: *आईसीएआर-कृषि विज्ञान केंद्रसीएआरडी, कोलाभागम, पत्तनमतिट्टा*

श्री ज़खारियास जे. शान

गांव	: आयमनम
जिला	: कोट्टयम
राज्य	: केरल
संपर्क नं	: 9947748549
शिक्षा	: कंप्यूटर प्रोग्रामिंग और सिस्टम मैनेजमेंट में डिप्लोमा

अपनाई गई कृषि पद्धतियां:

- 2002 से जैविक खेती और 2007 से ड्रिप सिंचाई प्रणाली अपनाई।
- पोषक तत्वों के जैविक स्रोतों (गाय के गोबर (10 किग्रा) + गोमूत्र (10 लीटर) + मूंगफली की खली (5 किग्रा) + नारियल तेल खली (10 किग्रा) प्रति 200 लीटर पानी) का फर्टीगेशन किया । साथ ही मछली के तालाब के पानी का फर्टिगेशन में प्रयोग किया।
- मृदा जांच के आधार पर चूना और जैविक खाद का प्रयोग किया।
- जैविक कार्बन के समृद्ध स्रोत के रूप में पुनर्चक्रित जैविक अवशेष और चावल की भूसी की राख का इस्तेमाल किया।
- केरल कृषि विश्वविद्यालय के स्यूडोमोनास और पीजीपीआरमिक्स1 जैसे जैविक आदानों का उपयोग किया और उस प्रौद्योगिकी के बारे में जागरूकता भी पैदा की।
- जीवामृत, बीजामृत और पीजीपीआरमिक्स1 के साथ किण्वित तेल खलियों जैसे आदानों को तैयार कर उपयोग किया।
- जैविक धान की खेती (पावर टिलर, धान ट्रांसप्लांटर और कोनोवीडर) में कृषि यंत्रीकरण को अपनाया।
- धान में लेपिडोप्टेरान कीटों को नियंत्रित करने के लिए ट्राइको कार्ड का उपयोग किया ।
- उच्च गहनता वाली सब्जी और मछली पालन को अपनाया ।
- अन्य सब्जियों के साथ उच्च मूल्य वाले फसल जैसे तरबूज और खीरे की भी खेती की।
- समग्र परिवार को खेती में शामिल किया।
- सामूहिक बैठकें और वैज्ञानिक मंचों में भाग लिया।
- सोशल मीडिया प्लाटफॉर्म और मीडिया कवरेज (प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक दोनों) के माध्यम से जागरूकता पैदा की।
- कृषि विज्ञान केंद्र के ऑन-फार्म टेस्टिंग और फ्रंट लाइन डिमॉन्स्ट्रेशन (एफएलडी) के लाभार्थी के रूप में सूचीबद्ध।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.8 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.8 हेक्टेयर)
फसल	धान (उमा)	धान (उमा)
खेती की लागत(रु.)	40000	55000
उत्पाद (कुंतटल)	5.25	50

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.8 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.8 हेक्टेयर)
कुल लाभ (रु.).)	147000	140000
शुद्ध लाभ(रु.)	50000	24020
लाभलागतअनुपात	3.68	2.54

लाभ और उपलब्धियां:

- भूमि और पुनर्चक्रण संसाधनों के इष्टतम उपयोग के माध्यम से उत्पादन लागत में कमी ।
- पीजीएस हरित जैविक किसान के रूप में प्रमाणित।
- बिना कीटनाशक अवशेषों के फसल का उत्पादन किया। (कीटनाशक अवशेष अनुसंधान विश्लेषणात्मक प्रयोगशाला (पीआरआरएएल), केरल कृषि विश्वविद्यालय (केएयू) से प्रमाण पत्र)।
- पर्यावरण को प्रदूषित न करने वाली कृषि पद्धतियों का प्रयोग किया।
- कीट और रोगों की घटनाओं को कम किया।
- मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखा।
- परिवार को खाद्य सुरक्षा के साथ-साथ पोषण सुरक्षा प्रदान की।
- कई किसानों द्वारा परामर्श लिया गया, जो उनकी सलाह से प्राकृतिक खेती कर रहे हैं।
- प्राकृतिक खेती, सटीक खेती, वर्षा-आश्रय संरचना निर्माण, एक्वाकल्चर, एक्वापोनिक्स आदि पर जिला स्तर पर मास्टर ट्रेनर के रूप में नियुक्त।
- कृषि विभाग, केरल सरकार की ओर से सर्वश्रेष्ठ किसान पुरस्कार (ब्लॉक स्तर) से सम्मानित किया गया।
- सरोजिनी दामोदरन फाउंडेशन द्वारा सर्वश्रेष्ठ जैविक किसान पुरस्कार (जिला स्तर) से सम्मानित किया गया।
- कृषि विभाग, केरल सरकार के सर्वश्रेष्ठ जैविक किसान पुरस्कार (राज्य स्तर) के निर्णायक दौर के लिए चुने गए।
- कृषि विज्ञान केंद्र, कोट्टयम की वैज्ञानिक सलाहकार समिति (एसएसी) के किसान प्रतिनिधि के रूप में पदनामित।
- ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव (आरएडब्ल्यूई) के छात्रों के लिए अतिथि किसान के रूप में नियुक्त।
- कृषि विभाग, सब्जी और फल संवर्धन परिषद केरलम (वीएफपीसीके) और केवीके के एक मॉडल किसान के रूप में मान्यता प्राप्त।
- एकीकृत कृषि प्रणाली (आईएफएस) (कृषि + मत्स्य पालन + डेयरी + मुर्गी पालन) के आदर्श किसान के रूप में मान्यता प्राप्त।

स्रोत: कृषि विज्ञान केंद्र, केरल कृषि विश्वविद्यालय, कुमरकमपी. ओ., कोट्टयम

श्री साबु वी. यू.

गांव : अम्बालावायल
मंडल : सुल्तान बतहेरी
जिला : वायनाड
संपर्क नं. : 8111881101
शिक्षा : एमबीए (स्वास्थ्य देखभाल प्रबंधन)

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 2018 में प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- 15 सेंट के खेती क्षेत्र में से 5 सेंट ऑर्किड गार्डन के लिए, लगभग 3 सेंट जंगली ऑर्किड संरक्षण के लिए और शेष क्षेत्र किचन गार्डन बनाने के लिए उपयोग किया गया।
- जंगली ऑर्किड पर्वतीय क्षेत्रों के प्राकृतिक स्थान से विभाजन के माध्यम से एकत्र किए जाते हैं। स्रोत क्षेत्र में मूल पौधे को बनाए रखते हुए जंगली पादपों को प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र से एकत्र किया जाता है। ऑर्किडेरियम में पादपों की देखभाल की जाती है और इसके विकास और गुणन के बाद संरक्षण के तौर पर प्राकृतिक स्थान में वापस ले जाया जाता है।
- जंगली ऑर्किड के संरक्षण के लिए प्राकृतिक खेती पद्धतियों का उपयोग किया।
  - ग्लिरिसिडिया अर्क और ग्लाइरेसेडियामल्च का उपयोग जड़ जमाव के लिए किया जाता है।
  - वानस्पतिक वृद्धि को सुगम बनाने के लिए गाय के गोबर के अधिप्लवी घोल का छिड़काव किया जाता है, जो जैव-कवकनाशी के रूप में कार्य करता है।
  - नीम का तेल, लहसुन का लेप तैयार किया जाता है और कीटों से ऑर्किड को बचाने के लिए उपयोग किया जाता है।
  - पुदीना अर्क को पतला कर चींटियों और घोंघे जो अक्सरआर्किड के विकास को प्रभावित करते हैं, से बचाने के लिए छिड़काव किया जाता है।
- युवाओं के साथ-साथ किसानों के लिए जंगली ऑर्किड के संरक्षण और ऑर्किड की व्यावसायिक खेती पर प्रशिक्षण आयोजित किया।
- आर्किड की खेती के प्रशिक्षण के लिए कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) हेतु एक संसाधन व्यक्ति के रूप में कार्य किया।
- केवीके टीम की मदद से अन्य किसानों के लिए प्राकृतिक खेती में प्रयुक्त इनपुट तैयारियों पर प्रदर्शन आयोजित किया।
- व्हाट्सएप के माध्यम से प्राकृतिक खेती के बारे में जागरूकता पैदा की।
- यूनोइयाआर्किडगार्डन के मालिक। उनके पास डेंड्रोबियम, फेलेनोप्सिस, वांडा, मुक्कारा, टोल्यूमिना, ओन्सीडियम, कैटेल्या आदि सहित ऑर्किड की 150 किस्मों का संग्रह है। इनके अलावा, जंगली ऑर्किड (देशी ऑर्किड) की 40 से अधिक किस्मों को एकत्र कर के एक स्थान पर संरक्षित किया गया है। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए फार्म को संगीत, सौर प्रकाश प्रणाली और फुहार युक्त जल सिंचाई की सुविधा प्रयोग की गई है।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती	पारंपरिक खेती
फसल	जंगली आर्किड/वाणिज्यिक आर्किड	वाणिज्यिक आर्किड
खेती की लागत(रु.)	450000	500000
उत्पाद (कुंतल)	5100 पौधे	5000 पौधे
कुल लाभ (रु.)	850000	800000
शुद्धलाभ(रु.)	450000	300000
लाभ लागत अनुपात	1.89	1.6

प्राकृतिक खेती मुख्य रूप से जंगली ऑर्किड के संरक्षण के लिए है। वे पद्धतियां वाणिज्यिक आर्किड की खेती के लिए भी प्रभावी हैं।

लाभ और उपलब्धियां

- जंगली ऑर्किड, जो लगभग विलुप्त हो चुके हैं, को संरक्षित और सुरक्षित किया।
- वानस्पतिक अर्क का छिड़काव करके कीटों और बीमारियों का प्रकोप कम किया।
- बहु-फसलों की खेती के माध्यम से, खेत में मधुमक्खियों जैसे लाभकारी कीड़ों की संख्या में वृद्धि हुई।
- खेती की लागत को कम किया।
- रसायन मुक्त उपज प्राप्त हुई।
- खेती के साथ-साथ संबद्ध गतिविधियों के माध्यम से अतिरिक्त आय में वृद्धि।
- कई किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।
- वीएचएसई, अंबालावायल, शिक्षा विभाग से 2021 में जंगली आर्किड के संरक्षण के लिए नवीन और प्राकृतिक कृषि तकनीकें अपनाने के लिए एक पुरस्कार प्राप्त किया।

स्रोत: *केवीके, अंबालावायल, वायनाड, केरल*

श्री शाजी एन. एम

गांव : इल्लथुवायल

मंडल : मानंतवाडी

जिला : वायनाड

संपर्क नं. : 9747853969

शिक्षा : 10वीं

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- एक एकड़ कंद फसल के साथ 3 एकड़ में मिश्रित खेती की।
- पट्टे पर 9 एकड़ जमीन में चावल की विभिन्न पारंपरिक किस्मों की खेती की।
- लगभग 200 कंद फसलों का संरक्षण किया, जिनमें अधिक रतालू, सुथनी, जिमीकंद, अरारोट (शिशुमूल), अरबी, शकरकंद, कसावा और चीनी आलू शामिल हैं।
- हल्दी की 40 किस्मों और अदरक की 30 किस्मों को अपने खेत में संरक्षित किया और उगाया।
- औषधीय पौधों की कुछ पारंपरिक किस्मों का संरक्षण किया, जो विलुप्त होने के कगार पर हैं।
- प्राकृतिक कृषि तकनीकों का प्रयोग, शून्य जुताई, पलवार, वर्मीकम्पोस्टिंग, खाद के लिए किण्वित गाय का गोबर और मूंगफली का घोल, कीटों को रोकने के लिए जैव वनस्पति जैसे तंबाकू काढ़ा, नीम तेल लेप का उपयोग किया।
- केवीके टीम की सहायता से अन्य किसानों के लिए प्राकृतिक खेती में प्रयुक्त इनपुट तैयारियों पर प्रदर्शन आयोजित किया।
- व्हाट्सएप के माध्यम से प्राकृतिक खेती के बारे में जागरूकता पैदा की।
- विभिन्न कंद किस्मों को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रदर्शनियों और मेलों में भाग लिया।
- बीज सामग्री के चक्रीय हस्तांतरण का प्रयास शुरू किया जिसमें किसानों को आगामी वर्ष में वापस देने की शर्त के तहत 10 किलो बीज सामग्री प्रदान की जाएगी। बीजों को अगले जरूरतमंदों तक पहुंचाया जाएगा।
- विद्वानों, स्कूल और कॉलेज के छात्रों के साथ-साथ प्रगतिशील किसानों सहित आगंतुकों के लिए विभिन्न जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती के बीच तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1.2 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1.2 हेक्टेयर)
फसल	कंद	कंद
खेती की लागत(रु.)	280000	300000
उत्पाद (कुंटल)	240	210
कुल लाभ (रु.)	370000	3,40,000
शुद्धलाभ(रु.)	90000	40,000
लाभ लागत अनुपात	1.32	1.13

लाभ और उपलब्धियां

- वानस्पतिक अर्क का छिड़काव कर कीटों और बीमारियों का प्रकोप कम किया।
- जैव विविधता का संरक्षण–200 कंद, हल्दी की 40 किस्में और अदरक की 30 किस्में।
- कंद फसलों में विशेषज्ञता के लिए 'केरल के कंद मैन' के रूप में जाना जाता है।
- पंचगव्य, जीवामृत आदि जैसे प्राकृतिक कृषि तकनीकों को लोकप्रिय बनाया।
- खेती की लागत को कम किया।
- प्रशिक्षण द्वारा हर साल लगभग 800 किसानों को लाभान्वित कर रहे हैं।
- भारतीय जैव विविधता पुरस्कार, 2021 से सम्मानित।
- पादपजीनोम उद्धारकर्ता पुरस्कार, 2015 से सम्मानित।
- राज्य अक्षयश्री पुरस्कार से सम्मानित।
- राज्य कैरली पीपल टीवी कथिर पुरस्कार से सम्मानित।
- राज्य जैव विविधता बोर्ड पुरस्कार से सम्मानित।
- केरल कृषि विश्वविद्यालय पुरस्कार से सम्मानित।
- राष्ट्रीय युवा परियोजना, वायनाड के समन्वयक के रूप में नामित।

स्रोत: केवीके, अंबालावायल, वायनाड, केरल

मध्य प्रदेश

श्रीमती जीतकला मरावी

गाँव : सिंगपुर
मण्डल : निवास
संपर्क : 9171492317
शिक्षा : तीसरी

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- अपने किचन गार्डन में नींबू और पपीते समेत 18 तरह की सब्जियां उगाईं।
- बीजोपचार और सीड्लिंग की जड़ को बीजामृत में डुबाकर उपचारित किया जाता है।
- प्राक्रतिक आदान जेसे, गोबर और गोमूत्र के आसान संग्रह एवं उनका फसलों और किचन गार्डन में उपयोग के लिए ग्राम स्तरीय संस्था-प्रकृति प्रबंधन समिति सिंगपुर के सहयोग से पशुशाला के फर्श का निर्माण कार्य किया।
- विभिन्न आदान जैसे बीजामृत, जीवामृत आदि तैयार किए एवं गांव में अन्य महिला किसानों को आदान बनाने के साथ साथ बीज उपचार, जड़ उपचार, गोमूत्र उपयोग, जीवामृत की तैयारी, धान की लाइन बुवाई, आदि के बारे में बड़े पैमाने पर प्रशिक्षित किया और/या सुविधा प्रदान की।
- प्राक्रतिक खेती के तरीकों के लिए पारिस्थितिकी तंत्र को बेहतर बनाने में स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों के उपयोग के बारे में गांव में रैलियां और जन अभियान आयोजित किया।
- गांव में किचन गार्डन स्थापित करने में सहयोग किया।
- जिला और राज्य स्तरीय प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती के बीच तुलना

घटक	प्राकृतिक खेती (0.1 हे.)	परंपरागत खेती (0.1 हे.)
फसल / किस्म	सब्जियां व फल (पपीता) देशी	फल (पपीता) देसी
खेती की लगत (रु.)	258	258
उत्पादन (कुंटल)	3.90	0.50
कुल लाभ (रु.)	15785	5745
सुद्ध लाभ (रु.)	15525	5487
लाभ : लागत अनुपात	60.18	21.26

लाभ और उपलब्धियां

- न्यूनतम आदान लागत।
- खेती की लागत कम।

- फल की अच्छी गुणवत्ता, आकार और बढ़ी हुई शेल्फ लाइफ के साथ उच्च पैदावार में परिणाम।
- अंतरफसल के रूप में सब्जियों की खेती करके शुद्ध आय में वृद्धि।
- परिवार एवं समुदाय को रासायन मुक्त खाद्यान उपलब्ध कराया (विशेष रूप से कोविड के दौरान उपयोगी जब स्थानीय बाजार में लोगों की पहुंच वर्जित थी)।
- केंचुओं की उच्च संख्या के साथ बेहतर मृदा स्वास्थ्य।

***स्रोत:** कृषि विभाग, मध्यप्रदेश*

श्री नरेंद्र सिंह राठौड़

गांव : लाब्रवाड़ा

ब्लॉक : धार

जिला : धार

राज्य : मध्य प्रदेश

संपर्क नं. : 7000804988

शिक्षा : 5वीं

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 2012 से प्राकृतिक खेती को अपनाया। इनका खेत राज्य जैविक प्रमाणन एजेंसी, भोपाल के साथ पंजीकृत है।
- जैविक खेती के माध्य से मूल्य वर्धित उत्पादों के लिए खारिफ मौसम के दौरान मूंग, उड़द और हल्दी की खेती की।
- बीज उपचार के लिए बीजामृत और पोषण प्रबंधन के लिए जीवामृत तैयार किया और उपयोग किया।
- कीटों के नियंत्रण के लिए दशपर्णी अर्क, ब्रह्मास्त्र, नीमास्त्र और अग्नि अस्त्र तैयार किया और उपयोग किया।
- ड्रिप सिंचाई के माध्यम से जैव उर्वरक जैसे राइज़ोबियम, फॉस्फेट घोलक जीवाणु (पीएसबी), पोटेशियम घोलक बैक्टीरिया (केएसबी), ज़िंक घोलक जैवउर्वरक (जेडएसबी), वर्मीकम्पोस्ट और वर्मीवाश का उपयोग किया।
- गिर और मालवी नस्ल की 10 देसी गायों का पालन-पोषण किया।
- संतोषजनक लागत पर एस जी जैविक कृषि फार्म, लाब्रवाड़ा की मूंग दाल, उड़द दाल और हल्दी पाउडर जैसे तैयार किए गए जैविक आदानों / मूल्य वर्धित उत्पादों के प्रसंस्करण और आपूर्ति के लिए ओएफएआई (ऑर्गेनिक फार्मिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया) के साथ जुड़े हुए है।
- आईसीटी साधनों (व्हाट्सएप और फेसबुक) का उपयोग किया।
- प्रदर्शनियों/ कार्यशालाओं और मंचों में नियमित रूप से भाग लिया औरअन्य किसानों को नियमित रूप से प्रशिक्षण दिया।

मूल्य वर्धित उत्पादों के लिए प्राकृतिक और पारंपरिक खेती की लागत में तुलना

फसल	खेती की लागत (रु.) (हेक्टेयर)		कुल लाभ (हेक्टेयर)		शुद्ध लाभ (मूल्य वर्धन के बाद)		लाभ लागत अनुपात	
	प्रा.खे.	पा.खे.	प्रा.खे.	पा.खे.	प्रा.खे.	पा.खे.	प्रा.खे.	पा.खे.
हल्दी	136000	112000	625000	420000	489000	308000	4.59	3.75
उड़द दाल	25500	24200	104000	70000	78500	45800	4.07	2.89
मूंगदाल	28000	26100	123250	85000	95250	58900	4.40	3.25

प्रा.खे. = प्राकृतिक खेती पा.खे. = पारंपरिक खेती

सूखी उपज और मूल्य वर्धित उत्पादों की बिक्री दर

फसल	तैयार किए गए मूल्य वर्धित उत्पाद	सूखी उपज(कि.ग्रा./हेक्टेयर)		बिक्री दर (रु.)	
		प्रा.खे.	पा.खे.	प्रा.खे.	पा.खे.
हल्दी	पाउडर	2500	2800	250	150
उड़द दाल	दाल	650	700	160	100
मूंगदाल	दाल	725	850	170	100

लाभ और उपलब्धियां

- फसल अवशेष का उपयोग मलचिंग के रूप में किया।
- मृदा स्वास्थ्य को बढ़ाया।
- रोज़गार सृजन किया।
- श्रम और समय बचाया।
- उत्पादों के मूल्यवर्धन के द्वारा उच्च आय प्राप्त की।
- प्राकृतिक खेती के बारे में कई किसानों द्वारा परामर्श किया गया।

स्रोत: *कृषि विज्ञान केंद्र, धार (म.प्र.)*

श्री मानसिंह गुर्जर

गांव : गर्धा

तहसील : बनखेड़ी ी

जिला : होशंगाबाद

मोबाइल : 9752324676

ई-मेल : gurjarmansinghnatural@gmail.comt

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 16 एकड़ जमीन में पिछले 11 वर्ष से प्राकृतिक खेती को अपनाया है।
- देशी बीज को एकत्रित किया।
- देशी गाय के गोबर, दुध, छाछ और मूत्र से तैयार किए गए प्राकृतिक घटक जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत, नीमास्त्र, दशपर्णी अर्क आदि का उपयोग किया।
- 2016 में प्राकृतिक खेती के वैज्ञानिक मूल्यांकन के लिए कृषि विश्वविद्यालय, पंत नगर, उत्तराखंड के साथ मिलकर काम किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)		पारम्परिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	गन्ना (सी ओ 8005)	चना (विशाल /फुले जी 87207)	गन्ना गन्ना (सी ओ 86032)
खेती की लागत (रु.)	75000	30850	125000
उत्पाद (कुंटल)	1250	20	1000
कुल लाभ (रु.)	770000		320000
शुद्ध लाभ(रु.)	664150		195000
लाभलागतअनुपात	7.27		2.56

लाभ और उपलब्धियां

- गेहूँ, चना, सरसों और धनिये की बहु-फसल से उच्च लाभ अर्जित किया।
- इनपुट लागत में कमी।
- माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा सम्मानित।
- माननीय कृषि मंत्री श्री गौरी शंकर बिसेन द्वारा सम्मानित।
- माननीय जिला मजिस्ट्रेट द्वारा सम्मानित।
- माननीय कृषि उप निदेशक श्री जीतेन्द्र द्वारा सम्मानित।
- माननीय राज्यपाल द्वारा सम्मानित।

- हिंदू आध्यात्मिक फाउंडेशन द्वारा सम्मानित।
- गुर्जर गौरव कल्याण परिषद, इंदौर द्वारा सम्मानित।
- कृषि विश्वविद्यालय, पंत नगर, उत्तराखंड द्वारा सम्मानित।

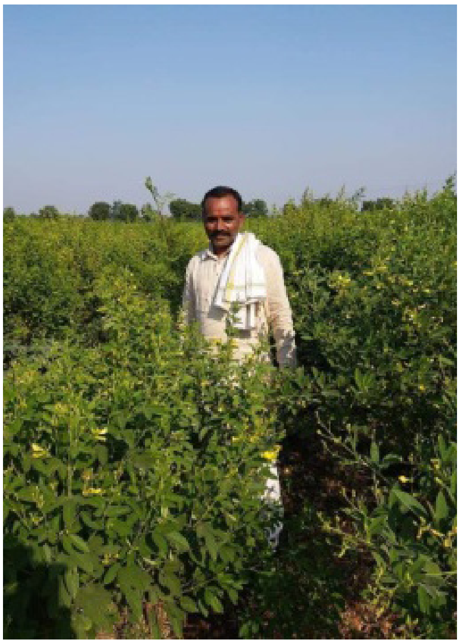

स्रोत: *कृषि विज्ञान केंद्र, गोविंद नगर, होशंगाबाद(म.प्र.)*-461990

महाराष्ट्र

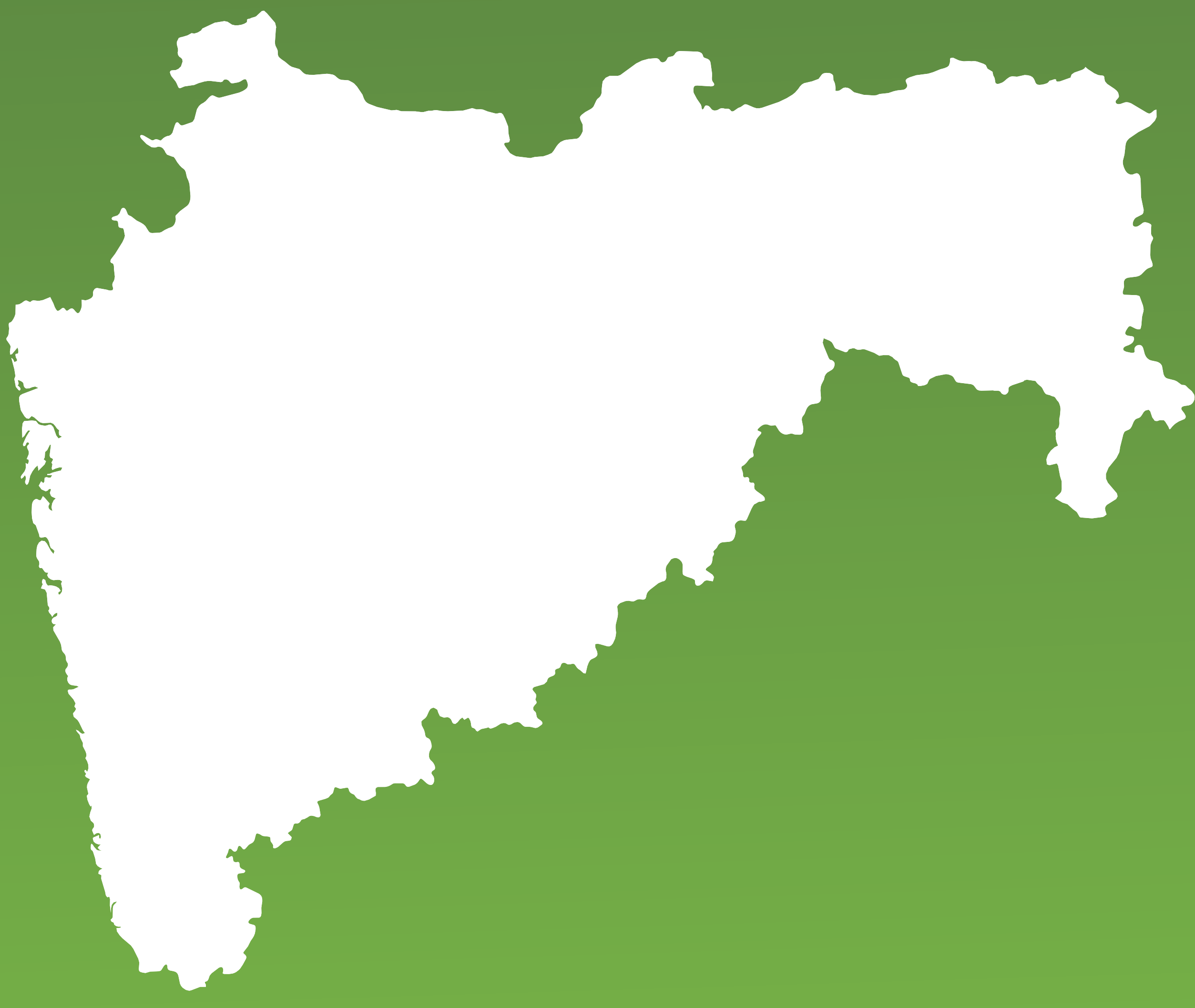

श्री अभिजीत एम वेखंडे

ग्राम : केलावड़े
तालुक : भोर
जिला : पुणे
राज्य : महाराष्ट्र
संपर्क नंबर : 9890169692
ईमेल : abhijit.wekhande@gmail.com
शिक्षा : कंप्यूटर इंजीनियर

अपनाई गईं पद्धतियां

- खेती करते समय प्राकृतिक खेती के चार स्तंभों बीजामृत, जीवामृत, आच्छादन, वापसा का पालन किया।
- प्याज, गेहूं, ज्वार, सब्जियां और विदेशी सब्जियों।
- प्राकृतिक खेती की कार्यशालाओं में भाग लिया।
- साथी किसानों के बीच उपयोगी प्रौद्योगिकीय प्रणालियों का प्रसार किया।
- प्राकृतिक उत्पादों के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने और विपणन के लिए पुणे में हाउसिंग सोसाइटियों का दौरा किया।
- व्हाट्सएप ग्रुप में शामिल।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	मूँगफली	मूँगफली
खेती की लागत (रु.)	15000	10000
उत्पाद (कुंटल)	8.0	5.0
कुल लाभ (रु.)	40000	25000
शुद्ध लाभ (रु.)	25000	15000
लाभ लागत अनुपात	1.7	1.5

लाभ और उपलब्धियां

- उत्पादन लागत में कमी।
- कृषि उपज की गुणवत्ता में वृद्धि।
- कोविड काल में पुणे में हाउसिंग सोसाइटियों को सब्जियां बेचीं।
- कृषि उपज के लिए उच्च मांग पैदा की।
- कृषि आय में पारंपरिक पद्धतियों की तुलना में 50% की वृद्धि।

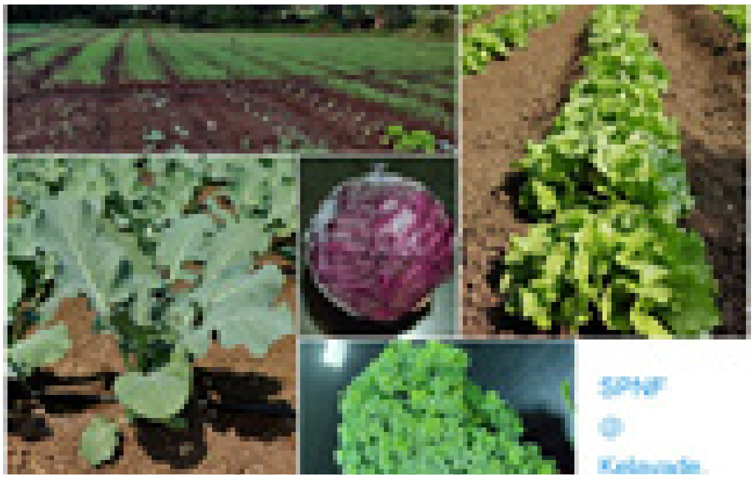

स्रोत: *कृषि आयुक्तालय, पुणे, महाराष्ट्र-411005*

श्री आदिनाथ आनप्पा किनिकर

गाँव	:	कोगील बुडरुक
खंड	:	कारवीर
जिला	:	कोल्हापुर
राज्य	:	महाराष्ट्र
संपर्क सं.	:	9673946519
शिक्षा	:	7वीं

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- पिछले 35 वर्षों से प्राकृतिक खेती को अपना रहे है ।
- प्राकृतिक खेती के अंतर्गत धान, गन्ना, सोयाबीन, मूंगफली, हरा चना, ज्वार, मूंग और सब्जियों की खेती कर रहे है ।
- फसल विविधीकरण के माध्यम से प्राकृतिक खेती में अग्रणी किसान है। प्राकृतिक खेती से इष्टतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए वर्मीकम्पोस्ट का भी उपयोग किया गया, जिससे मृदा स्वास्थ्य में सुधार हुआ।
- फसल के स्वास्थ्य और पौधों की सुरक्षा के लिए देसी गाय और पौधे आधारित उत्पादों जैसे बीजामृत, जीवामृत, गिर-गोकृपामृतम जीवाणुकल्चर, नीमास्त्र और ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। एफिड के नियंत्रण के लिए पीले चिपचिपे जाल का भी प्रयोग किया।
- ढैंचा/सेसबनिया, सनहेम्प, लोबिया, हरे चने, काले चने और सूरजमुखी की हरी खाद का प्रयोग किया।
- ड्रिप सिंचाई के साथ, फसल अवशेषों का पलवार के रूप में क्यारियों में बुवाई और मेड़ पर बुवाई सहित जल संरक्षण तकनीकों का उपयोग किया।
- आधा एकड़ का एक मिश्रित बागवानी ब्लॉक विकसित किया गया जहां अदरक, बैंगन, मिर्च, गोभी और अन्य मौसमी सब्जियों के साथ विभिन्न फलों की फसलें (आम, चीकू, नींबू, पपीता, अमरूद, शरीफा, केला और सहजन) लगाई ।
- जीरो बर्निंग अपनाकर फसल अवशेष प्रबंधन को बढ़ावा दिया ।
- प्रति वर्ष 12 टन उत्पादन करने की क्षमता वाली एक वर्मीकंपोस्टिंग इकाई की स्थापना की।
- गेहूँ, चावल, सब्जियों और वर्मीकम्पोस्ट आदि के लिए जैविक उत्पादों की प्रत्यक्ष विपणन प्रणाली को क्रियान्वित किया। इसके अलावा जैविक सब्जियां और फल बेचने के लिए सिद्धगिरी प्राकृतिक किसान उत्पादक कंपनी, कानेरी मठ से सीधे जुड़े हुए हैं।
- सूचना के प्रसार के लिए व्हाट्सएप और यूट्यूब जैसे डिजिटल मीडिया टूल्स का प्रयोग किया।
- केवीके कानेरी मठ, कोल्हापुर और कृषि और किसान कल्याण विभाग, कोल्हापुर द्वारा आयोजित साप्ताहिक बाजारों और किसान क्लब की बैठकों में भाग लेकर जागरूकता पैदा की।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती			पारम्परिक खेती		
फसल	गन्ना (0.8 हेक्टेयर)	सोयाबीन (0.8 हेक्टेयर)	धान (0.4 हेक्टेयर)	गन्ना (0.8 हेक्टेयर)	सोयाबीन (0.8 हेक्टेयर)	धान (0.4 हेक्टेयर)
खेती की लागत (रु.)	72300	22590	14250	105000	28250	15780
उत्पाद (कुंटल)	840	20	14	810	18.5	12.5
कुल लाभ (रु.)	277200	90000	30800	234900	83250	27500
शुद्ध लाभ(रु.)	204900	67410	16550	129900	55000	11720
लाभलागतअनुपात	2.83	2.98	1.16	1.23	1.94	0.74

लाभ और उपलब्धियां

- जैविक घटक तैयार करने के लिए प्रशिक्षित, जिससे बाहरी स्रोतों से आदानों पर निर्भरता कम हो गई।
- परंपरागत खेती की तुलना में अच्छी उपज प्राप्त की।
- ग्राहकों को रसायन मुक्त उत्पाद उपलब्ध कराए।
- प्राकृतिक संसाधनों का कुशल और किफायती उपयोग सुनिश्चित किया।
- जिले के अन्य किसानों को प्राकृतिक खेती में मार्गदर्शन प्रदान किया।
- वर्ष 2020 के लिए चौधरी चरण सिंह प्रगतिशील किसान पुरस्कार प्राप्त किया।

***स्रोत:** कृषि विज्ञान केंद्र, कनेरी, कोल्हापुर, महाराष्ट्र।*

श्री अप्पा साहेब पांडुरंग पाटिल

गांव : मौजे सांगाव
खंड : कागल
जिला : कोल्हापुर
राज्य : महाराष्ट्र
संपर्क सं. : 9420134602
शिक्षा : एम कॉम

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- पिछले 18 वर्षों से बहु-फसल उत्पादन के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- प्राकृतिक खेती के तहत गन्ना, सोयाबीन, चावल और विभिन्न मौसमी सब्जियां (बैंगन, मिर्च, फूलगोभी, पत्तागोभी) की खेती की।
- फसल विविधीकरण के माध्यम से प्राकृतिक खेती में अग्रणी रहे। प्राकृतिक खेती से ज्यादा से ज्यादा उत्पादन प्राप्त करने के लिए विवेकपूर्ण तरीके से वर्मीकम्पोस्ट और विभिन्न घरेलू जैविक उत्पादों का उपयोग किया।
- फसल के स्वास्थ्य और पौधों की सुरक्षा के लिए देसी गाय आधारित और पौधे आधारित उत्पादों जैसे बीजामृत, जीवामृत, गिर-गोकृपामृतमजीवाणुकल्चर, नीमास्त्र और ब्रह्मास्त्र का इस्तेमाल किया। एफिड के नियंत्रण के लिए पीले चिपचिपे जाल का भी प्रयोग किया।
- ढैंचा/सेस्बानिया, सनहेम्प, लोबिया, मूंग दाल की हरी खाद का प्रयोग किया।
- फसल अवशेषों की मल्चिंग, क्यारी की बुवाई और मेड़ पर बुवाई, सिंचाई के लिए ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई जैसी जल संरक्षण प्रौद्योगिकियों का प्रयोग किया।
- मल्च के माध्यम से खरपतवार प्रबंधन किया। छोटी जोत वाले किसानों के लिए सब्जियों का एक आदर्श एकीकृत मॉडल विकसित किया।
- जीरो बर्निंग के साथ-साथ फसल अवशेष प्रबंधन का प्रयोग किया।
- उपज को सीधे मंडियों, एफपीओ और होम डिलीवरी के माध्यम से बेचा। जैविक सब्जियां और फल बेचने के लिए सिद्धगिरी प्राकृतिक किसान उत्पादक कंपनी, कनेरी मठ से सीधे जुड़े हुए हैं।
- सूचना के प्रसार के लिए व्हाट्सएप और यूट्यूब जैसे डिजिटल मीडिया टूल्स का इस्तेमाल किया।
- केवीकेक नेरीमठ, कोल्हापुर और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, कोल्हापुर द्वारा आयोजित साप्ताहिक बाजारों और किसान क्लब की बैठकों में भाग लेकर जागरूकता पैदा की।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती		पारम्परिक खेती	
फसल	गन्ना (1 हेक्टेयर)	सोयाबीन (1 हेक्टेयर)	गन्ना (1 हेक्टेयर)	सोयाबीन (1 हेक्टेयर)
खेती की लागत (रु.)	82500	27500	140000	31666

मानदंड	प्राकृतिक खेती		पारम्परिक खेती	
उत्पाद (कुंटल)	935	26.25	920	22.55
कुल लाभ (रु.)	308550	118525	266800	101475
शुद्ध लाभ(रु.)	226050	90625	126800	69809
लाभ लागत अनुपात	2.74	3.29	0.90	2.20

लाभ और उपलब्धियां

- जैविक आदान तैयार करने के लिए प्रशिक्षण लिया, जिससे बाहरी स्रोतों से आदानों पर निर्भरता कम हो गई।
- पारंपरिक खेती की तुलना में अच्छी उपज प्राप्त की।
- ग्राहकों को रसायन मुक्त उत्पाद उपलब्ध कराए।
- प्राकृतिक संसाधनों का कुशल और किफायती उपयोग सुनिश्चित किया।
- जिले के अन्य किसानों को प्राकृतिक खेती के बारे में मार्गदर्शन दिया।
- "महाराष्ट्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 के लिए वसंत राव नायक कृषि भूषण पुरस्कार से सम्मानित किए गए।
- 2.49 मीटर (8फीट2 इंच) के सबसे लंबी चिचिण्डा की खेती के लिए लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स 2008 में स्थान बनाया।
- "कृषि विज्ञान केंद्र, कनेरी, कोल्हापुर, महाराष्ट्र से वर्ष 2020 के लिए चौधरी चरण सिंह प्रगतिशील किसान पुरस्कार प्राप्त किया।

स्रोत: *कृषि विज्ञान केंद्र, कनेरी, कोल्हापुर, महाराष्ट्र*

श्री बाबासाहेब शंकर कूट

गांव	:	पिम्पलगांव खुर्द
खंड	:	कागल
जिला	:	कोल्हापुर
राज्य	:	महाराष्ट्र
संपर्क सं.	:	9503697337
शिक्षा	:	10वीं

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- पिछले 30 वर्षों से प्राकृतिक खेती को कर रहे है।
- प्राकृतिक खेती में गन्ना, सोयाबीन, भिंडी और मिर्च की खेती की।
- 2 एकड़ भूमि पर एक बागवानी आधारित फार्म विकसित किया, जहां भिंडी, मिर्च और अन्य मौसमी सब्जियों के साथ विभिन्न फलों की फसलें (आम, अमरूद, शरीफा, केला, लेमनग्रास, चीकू, नारियल, ड्रैगनफ्रूट, कडीपत्ता) और पेड़ के नीचे सागवान (टीक) लगाई गई ।
- फसल विविधीकरण के माध्यम से प्राकृतिक खेती में अग्रणी रहे। प्राकृतिक खेती से ज्यादा से ज्यादा उत्पादन प्राप्त करने के लिए विवेकपूर्ण तरीके से वर्मीकम्पोस्ट और विभिन्न घरेलू जैविक आदानों का उपयोग किया। इससे मिट्टी की उर्वरक क्षमता में सुधार हुआ।
- फसल के स्वास्थ्य और पौध संरक्षण के लिए देसी गाय और पौधे आधारित उत्पादों जैसे बीजामृत, जीवामृत, गिर-गोकृपामृतम जीवाणुकल्चर, नीमास्त्र और ब्रह्मास्त्र का इस्तेमाल किया। एफिड के नियंत्रण के लिए पीले चिपचिपे जाल का प्रयोग किया।
- सेसबनिया, सनहेम्प, लोबिया, मूंग की हरी खाद का प्रयोग किया।
- फसल के अवशेषों की मल्चिंग, क्यारी की बुवाई और मेड़ पर बुवाई के साथ-साथ ड्रिप सिंचाई और जल संचयन सहित जल संरक्षण तकनीकों का प्रयोग किया।
- मल्च के माध्यम से खरपतवार प्रबंधन किया।
- जीरो बर्निंग के साथ-साथ फसल अवशेष प्रबंधन का प्रयोग किया।
- गेहूँ, गन्ना, सब्जियों आदि जैसे जैविक उत्पादों की प्रत्यक्ष विपणन प्रणाली को अपनाया।
- लगभग 25-30लीटर तरल गुड़ (काकवी) उत्पादित किया और 125 रुपये प्रति लीटर में बेचा, जिससे तरल गुड़ से लगभग 3600 रु. की आय प्राप्त हुई।
- सूचना के प्रसार के लिए व्हाट्सएप एवं यूट्यूब जैसे डिजिटल मीडिया टूल्स का इस्तेमाल किया।
- केवीके कनेरीमठ, कोल्हापुर और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, कोल्हापुर द्वारा आयोजित साप्ताहिक बाजारों और किसान क्लब की बैठकों में भाग लेकर जागरूकता पैदा की।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती		पारम्परिक खेती	
फसल	गन्ना (1.6 हेक्टेयर)	सोयाबीन (1.6 हेक्टेयर)	गन्ना (1.6 हेक्टेयर)	सोयाबीन (1.6 हेक्टेयर)
खेती की लागत (रु.)	180400	40800	218000	54000
उत्पाद (कुंटल)	1641.81	42.8	1580	40
कुल लाभ (रु.)	541530	192600	458200	180000
शुद्ध लाभ(रु.)	361130	151800	240200	126000
लाभ लागत अनुपात	2	3.72	1.10	2.33

लाभ और उपलब्धियां

- जैविक आदान तैयार करने के लिए प्रशिक्षण लिया, जिससे बाहरी स्रोतों के आदानों पर निर्भरता कम हुई।
- प्राकृतिक खेती से पारंपरिक खेती की तुलना में अच्छी उपज प्राप्त की।
- ग्राहकों को रसायन-मुक्त उत्पाद उपलब्ध कराए।
- प्राकृतिक संसाधनों का कुशल और किफायती उपयोग सुनिश्चित किया।
- जिले के अन्य किसानों को प्राकृतिक खेती पर मार्गदर्शन प्रदान किया।
- कृषि विज्ञान केंद्र, कनेरी, कोल्हापुर, महाराष्ट्र से वर्ष 2020 के लिए चौधरी चरण सिंह प्रगतिशील किसान पुरस्कार प्राप्त किया।

स्रोत: *कृषि विज्ञान केंद्र, कनेरी, कोल्हापुर, महाराष्ट्र*

श्री होलगे विश्वनाथ गोविंद राव

गांव : दापशेड

तालुका : लोहा

जिला : नांदेड़

संपर्क नं.. : 9764025209

शिक्षा : 12वीं

ई-मेल : dlmortale@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- पिछले 7 वर्षों से प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- बुवाई से पहले प्रति एकड़ 400 कि.ग्रा. घनजीवामृत का प्रयोग किया।
- बुवाई से पहले बीजों का बीजामृत से उपचार किया, जो कवक के प्रभाव को रोकता है और तेजी से बीज के अंकुरण में मदद करता है।
- बुवाई के बाद 15 दिनों के लिए 200 ली. प्रति एकड़ (1:10) अनुपात में पानी के साथ जीवामृत का प्रयोग किया।
- प्रत्येक 15 दिनों में 1:30 अनुपात में पानी के साथ अग्नि अस्त्र और ब्रह्मास्त्र का छिड़काव किया और कीटों के हमले को नियंत्रित करने के लिए बहु-फसल प्रथा का पालन किया।
- फसल सुरक्षा के लिए गोबर, गोमूत्र, पौधे, प्राकृतिक खाद और केंचुए का उपयोग किया।
- समूह खेती का प्रयोग किया।
- तकनीक को समझने के लिए कई सारे खेत और फार्म का दौरा किया।
- किसानों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया जो प्राकृतिक खेती तकनीक के प्रशिक्षण के लिए सबसे उत्तम तरीका है।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती		पारम्परिक खेती	
फसल	सोयाबीन (0.4 हेक्टेयर)	हल्दी (0.4 हेक्टेयर)	सोयाबीन (0.4 हेक्टेयर)	हल्दी (0.4 हेक्टेयर)
खेती की लागत (रु.)	4500	42000	17500	65500
उत्पाद (कुंतल)	7.0	25	5.0	20
कुल लाभ (रु.)	45500	150000	32500	120500
शुद्ध लाभ(रु.)	41000	108000	15000	55000
लाभ लागत अनुपात	9.1	2.6	0.9	0.8

लाभ और उपलब्धियां:

- पर्यावरण के अनुकूल तकनीक साबित हुई, क्योंकि प्राकृतिक खेती मिट्टी को पोषण देती है।
- खेती की लागत में कमी।
- फसल उपज में 30% से अधिक वृद्धि।
- किसान की आय में वृद्धि हुई, जिससे ऋण का बोझ दूर करने में मदद मिली।
- मृदा स्वास्थ्य में सुधार।
- परिणामस्वरूप गैर विषैले वातावरण और विष मुक्त खाद्य प्राप्त हुआ।
- ग्राहक स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता बढ़ाया, जिससे प्राकृतिक उत्पादों की मांग में वृद्धि हुई।

स्रोत: *कृषि आयुक्तालय, पुणे, महाराष्ट्र-411005*

श्री पुंडलीक विष्णु जोरी

गांव : कशाल

डाक : भोयारे

जिला : पुणे

राज्य : महाराष्ट्र

संपर्क नं. : 8888149399

ई-मेल : taomaval@gmail.com

शिक्षा : 7वीं पास

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- धान की खेती के लिए धान ट्रांसप्लांटर और कोनोवीडर का उपयोग किया।
- धान की कटाई के लिए रीपर का उपयोग किया।
- वर्मीकम्पोस्ट, जीवामृत और दशपर्णी अर्क जैसा प्राकृतिक आदान तैयार किया ।
- आत्मा द्वारा प्रशिक्षण और प्रदर्शनियों का आयोजन कराया।
- सूचना के प्रसार के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किया

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल / किस्म	धान /(इन्द्रयानी)	धान /(इन्द्रयानी
खेती की लागत (रु.)	5500	14000
उत्पाद (कुंटल)	29	21
कुल लाभ (रु.)	74500	55000
शुद्ध लाभ(रु.)	69000	41000
लाभ लागत अनुपात	12.5	2.9

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी।
- अनाज और पुआल दोनों की पैदावार में वृद्धि।
- उत्पाद की गुणवत्ता को बढ़ाया।
- श्रम और समय बचाया।
- जैविक खेती और धान खेती के मशीनीकरण में मार्गदर्शन किया।
- आत्मा द्वारा उत्कृष्ट किसान पुरस्कार से पुरस्कृत।

स्रोत: *कृषि आयुक्तालय, पुणे, महाराष्ट्र-411005*

श्री सत्तप्पा श्रीपति माली

गाँव : कागल

जिला : कोल्हापुर

राज्य : महाराष्ट्र

संपर्क नं : 9404974471

शिक्षा : 10th

ईमेल : vitthalmali353@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- प्राकृतिक खेती से मौसमी सब्जियां उगाई।
- देशी और हाइब्रिड दोनों किस्मों का उपयोग किया।
- उत्पादन लागत को कम करने के लिए बीजामृत, जीवामृत, मल्चिंग और वापसा का उपयोग किया।
- मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के लिए दलहनी फसल का उपयोग अंतरफसल के रूप में किया गया।
- बाजार की मांग के अनुसार क्रमिक फसल लगाई।
- कल्चर प्रक्रिया के लिए खेती के मशीनीकरण का इस्तेमाल किया।
- परागण बढ़ाने के लिए मधुमक्खी के छत्ते को खेत में लगाया।
- प्राकृतिक उर्वरकों और स्थानीय बीजों के उपयोग को बढ़ावा दिया।
- कीट नियंत्रण की प्राकृतिक विधि को अपनाया।
- विभिन्न कृषि मंचों में भाग लिया।
- फील्ड स्तर पर किसानों के लिए प्रशिक्षण का आयोजन किया।
- व्हाट्सएप ग्रुप जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल किया।
- प्राकृतिक खेती के संबंध में क्षेत्र भ्रमण के माध्यम से किसानों के समूह को मार्गदर्शन प्रदान किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (0.4 हेक्टेयर))
खेती की लागत (रु.)	गन्ना	गन्ना
खेती की लागत (रु.))	30000	55000
उत्पाद (कुंटल)	480	450
कुल लाभ (रु.)	144000	135000
शुद्ध लाभ(रु.)	114000	80000
लाभ लागत अनुपात	3.8	1.5

लाभ और उपलब्धियां

- प्राकृतिक खेती के परिणाम स्वरूप गन्ने की 40 टन/एकड़, प्याज 7 टन/एकड़ एवं हल्दी 15 कुंटल /एकड़ उपज प्राप्त हुई
- उत्पादन की लागत कम हुई ।
- परिणामस्वरूप कृषि उत्पादों की गुणवत्ता अच्छी हो गई।
- केले के लिए एक सुस्थापित बाजार बनाया।
- किसान समूहों को अंतरफसल पद्धति अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।
- मृदा क्षरण को रोका और मृदा संरक्षण में मदद की।

स्रोत: *कृषि आयुक्तालय, पुणे, महाराष्ट्र-411005*

श्री तुलसीराम सीताराम चतुर

ग्राम : कुटंगा

तालुका : धरणी

जिला : अमरावती

राज्य : महाराष्ट्र

संपर्क नंबर. : 9673102647

शिक्षा : 12वीं

ईमेल : tulasramchatur327@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- प्राकृतिक खेती के माध्यम से ज्वार, बंसी गेहूं, प्याज और सब्जियों की खेती की।
- जीवामृत, बीजामृत का उपयोग किया और पलवार और नमी प्रबंधन का सफलतापूर्वक प्रयोग किया।
- कीट और रोगों के नियंत्रण के लिए नीमाअर्क और दशपर्णी अर्क का प्रयोग किया।
- मुख्य फसल के साथ-साथ मक्का, लोबिया और सरसों जैसी ट्रैप फसलें लगाईं।
- किसान समूह के लिए जागरूकता अभियान चलाया।
- विपणन के लिए आईसीटी तकनीक (व्हाट्सएप ग्रुप) का उपयोग किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	हल्दी	हल्दी
खेती की लागत (रु.)	65000	100000
उत्पाद (कुंटल)	25	25
कुल लाभ (रु.)	375000	375000
शुद्ध लाभ(रु.)	310000	275000
लाभ लागत अनुपात	5.8	3.8

लाभ और उपलब्धियां

- एक उचित और सतत तरीका साबित किया।
- दो देशी गायों से पर्याप्त मात्रा में जैविक खाद का उत्पादन किया।
- कम निवेश के साथ निवल आय में वृद्धि।
- परिणामस्वरूप कम प्रारंभिक जुताई करनी पड़ी।
- मिट्टी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों में सुधार।

- प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन द्वारा जैव विविधता के संरक्षण में मदद की।
- रासायनिक मुक्त खाद्यान्न और सब्जियों से परिवार, मित्र और उपभोक्ताओं को संतुष्ट किया।

***स्रोत:** कृषि आयुक्तालय, पुणे, महाराष्ट्र-411005*

ओडिशा

श्रीमती उर्मिला सिंह

ग्राम : किसानदही

जीपी : बलडीहा

प्रखंड : शामखुन्ता

जिला : मयूरभंज

राज्य : ओडिशा

संपर्क करें : 9937459212

शिक्षा : बीएसई

अपनाई गईं पद्धतियां

- स्वदेशी सुगंधित धान की खेती (नुआचिनीकामिनी) की।
- धान उत्पादन में पारंपरिक तरीकों को अपनाया और जीवामृत, बीजामृत और हांडी खाता जैसे आदानों का उपयोग किया।
- लाइन प्रत्यारोपण को अपनाया।
- पावर टिलर और कोनो-वीडर का उपयोग किया।
- विपणन के लिए वीर बिरसा किसान उत्पादक कंपनी (एफपीसी) के साथ जुड़ा हुआ है।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	धान (नुआचिनीकामिनी)	धान (नुआचिनीकामिनी)
खेती की लागत (रु.)	16500	19500
उत्पाद (कुंटल)	30	25
कुल लाभ (रु.)	60000	45375
शुद्ध लाभ(रु.)	43500	25875
लाभ लागत अनुपात	2.6	1.32

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की कम लागत का अनुभव।
- अनाज और पुआल दोनों की अधिक उपज हुई।
- उच्च आय अर्जित की।
- मृदा स्वास्थ्य और पारिवारिक स्वास्थ्य में सुधार हुआ।

स्रोत: *कृषि और खाद्य उत्पादन निदेशालय, ओडिशा, भुवनेश्वर*

श्रीमती अष्टमी सिंह

ग्राम : किसानदही
जीपी : बालडीहा
प्रखंड : शामखुन्ता
जिला : मयूरभंज
राज्य : ओडिशा
संपर्क नंबर : 9937459212
शिक्षा : बीएसई

अपनाई गईं पद्धतियां

- स्वदेशी सुगंधित धान की खेती (नुआकालाज़ीरा) की।
- धान उत्पादन में पारंपरिक तरीकों को अपनाया।
- पोषण प्रबंधन और बीज उपचार के लिए जीवामृत, बीजामृत और हांडी खाता जैसे आदानों का उपयोग किया।
- लाइन प्रत्यारोपण को अपनाया।
- पावर टिलर और कोनो-वीडर का उपयोग किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	स्वदेशी सुगंधित धान (नुआकालाज़ीरा)	स्वदेशी सुगंधित धान (नुआकालाज़ीरा)
खेती की लागत (रु.)	16500	19500
उत्पादन (कुंटल)	25	25
कुल लाभ (रु.)	52500	45375
शुद्ध लाभ(रु.)	36000	25875
लाभलागतअनुपात	2.1	1.32

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत को कम किया।
- उच्च आय अर्जित की।
- अनाज और पुआल दोनों की अधिक उपज हुई।
- श्रम लागत और समय की बचत।
- बेहतर मृदा स्वास्थ्य और पारिवारिक स्वास्थ्य।

स्रोत: कृषि और खाद्य उत्पादन निदेशालय, ओडिशा, भुवनेश्वर

श्री बेब्रता टुडु

ग्राम : आनंदपुरी
जीपी : गाडिगन
प्रखंड : खुंटा
जिला : मयूरभंज
राज्य : ओडिशा
संपर्क नंबर. : 9668621760
शिक्षा : एचएसई

अपनाई गईं पद्धतियां

- स्वदेशी सुगंधित धान (केतकीजोहा) की खेती की।
- धान उत्पादन में पारंपरिक तरीकों को अपनाया।
- जीवामृत, बीजामृत और हांडी खाता जैसे आदानों को तैयार किया।
- लाइन प्रत्यारोपण को अपनाया।
- पावर टिलर और कोनो-वीडर का उपयोग किया।
- जैविक खेती के नियमित प्रशिक्षण में भाग लिया।
- विपणन के लिए वीर बिरसा फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी (एफपीसी) के साथ जुड़े हैं।
- प्रदर्शनियों और मंचों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	स्वदेशी सुगंधित धान (केतकीजोहा)	स्वदेशी सुगंधित धान (केतकीजोहा)
खेती की लागत (रु.)	15000	19500
उत्पादन (कुंटल)	24	25
कुल लाभ (रु.)	52800	45375
शुद्ध लाभ (रु.)	37800	25875
लाभ-लागत अनुपात	2.52	1.32

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की कम लागत और बढ़ी हुई पैदावार ने उच्च आय अर्जित करने में मदद की।
- मृदा स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सुधार।
- रसायन मुक्त उत्पाद के सेवन से बेहतर स्वास्थ्य प्राप्त हुआ।

स्रोत: *कृषि और खाद्य उत्पादन निदेशालय, ओडिशा, भुवनेश्वर*

श्री जय कृष्णा दलाई

गांव	:	कालियापाता
पोस्ट	:	चंदीपुत
जिला	:	गजपति
राज्य	:	ओड़िशा
संपर्क सं.	:	9938889179
शिक्षा	:	आठवीं

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- कंगनी की प्राकृतिक खेती की।
- जीवामृत, बीजामृत, हांडी खाता जैसे प्राकृतिक कृषि आदानों को तैयार किया और इस्तेमाल किया।
- हांडी खाता अर्क के पर्णीय अनुप्रयोग के माध्यम से पौधों को पोषित किया।
- मृदा परीक्षण के आधार पर जैविक पोषक तत्वों का अनुप्रयोग किया।
- मिट्टी की अम्लता को बनाये रखने के लिए चूने का प्रयोग किया।
- कंगनी की पंक्तिबद्ध रोपाई को अपनाया।
- मिलेट गहनता (एसएमआई) की प्रणाली को अपनाया।
- मिलेट की उन्नत उत्पादन प्रौद्योगिकियों को अपनाया।
- उच्च आय के लिए एकीकृत कृषि प्रणाली (आईएफएस) को अपनाया।
- एक किसान समूह और बीज ग्राम का सृजन किया।
- तपतापानी किसान उत्पादक कंपनी लिमिटेड के सक्रिय सदस्य के रूप में भाग लिया।
- प्रशिक्षण, प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, आईसीटी, केएमएएस (किसान मोबाइल सलाहकार सेवा) और व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से सूचना का प्रसारकिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	रागी	रागी
खेती की लागत (रु.)	16500	18000
उत्पाद (कुंटल)	12	09
कुल लाभ (रु.)	39540	29655
शुद्ध लाभ (रु.)	23040	11655
लाभ-लागत अनुपात	1.4	0.65

लाभ और उपलब्धियां

- आदान लागत में कमी के साथ खेती की लागत में कमी हुई।
- अनाज और भूसे की अधिक उपज हुई।
- पंक्तिबद्ध रोपाई, एसएमआई और आईएफएस प्रणाली से आय दोगुनी हुई।
- श्रम लागत और समय की बचत हुई।
- प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के माध्यम से प्रत्येक वर्ष लगभग 120 किसानों को लाभान्वित किया।

स्रोत: *केवीके, गजपति, ओड़िशा कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर*

पंजाब

श्री अमरजीत सिंह भंगू

ग्राम	:	चहरके
तहसील	:	भोगपुर
जिला	:	जालंधर
संपर्क नंबर	:	9417131548
शिक्षा	:	उच्च माध्यमिक

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- गेहूँ, धान, बासमती, गन्ना, हल्दी, आलू और दाल की खेती की।
- पशुपालन: 33000 मुर्गी पालन ब्रायलर, 12 (मवेशी और भैंस)।
- खेत में बिना जलाए फसल अवशेष प्रबंधन, फसल चक्र, जैसी विभिन्न पद्धतियों को अपनाया।
- खाद के रूप में पशु खाद, हरी खाद के लिए फलीदार फसल का उपयोग किया तथा जैव तरीकों के माध्यम से कीट और पतंगों को नियंत्रित किया।
- 2.5 लीटर पानी में 1 लीटर देसी गोमूत्र, 1 किलो गोबर, 50 ग्राम चूना मिलाकर बने बीजामृत का प्रयोग कर बीजों को रात भर रखकर उपचारित किया । बुवाई से पहले इस मिश्रण में बीज को भिगो दिया गया, जो बिना किसी रोग और खरपतवार के फसल को उगाने में सहायक हुआ।
- हरी खाद (ढैंचा, मूंग, मैश, बाजरा, बरसीम), बायोगैस घोल और गाय के गोबर के माध्यम से मिट्टी के पोषक तत्वों में वृद्धि की। मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के लिए फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाया।
- बासमती फसल से अधिक उपज प्राप्त करने के लिए खड़ी फसल पर सरसों की खली का प्रयोग किया जाता है।
- 10 किलो गाय के गोबर, 20 लीटर गोमूत्र, 2 किलो शीरा, 2 किलो बेसन, 200 ग्राम बिना पॉलिश किए तांबे के तार और 200 ग्राम लोहे की कील को 200 लीटर पानी में मिलाकर 7-10 दिनों के लिए किण्वन के लिए छोड़ दिया और जीवामृत तैयार किया। पीड़कनाशी और कीटनाशी के स्थान पर जीवामृत का उपयोग किया।
- धान, बासमती और गन्ने की फसलों में कीटों को नियंत्रित करने के लिए ट्राइकोग्रामा कार्ड का इस्तेमाल किया।
- बासमती फसल में पाद गलन रोगों के नियंत्रण के लिए ट्राइकडर्मा हार्जिएनम और फिटकरी (2 किग्रा/एकड़) का उपयोग किया।
- कीट नियंत्रण के लिए नीम के पत्ते, अक्क के पत्ते, कांग्रेस ग्रास के पत्ते और धतूरे के पत्ते एवं (60 किलो गाय के गोबर, 2 किलो बेसन, 1 किलो बाजरे का आटा, 1 किलो नमक, 250 ग्राम सरसों का तेल, 3 किलो गुड़, 2 किलो नीम के पत्ते, 2 किलो आक के पत्ते, 150 लीटर पानी से तैयार) गुडजल अमृत का उपयोग किया ।
- मिट्टी में दीमक के नियंत्रण के लिए हींग (हिंग) का इस्तेमाल किया और कवकनाशी के रूप में लस्सी (बटरमिल्क) स्प्रे का इस्तेमाल किया।
- खरपतवार के अंकुरण को नियंत्रित करने और नमी के वाष्पीकरण से बचने के लिए हल्दी और गन्ने की फसल में पुआल मल्चिंग को अपनाया।

- धान, गेहूँ और गन्ने के भूसे को खेत में मिलाकर, गेहूँ की क्यारी बुवाई, गन्ने, हल्दी और आलू की अंतर-फसल के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन के लिए कई पद्धतियों को अपनाया।
- कृषि विज्ञान केंद्र, जालंधर द्वारा प्रशिक्षित, प्रशिक्षण से उनकी खेती का उत्पादन अत्यधिक प्रभावित हुआ है और लाभ के मार्जिन में सुधार हुआ है।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (1.6 हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (1.6 हेक्टेयर)
फसल	गेहूं (बंसी)	गेहूं (पीबीडब्लू 343)
खेती की लागत (रु.)	42200	53080
उत्पादन (कुंटल)	84	76
कुल लाभ (रु.)	252000	146300
सुद्ध लाभ (रु.)	209800	93220
लाभ : लागत अनुपात	4.90	1.75

लाभ और उपलब्धियां

- अधिक उपज प्राप्त की।
- पीड़कनाशी/कीटनाशी के अवशेषों के बिना बेहतर गुणवत्ता वाली उपज।
- मृदा की उर्वरता में सुधार।
- खेती की लागत में पारंपरिक पद्धतियों के मुकाबले बासमती में 65%, गेहूँ में 25%, गन्ने में 20% और हल्दी में 20% की कमी।
- अन्य खेतों से जैविक कचरे का पुनर्चक्रण।
- पारंपरिक कृषि उत्पादों की तुलना में प्राकृतिक कृषि उत्पादों के शेल्फ जीवन में वृद्धि हुई।
- प्राकृतिक कृषि पद्धतियों में उनके योगदान के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार डीआरआर (2011), राष्ट्रीय पुरस्कार सीआईपीएचईटी (2013), कृषि राज्य पुरस्कार (2015), कृषि रत्न पुरस्कार(2017) और कृषि राज्य पुरस्कार (2019) प्राप्त किया।

स्रोत: *कृषि विज्ञान केंद्र, जालंधर*

श्री अमृतपाल सिंह

गांव : हमज़ा
मंडल : मजीठा
जिला : अमृतसर
राज्य : पंजाब
सम्पर्क सं. : 9463205464
शिक्षा : 10+2

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- बागवानी फसलें, विशेष रूप से सब्जियां और फूलों की खेती की।
- बागवानी उत्पादन के लिए कृषि यंत्रीकरण को अपनाया।
- बागवानी फसलों के नर्सरी उत्पादन के लिए पॉलीहाउस विकसित किया और सब्जी फसलों की नर्सरी बढ़ाने के लिए प्लग इन ट्रे पद्धति को अपनाया।
- पावर टिलर, ट्रांसप्लांटर और रीपर का उपयोग करके कृषि मशीनीकरण को अपनाया।
- जैविक खाद तैयार किया।
- जैविक खेती के लिए ग्राम स्तर पर मास्टर प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किया।
- राज्य बागवानी विभाग और पीएयू लुधियाना से प्रशिक्षण लिया।
- जैविक खेती के लिए प्रत्येक 2 महीने पर कार्यशालाओं का आयोजन किया।
- आईसीटी तंत्र (व्हाट्सएप ग्रुप और फेसबुक) का प्रयोग किया।
- प्रदर्शनियों और मंचों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	मटर, शिमला मिर्च, टमाटर	मटर, शिमला मिर्च, टमाटर
खेती की लागत (रु.)	28000	37000
उत्पादन (कुंटल)	30	24
कुल लाभ (रु.)	105379	98750
शुद्ध लाभ (रु.)	67379	61750
लाभ-लागत अनुपात	2.4	1.66

लाभ और उपलब्धियां

- इसके परिणामस्वरूप आदान लागत और खेती की लागत में कमी हुई। बागवानी से आय दोगुनी हुई।

- समय और श्रम लागत की बचत हुई।
- अनाज और भूसा दोनों की अधिक पैदावार देखी गई।
- जैविक खेती के लिए कई किसानों ने परामर्श किया और प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के माध्यम से प्रत्येक वर्ष लगभग 2500 किसान लाभान्वित हुए।

स्रोत: *कृषि विज्ञान केंद्र, नाग कलां, अमृतसर*

श्री रंजीत सिंह

गांव : बालियान मंजपुर
मंडल : जंडियाला
जिला : अमृतसर
राज्य : पंजाब
संपर्क संख्या : 9888961713
शिक्षा : 10+2

अपनाई गई पद्धतियां

- अनाज और सब्जी की फसलों के लिए एक बीज बैंक विकसित किया।
- होम प्रोसेसिंग साग यूनिट और चाट्टी दी लस्सी लगाई।
- बायोगैस संयंत्र लगाया।
- जैविक खाद तैयार की।
- फसल कटाई के लिए रीपर का इस्तेमाल किया।
- प्रत्येक2 महीने में जैविक खेती पर कार्यशालाओं का आयोजन किया ।
- जैविक उत्पादों के विपणन के लिए सिद्धगिरी प्राकृतिक किसान उत्पादक कंपनी (एफपीसी) के साथ जुड़े हुए हैं।
- आईसीटी तंत्र (व्हाट्सएप ग्रुप) का प्रयोग किया।
- प्रदर्शनियों और मंचों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1हेक्टेयर)
फसल	गेहूं	गेहूं
खेती की लागत (रू.)	23000	30000
उत्पाद (कुंतल)	73.75	48.5
कुल लाभ (रु.)	109375	89725
शुद्ध लाभ (रु.)	86375	59725
लाभ-लागत अनुपात	3.75	1.99

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी।
- आदानों की लागत में कमी और समय की बचत और साथ ही श्रम लागत में कमी।
- अनाज और भूसे दोनों की पैदावार में वृद्धि।

- प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के माध्यम से प्रत्येक वर्ष लगभग 1600 किसानों को लाभान्वित किया जाता है।
- 2016 में किसान मेला में कृषि विभाग अमृतसर से सर्वश्रेष्ठ किसान पुरस्कार प्राप्त किया।

***स्रोत:** कृषि विज्ञान केंद्र, नाग कलां, अमृतसर*

श्री सविंद्रपाल सिंह छिन्ना

गाँव	:	फतेहगढशुकारचक
मंडल	:	तरसिका
जिला	:	अमृतसर
राज्य	:	पंजाब
संपर्क सं.	:	9814220423
शिक्षा	:	बी.एस.सी. कृषि

अपनाई गई पद्धतियां

- प्रक्षेत्र और बागवानी फसलों की खेती की।
- फूलों की खेती की पद्धति अपनाई और फूलों का चयन विशेष रूप से, ग्लैडीओलस विकसित किया,
- जीवामृत, खट्टी लस्सी और नीम के उत्पादों जैसी जैविक खाद तैयार की।
- पॉलीहाउस तकनीक की प्रणाली अपनाई।
- बिजली कटाई यंत्र और प्रतिरोपण का उपयोग करके धान और बागवानी फसलों में कृषि यंत्रीकरण को अपनाया।
- नियमित आधार पर प्राकृतिक खेती के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया।
- जैविक उत्पादों के विपणन के लिए सिद्धगिरी प्राकृतिक किसान उत्पादक कंपनी (एफपीसी) के साथ जुड़े हुए हैं।
- सूचना के प्रसार के लिए आईसीटी तंत्र का इस्तेमाल किया।
- प्रदर्शनी और मंचों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	नाशपाती	नाशपाती
खेती की लागत (रु.)	102000	120000
उत्पाद (कुंतल)	154	126
कुल लाभ (रु.)	802000	692000
शुद्ध लाभ (रु.)	700000	572000
लाभ-लागत अनुपात	6.86	4.76

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी।
- बागवानी के प्रशिक्षण और कार्यशालाओं द्वारा प्रत्येक वर्ष लगभग 2500 किसानों को लाभान्वित किया जाता है।

- जैविक खेती के लिए कई किसानों ने परामर्श किया।
- समय और श्रम लागत में बचत।
- बागवानी विभाग अमृतसर से प्रशस्ति पत्र के साथ सम्मानित किया गया।

स्रोत: *कृषि विज्ञान केंद्र, नाग कलां, अमृतसर*

श्री सुखदेव सिंह

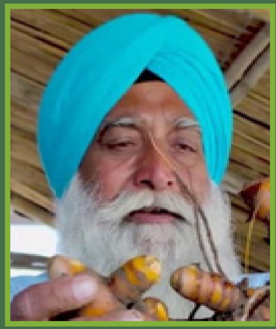

गांव : छमारी
मंडल : अजनाला
जिला : अमृतसर
राज्य : पंजाब
संपर्क संख्या : **8872007512**
शिक्षा : बीएससी कृषि

अपनाई गई पद्धतियां

- खाद्य और सब्जी की फसलों के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाया ।
- हल्दी प्रसंसकरण संयंत्र और वर्मीकंपोस्ट यूनिट स्थापित की।
- जैविक गुड़ बनाने में शामिल।
- बायोगैस संयंत्र स्थापित किया।
- बिजली से जुताई, ट्रांस बुवाई यंत्र,कोनो वीडर और रीयर का इस्तेमाल किया।
- जीवामृत जैसे आदानों को तैयार और इस्तेमाल किया।
- जैविक उत्पादों के विपणन के लिए सिद्धगिरी प्राकृतिक किसान उत्पादक कंपनी (एफपीसी) के साथ जुड़ा हुए हैं।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	गन्ना	गन्ना
खेती की लागत (रू.)	62500	70000
उत्पाद(गुड) (कुंटल)	113.75	120.5
कुल लाभ (रु.)	796250	662650
शुद्ध लाभ (रु.)	733750	592650
लाभ-लागत अनुपात	11.74	8.46

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी।
- अनाज और भूसे दोनों की अधिक पैदावार हुई।
- प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के माध्यम से प्रत्येक वर्ष लगभग 2500 किसानों को लाभान्वित किया।
- एसआरआई तकनीक का उपयोग करके चावल की खेती के माध्यम से आय दोगुनी की।

- जैविक खेती के लिए कई किसानों ने परामर्श किया।
- आदानों की लागत में कमी।
- श्रम लागत पर बचत।
- समय की बचत। 2015 में किसान मेले में कृषि विभाग अमृतसर द्वारा सर्वश्रेष्ठ किसान पुरस्कार से सम्मानित।

स्रोत: *कृषि विज्ञान केंद्र, नाग कलां, अमृतसर*

राजस्थान

श्री अमर सिंह

गांव : धोलरिया,

तहसील : रोहट

जिला : पाली

मोबाइल नं. : 6376701715

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- पिछले 65 वर्षों से प्राकृतिक खेती कर रहे हैं।
- खेती के लिए पारंपरिक भूमि को अपनाया जिसमें काले तिल और खारचिया गेहूं शामिल हैं।
- अन्य मवेशियों को ठहराने के लिए अपने खेतों का उपयोग किया, जिससे खेत की मृदा को बिना किसी अन्य खर्च के उपजाऊ बनाया।
- खेत की सीमा पर कैलोट्रोपिस और देसी बबूल उगाकर कीटनाशकों से बचाया, जो लाभकारी कीड़ों के लिए जलाशय के रूप में कार्य करते हैं।
- अग्नि होम जैसी जलवायु के अनुकूल तकनीकों को अपनाया, जो धुएं का उपयोग कीटनाशक और कवकनाशी के रूप में होता है, जिससे बीमारियों और कीटों को नियंत्रित किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदण्ड	प्राकृतिक खेती (1हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	तिल (काला)	तिल (सफेद)
खेती की लागत (रु.)	15000	18000
उत्पादन (कुंटल)	8.5	7.2
कुल लाभ (रु.)	59500	46800
शुद्ध लाभ (रु.)	44500	28800
लाभ-लागत अनुपात	2.96	1.60

लाभ और उपलब्धियां

- कीटनाशकों और कवकनाशकों पर कोई व्यय नहीं हुआ।
- कृषि लागत में कटौती।
- अच्छी चमक और सुगंध के साथ, स्वस्थ और स्वादिष्ट अनाज का उत्पादन।

स्रोत: *आईसीएआर-सीएज़ेडआरआई कृषि विज्ञान केंद्र, पाली*

श्री डेडा राम

गाँव : गजनगढ़
तहसील : रोहट
जिला : पाली
मोबाइल नं. : 9413077698

अपनाई गई पद्धतियाँ

- 1980 में प्राकृतिक खेती पद्धतियों को अपनाया।
- पशुधन आधारित प्राकृतिक कृषि प्रणाली को अपनाया।
- पूरी तरह संरक्षित नमी और न्यूनतम जुताई पर काबुली चना उगाया।
- कीड़ों और कीटों को नियंत्रित करने के लिए अपने तरीके का इस्तेमाल किया।
- 35वें दिन फसलों को खुरचा गया, जिसके परिणामस्वरूप फली बेधक का नियंत्रण हुआ और शाखाओं में वृद्धि हुई।
- खेत की सीमा पर नीम के पेड़ लगाए जिनसे मिट्टी में खाद की प्राप्ति हुई और प्राकृतिक कीटनाशकों को तैयार करने के लिए कच्चे माल के की प्राप्ति हुई।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेत (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	काबुली चना	काबुली चना
खेती की लागत (रु.)	18200	26500
उत्पादन (कुंटल)	18	16.6
कुल लाभ (रु.)	90000	83000
शुद्ध लाभ (रु.)	71800	56500
लाभ : लागत अनुपात	3.94	2.13

लाभ और उपलब्धियां

- परिणामस्वरूप रसायनों और अन्य हानिकारक आदानों पर खर्च कम हुआ।
- प्राकृतिक खेती से उगाई जाने वाली फसलें कीड़ों, कीटों और बीमारियों के प्रति अधिक कठोर और अधिक प्रतिरोधी होती हैं।
- प्राकृतिक प्रणाली के तहत उत्पादित अनाज की उच्च कीमत होती है, क्योंकि वे रंग में समृद्ध, आकार में बड़े और स्वाद में स्वादिष्ट होते हैं।

स्रोत: *आईसीएआर-सीएज़ेडआरआई कृषि विज्ञान केंद्र, पाली*

श्री देवी लाल गुर्जर

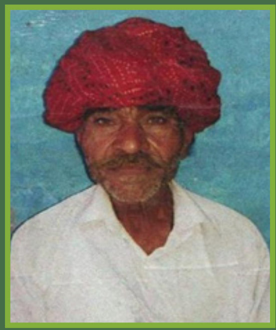

गांव : पुरादेवडूंगरी, धतुरिया कलां
ब्लॉक : पिडरावा
जिला : झालावाड़
राज्य : राजस्थान
संपर्क नं. : 9929705670
शिक्षा : 7वीं

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- वर्ष 2013 से प्राकृतिक खेती को अपनाया और मसाले, अलसी, उड़द, मूंग, हल्दी, गेहूं और पपीते की खेती की।
- जीवामृत, बीजामृत, वर्मीवाश, घनजीवमृत, दशपर्णी अर्क, नीमास्त्र, ह्यूमिक एसिड और गोरतनकाढ़ा का उपयोग किया।
- बीज उपचार के लिए बीजामृत, कीटों के नियंत्रण के लिए दशपर्णी अर्क और मृदा पोषक पूरक के रूप में घनजीवामृत का उपयोग किया।
- नेमाटोड नियंत्रण के लिए महुआ अर्क का प्रयोग किया। फसलों के अवशेषों को एकत्र कर 15 दिनों के लिए किण्वित किया गया था। पंद्रह दिनों के बाद, नेमाटोड के नियंत्रण के लिए किण्वित उत्पाद का छिड़काव किया गया।
- फसल अवशेषों का उपयोग करके जैविक पलवार का प्रयोग किया जिसके परिणामस्वरूप लंबी सिंचाई अवधि, खरपतवारों के संक्रमण पर नियंत्रण और मिट्टी में जैव कार्बन की मात्रा में वृद्धि हुई।
- हल्दी और मिर्च की मिश्रित फसल का प्रयोग किया, जिसके परिणामस्वरूप सहजीविता का लाभ हुआ। दोनों फसलों में कीटों और बीमारियों का प्रकोप बहुत कम था। मिर्च की फसल में लीफकर्ल रोग को हल्दी की फसल के साथ मिश्रित फसल करने से नियंत्रित किया गया।
- वर्मिकम्पोस्ट इकाई , गोरतन और वनस्पतिकाढ़ा इकाई और एफवाईएम पिट की स्थापना की।
- आईसीटी साधनों का उपयोग करके केवीके, झालावाड़ में किसानों को प्रशिक्षण प्रदान किया।
- किसानमेला, गोष्ठी, प्रदर्शन यात्राओं और प्रदर्शनियों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	मेथी	मेथी
खेती की लागत(रु.)	26200	35500
उत्पादन (कुंटल)	19.5 (दर 9000/- प्रति कुंतल)	19 (दर 6000/- प्रति कुंतल)
कुल लाभ (रु.)	175500	114000
शुद्ध लाभ (रु.)	149300	108500
लाभ लागतअनुपात	5.6	3

लाभ और उपलब्धियां

- वर्ष भर रासायनिक और कृषि आदानों की खरीद के लिए इनपुट लागत में कमी और बाहरी आदानों पर निर्भरता कम किया।
- पारंपरिक खेती की तुलना में प्राकृतिक खेती के माध्यम से गेहूं, मेथी, धनिया, अलसी, उड़द, मूंग, मक्का और चना आदि की अधिक उपज दर्ज की गई।
- उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार और प्राकृतिक उत्पादों ने उच्च मूल्य अर्जित किया।
- बेहतर मृदा स्वास्थ्य, मिट्टी की जैविक कार्बन मात्रा 0.39% से बढ़कर 0.68% हो गई। मिट्टी में केंचुओं की अधिक आबादी और लाभकारी मृदाजीवाणु पाए गए।
- प्राकृतिक खेती अपनाने के बाद पक्षियों, लाभकारी कीटों, परभक्षियों और परजीवियों की संख्या में वृद्धि देखी गई।
- वित्तीय वर्ष 2017-18 में राजस्थान सरकार से ग्राम कार्यक्रम में "जैविकखेती" पर विशेष पुरस्कार और 7 से 9 फरवरी, 2020 के दौरान आयोजित इंदौर चैप्टर द्वारा 'ऑर्गेनिक एक्सपो अवार्ड, 2020' प्राप्त किया।
- पीएनबीएफटीसी, झालरापाटन (झालावाड़) द्वारा जैविक खेती पर प्रशंसा पुरस्कार प्राप्त किया।सीआरआई पंप्स एंड एग्रीकल्चर टाइम्स, जयपुर द्वारा नगरपालिका, भवानी मंडी और धरती-पुत्र पुरस्कार प्राप्त किया ।
- जल शक्ति अभियान के तहत केवीके, कोटा द्वारा जैविक खेती पर प्रशंसा पुरस्कार प्राप्त किया।

स्रोत: *कृषि विज्ञान केंद्र, झालावाड़*

श्रीधन्ना राम

ग्राम : नादोल

तहसील : देसूरी

जिला : पाली

मोबाइल नं. : 9660857108

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- वर्ष 2008 से प्राकृतिक खेती को अपनाया और जौ, सरसों, मूंग, तिल और सब्जियाँ जैसेकि भिंडी, टमाटर, मिर्च आदि फसलों की खेती की।
- छिड़काव के लिए वर्मीकम्पोस्ट, छाछ, राख और वेस्ट डीकंपोजर का प्रयोग किया।
- वर्ष 2008 में 4 क्यारियों में एक वर्मीकम्पोस्ट इकाई की स्थापना की और प्रति वर्ष 40 क्विंटल वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन कर रहे हैं।
- अपने खेतों के लिए पिछले 4 वर्षो से वेस्टडीकम्पोजर का उपयोग कर रहे हैं। वह इसे पड़ोसी किसानों को भी मानवता के आधार पर मुफ्त में प्रदान कर रहे हैं तथा उन्हें इसे तैयार करने के साथ ही इसका उपयोग करना सिखा रहे हैं।
- सभी फसलों और सब्जियों के पौधों का बचाव करने के लिए 1:5 के अनुपात में 20-25 दिन पुराने छाछ का उपयोग किया।
- सिंचाई पर भिंडी, टमाटर, मिर्च आदि सब्जियों की फसल की मल्चिंग के लिए प्लास्टिक का उपयोग किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदण्ड	प्राकृतिक खेती (1हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	सरसो (सितारा)	सरसो
खेती की लागत (रु.)	38530	41743
उत्पादन (कुंटल)	16.4	14.1
कुल लाभ (रु.)	73800	56400
शुद्ध लाभ (रु.)	35270	14657
लाभ: लागत अनुपात	1.92	1.35

लाभ और उपलब्धियां

- रसायनों और अन्य हानिकारक आदानों पर लागत की बचत।
- फसलों के बचाव और वृद्धि के लिए प्राकृतिक रूप से उपलब्ध आदानों का उपयोग किया।

स्रोत: भाकृअनुप-कजरी कृषि विज्ञान केंद्र, जोधपुररोड़, पाली-मारवाड़, राजस्थान

श्री हंसराज मीना

गांव	:	परपति
ब्लॉक	:	अकलेरा
जिला	:	झालावाड़
राज्य	:	राजस्थान
संपर्क नं.	:	9950255242
शिक्षा	:	10वीं

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- वर्ष 2015 से प्राकृतिक खेती को अपनाया और गेहूं, मक्का, संतरा, धनिया, सरसों, मसाले, अलसी, उड़द, मूंग, प्याजऔर लहसुन की खेती की।
- प्राकृतिक खेती के तहत जौ, बरसीम, सरसों, सब्जियां और उड़द जैसी एकल फसल की भी खेती की ।
- वर्मीवाश, जीवामृत, बीजामृत और वनस्पतिकाढ़ा तैयार किया और उपयोग किया।
- बीज और मृदा उपचार के लिए ट्राइकोडर्मा के साथ-साथ कीटों और रोगों के प्रबंधन के लिए नीम की खली का उपयोग किया ।
- फसलों में निराई-गुड़ाई एवं मल्चिंग करके खरपतवार की सघनता को कम किया।
- 5 देसी गायों और एक बकरी को पाला।
- किसान प्रशिक्षण, किसान मेला, गोष्ठी, प्रदर्शन में भाग लिया।
- तकनीकी प्रचार-प्रसार के लिए आईसीटी साधनों का उपयोग किया।
- किसानों और ग्रामीण युवाओं के लिए प्रशिक्षण आयोजित किया और लाइव प्रदर्शनों के द्वारा कृषक समुदायों को लाभान्वित किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	गेहूं (राज 4079)	गेहूं (राज 4079)
खेती की लागत(रु.)	30850	36400
उत्पादन (कुंटल)	42 (दर 3450/- प्रति कुंटल)	42.8 (दर 1900/- प्रति कुंटल)
कुल लाभ (रु.)	144900	81320
शुद्ध लाभ (रु.)	114050	44920
लाभ लागत अनुपात	3.7	1.2

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी, जिससे टिकाऊ कृषि पद्धतियों के साथ शुद्ध लाभ में वृद्धि हुई।

- मृदा उर्वरता में वृद्धि और फसल उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार।
- बेहतर मृदा कार्बनिक पदार्थ और लाभकारी मृदा जीवाणु।
- फसल अवशेष और खेत की अपशिष्टों का उपयोग किया ।
- वर्ष 2018 में राजस्थान सरकार से "जैविक खेती" पर एक विशेष पुरस्कार प्राप्त किया।

स्रोत: *कृषि विज्ञान केंद्र, झालावाड़*

श्री हरिओम चौधरी

गांव : बागावास

तहसील : सोजत

जिला : पाली

मोबाइल नं. : 9079830871

अपनाई गईं पद्धतियां

- 1990 में प्राकृतिक खेती को अपनाया और तब से प्राकृतिक खेती के माध्यम से मेंहदी की खेती कर रहे हैं।
- पशुधन आधारित जैविक बागवानी प्रणाली को अपनाया, जिसमें पशुधन मेंहदी के खेतों के लिए मूल्यवान खाद प्रदान करने के अलावा नियमित आय प्रदान करता है।
- स्वयं के बनाए फार्मूले का उपयोग करके कीटों और कीड़ों को नियंत्रित किया।
- खरपतवार को नियंत्रित करने के लिए बैलों के साथ एक गुड़ाई करके मृदा सुधार।
- प्रति वर्ष मृदा सुधार के लिए वर्षा के दौरान जिप्सम का उपयोग किया, क्योंकि मृदा खारी और क्षारीय है।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती के बीच तुलना

मापदण्ड	प्राकृतिक खेती (1हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	मेंहदी	मेंहदी
खेती की लागत (रु.)	46800*	66000
मेंहदी के लिए दूसरे वर्ष के बाद आगे की रखरखाव लागत	14500	19900
उत्पादन (कुंटल)	7.50	8.00
कुल लाभ (रु.)	60000	64000
शुद्ध लाभ (रु.)	45500	44100
लाभ-लागत अनुपात	4.14	3.21

** मेंहदी की प्रारंभिक रोपाई लागत*

लाभ और उपलब्धियां

- प्राकृतिक कृषि पद्धति के तहत मेंहदी के पौधे कीड़ों, कीटों और रोगों के लिए अधिक कठोर और प्रतिरोधी होते हैं।
- उत्पादित मेंहदी की कीमत अधिक होती है क्योंकि यह रंग में अधिक गहरी होती है, जिसमें ओलियोरेसिन अधिक होता है।

स्रोत: *आईसीएआर-सीएज़ेडआरआई कृषि विज्ञान केंद्र, पाली*

पद्मश्री हुकमचंद पाटीदार

गांव : मनपुरा, डाक-लावासल

ब्लॉक : असनावर

जिला : झालावाड़

राज्य : राजस्थान 326021

संपर्क नं. : 9461951154

शिक्षा : 9वीं

अपनाई गईं पद्धतियां

- 2004 में प्राकृतिक खेती को अपनाया और बीज मसाले (धनिया, मेथी और सौंफ), हल्दी, उड़द, मूंग, गेहूं, मैंडारिन और पपीता की खेती की।
- जीवामृत, बीजामृत, वर्मीवाश, घनजीवामृत, नीमास्त्र और ह्यूमिक एसिड जैसे प्राकृतिक कृषि आदानों का उपयोग किया।
- बीज उपचार के लिए बीजामृत, कीट नियंत्रण के लिए दशपर्णी अर्क और पौधों के लिए पोषक पूरक के रूप में घनजीवामृत का उपयोग किया।
- निराई-गुड़ाई पद्धतियां, रेत पलवार और फसल अवशेष पलवार के माध्यम से खरपतवार का नियंत्रण किया।
- खेती में जैविक स्रोतों को अपनाया जैसे खाद, हरी खाद, जैव-उर्वरक, स्वनिर्मित जैव-कीटनाशक, नाइट्रोजन स्रोत के रूप में गोमूत्र का छिड़काव और फसलों के कीटों और रोगों का नियंत्रण।
- रोशनी, पीली व नीली चिपचिपी एवं फेरोमोन ट्रैपों, एचएएनपीवी, ट्रैकोडर्मा, ट्रैको कार्ड्स, सूक्ष्म सिंचाई तकनीक, नीम, धतूरा, तंबाकू, लहसुन आदि वनस्पतिक कीटनाशकों का उत्पाद और उपयोग किया।
- जैविक बीज उत्पादन को अपनाया।
- वर्मी कम्पोस्ट यूनिट (10 बेड़ की संख्या), वनस्पतिक काढ़ा यूनिट और एफवाईएम पिट की स्थापना की।
- 06 देसी गायों और उन्नत नस्ल की भैसों को पाला।
- किसान मेला, गोष्ठी, किसानों के प्रदर्शन दौरे, प्रदर्शनियों और मंचों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती के बीच तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	धनिया	धनिया
खेती की लागत (रु.)	18800	28600
उत्पादन (कुंटल)	16.2 (13000/- रु. प्रति क्विं. दर)	17.6 (8000/- रु. प्रति क्विं. दर)
कुल लाभ (रु.)	210600	140800
शुद्ध लाभ (रु.)	191800	112200
लाभ लागत अनुपात	10.2	3.9

लाभ और उपलब्धियां

- मृदा स्वास्थ्य में सुधार। मिट्टी में जैव कार्बन घटक में 1.0 % तक की वृद्धि।
- जुताई की गई मिट्टी में केंचुए और लाभकारी मृदा सूक्ष्मजीव अधिक मात्रा में पाए गए।
- इनपुट लागत में कमी और वर्ष भर कृषि-रसायनों और कृषि-आदानों के लिए बाहरी अदानों ं पर निर्भरता को कम किया।
- धनिया, मेथी, गेहूं, उड़द, मक्का, काबुली चना आदि की उपज में वृद्धि हुई ।
- उपज की गुणवत्ता में सुधार जिससे बाज़ार में उच्च मूल्य प्राप्त हुआ।
- प्राकृतिक खेती को अपनाने के बाद फसल के क्षेत्र में पक्षियों, मृदा सूक्ष्मजीवों, लाभकारी कीटों, परभक्षियों और परजीवों की संख्या में वृद्धि हुई।
- 2008 में 120 किसान सदस्यों के साथ"*अक्षय जैविक कृषक संस्थान, मनपुरा*"का गठन किया। वे झालावाड़, बारां, बाड़मेर, कोटा, बूंदी और जैसलमेर जैसे विभिन्न जिलों के 33 गांवों में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दे रहे हैं।वर्ष 2014 में, देश के विभिन्न भागों से 185 किसानों के साथ जैविक किसानों के लिए राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जिसे "भारतीय किसान संघ" द्वारा प्रायोजित किया गया था।
- मास्टर प्रशिक्षक के रूप में वर्ष 2016-17 में पंडित दीन दयाल उन्नत कृषि शिक्षा योजना के तहत 5 प्रशिक्षण आयोजित करने के लिए आईसीएआर, नई दिल्ली की ओर से 5.0 लाख रुपए की राशि प्राप्त की और उन्होंने विभिन्न स्थानों के 250 किसानों को प्रशिक्षित किया।
- 2011-12 के दौरान एटीएमए, डीओए, झालावाड़ की ओर से जिला स्तरीय सर्वश्रेष्ठ किसान पुरस्कार प्राप्त किया।
- प्राकृतिक खेती में योगदान के लिए जिला कलेक्टर द्वारा प्रशंसा पुरस्कार (15-8-2012)प्राप्त किया ।
- पाथेय कण जागृत ग्राम पुरस्कार (2009-10) प्राप्त किया ।
- 31 मार्च 2012 में आमिर खान द्वारा आयोजित *सत्यमेव जयते* कार्यक्रम में आए।
- वर्ष 2019 में भारत सरकार द्वारा "पद्म श्री पुरस्कार" से पुरस्कृत।
- 13 जुलाई 2019 में आईसीएआर-एनएएससी कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली में राजस्थान के प्रगतिशील किसानों के लिए आयोजित विचार मंथन (ब्रेन स्टॉर्मिंग) सत्र और "अभिनव किसान समूह बैठक" में भाग लिया।
- श्रीलंका, जापान जैसे विदेशों में अपनी उपज का निर्यात करके खुद को एक प्रमुख उद्यमी के रूप में साबित किया।फ्रांस, जापान, श्रीलंका एवं इज़राइल के आयातकों के प्रतिनिधियों ने उनके फार्म का दौरा किया है।

स्रोत: *कृषि विज्ञान केंद्र,झालावाड़*

श्री कन्हैया लाल

गांव	:	साड़ला
ब्लॉक	:	मनोहर थाना
जिला	:	झालावाड़
राज्य	:	राजस्थान
संपर्क नं.	:	9928814630
शिक्षा	:	10वीं

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- वर्ष 2012 से प्राकृतिक खेती को अपनाया और गेहूं, मक्का, धनिया, सरसों, मेथी, टमाटर, मिर्च, मसाले, अलसी, चना, उड़द, मूंग, प्याजऔर लहसुन की खेती की।
- वर्मीवाश, जीवामृत, बीजामृत, नीमास्त्र और वनस्पतिकाढ़ा का उपयोग किया।
- बीज और मृदा उपचार के लिए ट्राइकोडर्मा, जीवामृत और बीजामृत का उपयोग किया।
- एक वर्मीकम्पोस्ट इकाई और एक वनस्पतिकाढ़ा इकाई, एक अपशिष्ट डीकंपोजर इकाई, एक एजोला इकाई और एक एफवाईएम पिट की स्थापना की।
- खरपतवार की तीव्रता और वाष्पीकरण को कम करने के लिए पुआल और धूल पलवार का प्रयोग किया।
- 5 देसी गायों और भैंसों को पाला।
- किसान प्रशिक्षण, किसान मेला, किसान गोष्ठी, प्रदर्शन यात्राओं, प्रदर्शनियों और मंचों में भाग लिया।
- बड़ी संख्या में किसानों और ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षण और प्रायोगिक ज्ञान प्रदान किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	मक्का	मक्का
खेती की लागत(रु.)	23200	29500
उत्पादन (कुंटल)	36.5 (2550/- दर प्रति कुंतल)	37.5 (1850/- दर प्रतिकुंतल)
कुल लाभ (रु.)	93075	69375
शुद्ध लाभ (रु.)	69875	39875
लाभ लागतअनुपात	3.0	1.35

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी, साल भर आय के साथ उच्च लाभ अर्जित किया।
- मृदा स्वास्थ्य में सुधार के साथ फसल उत्पादन की गुणवत्ता में वृद्धि।

- केंचुओं और लाभकारी मृदाजीवाणुओं की संख्या में वृद्धि।
- कृषि अवशेषों और कृषि उपोत्पादों के अपशिष्ट का कुशलतापूर्वक उपयोग किया।
- 2018 में राजस्थान सरकार से "जैविक खेती" पर विशेष पुरस्कार प्राप्त किया।

स्रोत: कृषि विज्ञान केंद्र, झालावाड़

श्री मांगी लाल

गाँव : अरतिया
तहसील : रोहट
जिला : पाली
मोबाइल सं. : 9982142975

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 2000 में प्राकृतिक खेती पद्धतियों को अपनाया।
- न्यूनतम जुताई का अभ्यास करते हैं; और मिट्टी की नमी को संरक्षित करने के लिए बारिश के बाद केवल एक बार जुताई करते हैं।
- बिना किसी मशीनरी या डीजल चालित उपकरणों के उपयोग के, बैलों की मदद से जुताई की जाती है।
- खेत की सीमा पर लगाए गए पौधे जिन्होने मृदा को बेहतर बनाने के अलावा अनुकूल माइक्रॉ क्लाइमेट प्रदान किया।
- जड़ पिंडों के माध्यम से नाइट्रोजन स्थिरीकरण द्वारा मिट्टी को समृद्ध करने के लिए दालों की खेती की।
- कम नमी की आवश्यकता वाली भूमि में काबुली चने की खेती की।
- कीड़ों, कीटों और मिट्टी से होने वाली बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए रसोई से राख का छिड़काव किया और कीटनाशकों से बचाव किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	काबुली चना	काबुली चना
खेती की लागत (रु.)	17000	25000
उत्पादन (कुंटल)	17.5	15.0
कुल लाभ (रु.)	87500	75000
शुद्ध लाभ (रु.)	70500	50000
लाभ : लागत अनुपात	4.14	2.0

लाभ और उपलब्धियां

- कम इनपुट लागत।
- पौष्टिक और स्वादिष्ट खाद्यान्न।
- यह अभ्यास पर्यावरण के अनुकूल साबित हुआ।

स्रोत: *आईसीएआर-सीएज़ेडआरआई कृषि विज्ञान केंद्र, पाली*

श्रीमनोहर लाल

ग्राम : सिंधियों की धानी,
तहसील : ओसियन
जिला : जोधपुर
मोबाइल नं. : 9784112184

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- वर्ष 2016 में प्राकृतिक कृषि पद्धतियों को अपनाया और तब से प्राक्रतिक गेहूं, सरसों और सब्जियों की खेती कर रहेहैं।
- प्राक्रतिक पद्धतियों का उपयोग करते हुए वर्ष 2019 में 2 हेक्टेयर भूमि पर अनार के पौधे लगाए।
- सिंचाई के पानी के साथ फर्टीगेशन से जीवामृत (सामग्री: 10लीटर गौमूत्र, 20 किलो गोबर, 2 किलो बेसन, 2 किलो मिट्टी और 1 किलो सरसों की खली का मिश्रण) का उपयोग किया।
- सूक्ष्म पोषक तत्व का उपयोग किया- 2 किलो अनाज का आटा (गेहूं, जौ, बाजरा, मक्का), दलहन (मूंग, मोठ, लोबिया और काबुली चना), तिलहन (तिल, सरसों, मूंगफली और अरंडी), हल्दी 250 ग्राम, सेंधा नमक 500 ग्राम, गाय के उपले की राख 1 किलो और गुड़ 2 किलो प्लास्टिक के ड्रम में 100लीटर पानी + 100लीटर वेस्ट डीकंपोजर के साथ मिलाया। 21 दिनों के बाद इस घोल को स्प्रे के रूप में और ड्रिप सिंचाई पद्धति के माध्यम से उपयोग किया।
- 200 लीटर वेस्ट डीकंपोजर के साथ विभिन्न रंगीन पत्थरों से प्राप्त अर्क का उपयोग किया।
- कुक्कुट खाद और बकरी खाद तैयार किया।
- ट्राइकोडर्मा का उपयोग किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदण्ड	प्राकृतिक खेती (1हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1हेक्टेयर)
फसल	गेहूं (खर्चिया)	गेहूं (राज 3077)
खेती की लागत (रु.)	48247	45772
उत्पादन (कुंटल)	37.7	30.2
कुल लाभ (रु.)	75568	51940
शुद्ध लाभ (रु.)	27321	6168
लाभ लागत अनुपात	0.57	0.13

लाभ और उपलब्धियां

- रसायनों और अन्य हानिकारक आदानों पर लागत की बचत।
- फसलों के बचाव और वृद्धि के लिए प्राकृतिक रूप से उपलब्ध आदानों का उपयोग किया।

स्रोतः *भाकृअनुप-कजरी कृषि विज्ञान केंद्र, जोधपुररोड़, पाली-मारवाड़, राजस्थान*

श्रीमती मेघा पालिवाल

गांव : कनवाड़ा

ब्लॉक : झालरापाटन

जिला : झालावाड़

राज्य : राजस्थान

संपर्क नं. : 9928673644 एवं 7976283810

शिक्षा : स्नातक

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- वर्ष 2016 से प्राकृतिक खेती को अपनाया और गेहूं, धनिया, मक्का, सरसों, अलसी, पपीता, बेर, उड़द, मूंग और लहसुन की खेती की। जौ, चारा फसलें, बरसीम, गन्ना और चना जैसी एकल फसल की भी खेती कर रही है।
- कीट और रोगों के नियंत्रण के लिए, बीज और मृदा उपचार के लिए जैव सामग्रियों का उपयोग किया।
- वर्मीवाश, वर्मीकल्चर, जीवामृत, बीजामृत और नीमास्त्र का उपयोग किया।
- एक वर्मीकम्पोस्ट इकाई, एक वनस्पतिकाढ़ा इकाई, एक फल काढ़ा इकाई और एक एफवाईएम पिट की स्थापना की।
- फसल अवशेषों का उपयोग किया और कोई बाहरी अदानों का प्रयोग नहीं किया।
- चक्रीय अर्थव्यवस्था के सिद्धांत का पालन किया, 11 देसी गायों और भैंसों के उत्पादों का उपयोग कृषि में किया।
- बड़ी संख्या में किसानों को प्रशिक्षण प्रदान किया, विशेष रूप से महिला किसानों की क्षमता निर्माण के लिए प्रशिक्षण दी।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	गेहूं	गेहूं
खेती की लागत(रु.)	27350	36400
उत्पादन (कुंटल)	40(3500/- दर प्रतिकुंतल)	41 (1900/- दर प्रतिकुंतल)
कुल लाभ (रु.)	140000	77900
शुद्ध लाभ (रु.)	112650	41500
लाभ लागत अनुपात	4.1	1.1

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत को कम किया।
- बाजार से कृषि आदानों की खरीद के लिए कम निर्भरता।
- केंचुओं और मृदा सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि।
- मिट्टी और फसल उत्पाद दोनों की गुणवत्ता में सुधार।

- स्थायी रूप से नियमित आय अर्जित करके उच्च लाभ अर्जित किया।
- प्रदर्शनों का आयोजन कर व्यापक रूप से कृषक समुदाय को लाभान्वित किया।

स्रोत: *कृषि विज्ञान केंद्र, झालावाड़, राजस्थान*

उत्तर प्रदेश

श्री अमित वर्मा

गांव : पसियापुरजानूबी

डाकघर : अजीत पुर

जिला : रामपुर

संपर्क सं. : 8178669689

शिक्षा : बी. टेक, एमबीए –विपणन

ई-मेल : rampurkrishak2020@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां:

- 2018 से प्राकृतिक खेती कर रहे हैं और 2021 तक काला गेहूं (10 हे),मोरिंगा (2 एकड़), हरी मिर्च और शिमला मिर्च (2 एकड़), पीली सरसों, अलसी बीज एवं तिल (5 एकड़), गन्ना (5 एकड़), कुल्थी (1 एकड़) और हल्दी (1 एकड़) की खेती की।
- प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए अन्य किसानों को प्रोत्साहित किया।
- एक खाद्य प्रसंस्करण केंद्र (एफपीसी) स्थापित किया और 'रामपुर कृषक' ब्रांड के नाम से खाद्य प्रसंस्करण,पैकेजिंग, विपणन एवं ब्रैंडिंग जैसे विभिन्न इन-हाउस कार्य संचालित कर रहे हैं।
- एफपीसी के साथ जुड़ने के लिए साथी किसानों को प्रोत्साहित किया।
- केवल एफपीओ के माध्यम से प्राकृतिक उत्पाद बेचते हैं।
- एफपीओ चैनल के माध्यम से गुणकारी, प्राकृतिक खाद्य उत्पादों को बढ़ावा दिया।
- प्रिज़र्वेटिव (परिरक्षक) का उपयोग किए बिना प्राकृतिक कृषि उत्पादों से गुणकारी, पौष्टिक खाद्य पूरक तैयार किया और महिलाओं और बच्चों को उपलब्ध कराया।
- आहार से उपचार कार्यक्रम के तहत कुपोषण के उपचार के लिए कार्य करते समय 2200 पूरक किट का वितरण किया। ' आहार से उपचार कार्यक्रम ' का प्रमुख लक्ष्य देश भर में प्राकृतिक कृषि-खाद्य उत्पादों के माध्यम से कुपोषण का उन्मूलन करना है।
- किसानों को आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बनाने का लक्ष्य रखा। एफपीओ के माध्यम से, किसानों को एक बाज़ार उपलब्ध कराया जहाँ वे अपने उत्पादों को सीधे बेच रहे हैं।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

परिमाण	प्राकृतिक खेती (2हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (2 हेक्टेयर)
फसल	गन्ना	गन्ना
खेती की लागत (रु.)	175000	200000
उत्पादन (कुंटल)	2500	2500
कुल लाभ (रु.)	1250000	875000
शुद्ध लाभ (रु.)	1100000	787500
लाभ-लागत अनुपात	6.28	3.93

लाभ और उपलब्धियां

- प्राकृतिक खेती के तहत मधुमक्खी पालन के माध्यम से शहद उत्पादन के लिए मधुमक्खियों के बारे में प्रचार-प्रसार किया।
- केंचुओं की बढ़ती संख्या के कारण मृदा उर्वरता में सुधार पर ध्यान दिया।
- प्राकृतिक खेती के माध्यम से उगाई जाने वाली फसलें कीड़ों के प्रति अधिक प्रतिरोधी होती हैं।
- रासायन मुक्त उपज।
- खेती की लागत कम की।
- विभिन्न ग्राहकों से उत्पादों के लिए अग्रिम खरीद ऑर्डर प्राप्त किए।
- आईसीएआर द्वारा सर्वश्रेष्ठ उभरते एफपीओ 2020-21 के लिए विशेष मान्यता पुरस्कार प्राप्त किया।
- कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा विशेष मान्यता पुरस्कार प्राप्त किया।
- कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा सम्मानित।

स्रोत: *कृषि विज्ञान केंद्र,रामपुर*

श्री अवधेश प्रताप सिंह

ग्राम : साकिन

ब्लाक : मोठ

जिला : झांसी

राज्य : उत्तर प्रदेश

सम्पर्क नं. : 8948197631

शिक्षा : कृषि में इंटरमीडिएट

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- वर्ष 2012 से प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- खरीफ के मौसम में धान (पूसा बासमती-1) तथा मेंथा और रबी के मौसम में गन्ना, गेहूं, चना, मटर, मसूर और सरसों की खेती की गई।
- विभिन्न प्राकृतिक कृषि आदानों जैसे जीवामृत, घनजीवमृत, बीजामृत नीमास्त्र, ब्रम्हास्त्र और दशपर्णी अर्क का उपयोग किया।
- फलों के साथ फसलों का एकीकरण किया।
- अन्य किसानों के लिए बीज बैंक की स्थापना की।
- मार्केटिंग के लिए आईसीटी टूल्स का उपयोग किया तथा विभिन्न कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों में भाग लिया।
- अपने खेत को दिखाकर सहयोगी किसानों का उत्साहवर्धन किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदण्ड	प्राकृतिक खेती (हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (हेक्टेयर)
फसल	सुगंधित धान (पी बी 1)	सुगंधित धान (पूसा 1121)
खेती की लागत (रु.)	25000	35000
उत्पादन (कुंटल)	50	45
कुल लाभ (रु.)	335000	241200
शुद्ध लाभ (रु.)	297500	206200
लाभ-लागत अनुपात	11.9	5.9

लाभ और उपलब्धियां

- आदान लागत और श्रम लागत में कमी के परिणामस्वरूप खेती की कुल लागत न्यूनतम हुई।
- आय में व्रद्धी हुई।
- मिट्टी और उपज की गुणवत्ता में सुधार हुआ।
- प्रति माह लगभग 10-15 किसानों को लाभ पहुँचाया।

- चंद्र शेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्यौगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा डॉक्टरेट ऑफ फार्मर्स अवार्ड से सम्मानित।
- उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कृषि पंडित पुरस्कार से सम्मानित।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा "अभिनव किसान पुरस्कार" से सम्मानित किया गया।

स्रोत: चंद्र शेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्यौगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर

पदमश्री डॉ. भारत भूषण त्यागी

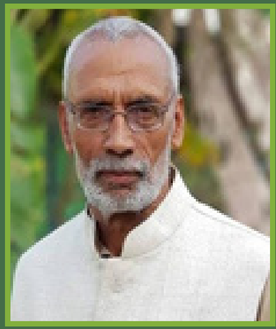

ग्राम : बेहता
मंडल : मेरठ
जिला : बुलंदशहर
संपर्क नंबर : 08755449866
योग्यता : बीएससी दिल्ली विश्वविद्यालय

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 1997 से साहा अस्तित्व मूलक अवरतन शील कृषि (समक) खेती के रूप में प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- 8 एकड़ कृषि क्षेत्र में से 4 एकड़ में आम का बाग विस्तारित है और शेष 4 एकड़ में बहु-स्तरीय उत्पादन के लिए गन्ना, हल्दी, गेहूं, धान, अलसी, सब्जियां, चारा फसल, लकड़ी के पौधे, नींबू घास, शतावरी, बांस, आम और अमरूद इत्यादि जैसी कई फसलें कोम्प्लिमेंटरी फसल प्रणाली के जरिये उगाई ।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (0.4 हेक्टेयर)	पारम्परिक खेती (0.4 हेक्टेयर)
फसल	गन्ना, हल्दी,सरसो, अलसी	गन्ना
खेती की लागत(रु.)	6400	24500
उत्पादन (क्विंटल.) और आय	गन्ना–300 हल्दी–40 सरसो–3 अलसी–3	350q
सकल प्रतिलाभ (रु.)	253000	122500
निवल प्रतिलाभ (रु.)	246600	98000
बीसी अनुपात	38	4

लाभ और उपलब्धियां

- 2 से 3 वर्षों में मृदा कार्बन को 0.4 से 1.2 तक बढ़ाया और पीएच और ईसी में संतुलन हासिल किया।
- ऊपरी मिट्टी के भौतिक और रासायनिक गुणों में सुधार हुआ और लाभकारी रोगाणुओं और केंचुओं की संख्या में वृद्धि हुई ।
- मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि हुई ।
- कई फसलों की खेती के माध्यम से खेत में मधुमक्खियां, छोटे पक्षियों जैसे लाभकारी कीड़ों की संख्या में वृद्धि हुई ।
- फसलों को सूखे की स्थिति और जलवायु परिवर्तन के लिए प्रतिरोधी बनाया।

- खेती की लागत कम हुई |
- उपज और उपज की गुणवत्ता में सुधार हुआ ।

***स्रोत:** कृषि विज्ञान केंद्र बुलंदशहर*

श्री हिमांशु गंगवार

ग्राम : कुइयां धीर
ब्लाक : शम्साबाद
जिला : फर्रुखाबाद
राज्य : उत्तर प्रदेश
सम्पर्क नं. : 9935828092
शिक्षा : बी.टेक. (मैकेनिकलइंजी.)

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- वर्ष 2010 से देसी गाय पर आधारित प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- गन्ने की खेती की और हल्दी, मूंग और उड़द की फलियों को अंतर फसल के रूप में उगाया।
- प्राकृतिक गुड़ बनाकर विभिन्न स्थानों पर उसका विपणन किया।
- पोषक तत्वों के पूरक के रूप में जीवामृत और घनजीवमृत जैसे प्राकृतिक कृषि आदानों, कीटों और रोगों को नियंत्रित करने के लिए दशपर्णी अर्क और बीज उपचार के लिए बीजामृत का उपयोग किया किया।
- पानी की मांग और खरपतवार की अधिकता को कम करने के लिए फसल अवशेषों को पलवार के रूप में प्रयोग किया।
- विपणन के लिए आईसीटी तकनीक का प्रयोग किया।
- कार्यशालाओं, प्रदर्शनियों और मंचों में भाग लिया।
- कृषि प्रदर्शन दिखाकर अन्य किसानों को ज़ेड्बीएनएफ के बारे में प्रोत्साहित किया।

प्राकृतिक और पारम्परिक खेती में तुलना

मानदण्ड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	गन्ना	गन्ना
खेती की लागत (रु.)	गन्ना–57500 गुड़ का प्रसंस्करण शुल्क- 100000	80000
उत्पादन (कुंतल)	700	425
कुल लाभ (रु.)	595000	195000
शुद्ध लाभ (रु.)	437500	115000
लाभ:लागत अनुपात	2.78	1.43

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी।
- श्रम लागत में कमी।

- मिट्टी और उपज की गुणवत्ता में सुधार।
- मिट्टी में केंचुओं की संख्या में वृद्धि।
- अधिक लाभ कमाया और रोजगार के अवसर पैदा किए।
- बड़े पैमाने पर किसानों को लाभ पहुँचाया।
- फर्रुखाबाद में एक प्राकृतिक कृषि समूह का गठन किया।

स्रोत: *चंद्र शेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर*

श्री लक्ष्मी शंकर

ग्राम : पुरौना
ब्लाक : बीघापुर
जिला : उन्नाव
राज्य : उत्तर प्रदेश
सम्पर्क नं.. : 9519182059
शिक्षा : बी.ए.

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 4.0 एकड़ कृषि भूमि में वर्ष 2017 से प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- खरीफ मौसम की फसल में चावल (पूसा बासमती-1) और रबी की फसल में गेहूं और सरसों की खेती की।
- पोषक तत्वों की खुराक के रूप में जीवामृत और घनजीवामृत जैसे प्राकृतिक आदानों का प्रयोग, बीज उपचार के लिए बीजामृत और कीटों और रोगों को नियंत्रित करने के लिए नीमास्त्र, ब्रम्हास्त्र और दशपर्णी अर्क का उपयोग किया।
- प्राकृतिक खेती के लिए उपयुक्त बीज बैंक स्थापित किया।
- चावल बेचने से पूर्व धान का प्रसंस्करण किया।
- विपणन के लिए आईसीटी तकनीक का प्रयोग किया।
- प्रदर्शनियों और मंचों में भाग लिया।
- कृषि प्रदर्शनों के माध्यम से अन्य किसानों को लाभ पहुँचाया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मानदण्ड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	धान (पीबी-1)	धान (शरबती)
खेती की लगत (रु.)	20000	28000
उत्पादन (कुंटल)	40	42
कुल लाभ (रु.)	96000	84000
शुद्व लाभ (रु.)	76000	56000
लाभ-लागत अनुपात	3.8	2

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी।
- मिट्टी और कृषि उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार।
- मिट्टी में केंचुओं की संख्या में वृद्धि।
- उच्च आय अर्जित की।

स्रोत: चंद्र शेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर

श्री राजीव लोचन शुक्ला

ग्राम : तेरहा
ब्लाक : बीघापुर
जिला : उन्नाव
राज्य : उत्तर प्रदेश
सम्पर्क नं. : 9793915842
शिक्षा : 12वीं

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- वर्ष 2017 से 4 एकड़ के पूरे क्षेत्र में प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- खरीफ मौसम की फसल में धान (स्थानीय किस्म–मोती) और रबी मौसम की फसल में गेहूं और सरसों की खेती की।
- जीवामृत और घनजीवामृत तैयार किया और पोषक तत्वों के पूरक के रूप में उपयोग किया।
- बीज उपचार के लिए बीजामृत और कीट और रोगों को नियंत्रित करने के लिए नीमास्त्र, ब्रम्हास्त्र और दशपर्णी अर्क तैयार किया।
- चावल बेचने से पूर्व धान का प्रसंस्करण किया।
- विपणन के लिए आईसीटी तकनीक का प्रयोग किया।
- प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं और मंचों में भाग लिया।
- प्रदर्शन कर अन्य किसानों को प्राकृतिक खेती के प्रति आश्वस्त किया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मानदण्ड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	धान (शंबा मसूरी)	धान (पूसा -1121)
खेती की लगत (रु.)	25000	33500
उत्पादन (कुंटल)	40	38
कुल लाभ (रु.)	100000	75544
शुद्ध लाभ (रु.)	75000	42044
लाभ-लागत अनुपात	3	1.2

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी।
- समय और श्रम लागत में कमी।
- उच्च आय अर्जित की।

- मिट्टी और कृषि उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार।
- मिट्टी में केंचुओं की संख्या में वृद्धि।
- प्राकृतिक खेती के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करके अनेकों किसानों को लाभ पहुंचाया।

स्रोत: *चंद्र शेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर*

श्री राकेश सिंह यादव

गाँव : बारा

खंड : बीघापुर

जिला : उन्नाव

राज्य : उत्तर प्रदेश

संपर्क नंबर : 9451108940

शिक्षा : बी.ए.

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- वर्ष 2017 से गाय आधारित प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- खरीफ के मौसम में मक्का, अरहर, हल्दी और अरबी की खेती की और रबी के मौसम में गेहूं, सरसों और आलू की खेती की।
- जीवामृत और घनजीवामृत आदि जैसे प्राकृतिक कृषि अवयवों को तैयार किया और उपयोग किया।
- बीज उपचार के लिए बीजामृत और कीटों तथा रोगों को नियंत्रित करने के लिए नीमास्त्र, ब्रम्हास्त्र और दशपर्णी का उपयोग किया।
- विपणन के लिए आईसीटी तकनीक का प्रयोग किया।
- ब्लॉक स्तर पर उपज की बिक्री की।
- उन्नाव जिले में प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के समूह का नेतृत्व किया।
- प्रदर्शनियों और मेलों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मानदण्ड	प्राकृतिक खेती (हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (हेक्टेयर)
फसल	धान (शंबा मसूरी)	धान (पूसा -1121)
खेती की लगत (रु.)	22500	28000
उत्पादन (कुंटल)	38	33
कुल लाभ (रु.)	75544	56100
शुद्ध लाभ (रु.)	53044	28100
लाभ-लागत अनुपात	2.4	1

लाभ और उपलब्धियां

- आदान लागत को कम करके खेती की लागत को कम किया।
- समय की बचत की।
- मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार और मिट्टी में केंचुओं की संख्या में वृद्धि हुई।

- उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार हुआ।
- उच्च आय अर्जित की।
- प्रति माह लगभग 10-15 किसानों को लाभ पहुँचाया।

स्रोत: *चंद्र शेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर*

श्री राम गोपाल सिंह चंदेल

ग्राम : बरसावन

जिला : रायबरेली

मंडल : लखनऊ

राज्य : उत्तर प्रदेश

सम्पर्कनं. : 8299865259

शिक्षा : एमए (समाजशास्त्र)

ईमेल : kvk.raebareli1984@gmail.com

अपनाई गईं कृषि पद्धतियां

- धान, गेहूं, सरसों, चना आदि फसलें एवं आंवला, आम, मौसमी, कटहल आलू, काला आलू, लाल गोभी, ब्रोकली, शिमला मिर्च, टमाटर के साथ साथ औषधीय और सुगंधित फसलें जेसे ब्राह्मी, मोरिंगा आदि को उगाया|
- कृषि-वानिकी के तहत नीलगिरी, सागौन के पेड़ लगाए।
- उत्तर प्रदेश राज्य जैविक प्रमाणन संस्थान, लखनऊ के माध्यम से जैविक रूप से प्रमाणित 2 हेक्टेयर खेत का स्वामित्व प्राप्त किया।
- प्राकृतिक खेती को अपनाया और पोषकतत्वों के प्रबंधन के लिए बीजामृत, जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग किया। कीटों और रोगों के नियंत्रण हेतु नीमास्त्र और ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया।
- गेहूं की बुवाई के लिए सुपर-सीडर का उपयोग किया और बीज ड्रिल के माध्यम से गेहूं की पंक्ति में बुवाई की पद्धति अपनाई।
- ड्रम सीडर के माध्यम से धान की सीधी बुवाई की पद्धति अपनाई।
- अपनाई गईं विभिन्न फसलों में अनाज और दालों के साथ-साथ नवीनतम प्रजाति और प्रौद्योगिकी का उपयोग कर के विभिन्न सब्जियां उगाई गईं।
- ड्रिप और स्प्रिंकलर सेट से फसलों की सिंचाई की।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती				पारंपरिक खेती			
फसल	आम (0.4 हे.)	आमला (0.4 हे.)	मौसंबी (0.4 हे.)	ब्राह्मी (0.4 हे.)	आम (0.4 हे.)	आमला (0.4 हे.)	मौसंबी (0.4 हे.)	ब्राह्मी (0.4 हे.)
खेती की लगत (रु.)	9000	7500	8400	18000	13500	9600	11200	21000
उत्पादन (कुंटल)	40	22	12	35 सुखी पत्तियाँ	36	19	11	32 सुखी पत्तियाँ
कुल लाभ (रु.)	56000	39600	33600	157500	50400	34200	35000	134400
शुद्ध लाभ (रु.)	47000	32100	25200	139500	36900	24600	29700	113400
लाभ-लागत अनुपात	5.22	4.28	4.00	7.75	2.73	2.56	2.65	5.4

लाभ और उपलब्धियां

- मिट्टी की उर्वरता में सुधार।
- विभिन्न फसलों की उत्पादन में वृद्धि।
- अधिक लाभ अर्जित किया।
- स्थाई वृद्धि।
- जिला रायबरेली में 100 से अधिक किसानों को लाभ पहुँचाया और 40 से अधिक किसानों को काले गेहूं के बीज उपलब्ध कराए।
- 1050 सदस्यों के साथ एफपीओ (आदर्श जीवन किसान उत्पादक कंपनी लिमिटेड बरसावन, ऊंचाहार) का गठन किया और केवीके वैज्ञानिकों की सहायता से सेमिनारों के माध्यम से विभिन्न तकनीकों के बारे में जानकारी का प्रचार-प्रसार किया।
- 2018 में दूरदर्शन उत्तर प्रदेश के कृषि दर्शन कार्यक्रम में प्रदर्शित किया गया।
- किसान सम्मान दिवस पर रायबरेली में किसान सम्मान पुरस्कार प्राप्त किया।
- रायबरेली में विशाल किसान मेले के दौरान सर्वश्रेष्ठ किसान पुरस्कार प्राप्त किया।
- कृषि प्रथम/मेरा गांव मेरा गौरव कार्यक्रम के दौरान उप-कुलपति, राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय द्वारा सम्मानित।
- एफपीओ के गठन के माध्यम से श्रेष्ठ प्रयास के लिए डीडीएम, नाबार्ड, रायबरेली द्वारा सम्मानित किया गया।

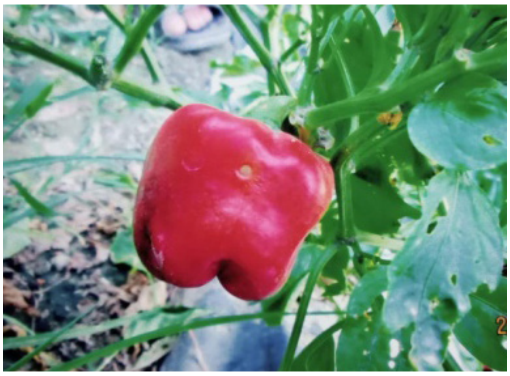

***स्रोत:** केवीके, रायबरेली*

श्री संजीव कुमार

गाँव : निसुरखा

खंड : बी.बी.नगर

जिला : बुलंदशहर

राज्य : यू.पी.

संपर्क सं. : 9258572443

शिक्षा : इंटर

ईमेल : sanjeevnishurkha@gmail.com

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- पिछले 10 वर्षों से 1.2 हेक्टेयर भूमि पर प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- प्राकृतिक खेती के तहत गेहूँ, गन्ना, हरा चना, काला चना, रागी कलगी की खेती की गई।
- फसल ज्यामिति (गेहूं-चना और गेहूं-मौसमी सब्जियों) के माध्यम से प्राकृतिक खेती में अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए संसाधनों का इष्टतम उपयोग किया।
- फसल के स्वास्थ्य में सुधार और पौधों की सुरक्षा के लिए देसी गाय-आधारित और पौधे-आधारित आदानों जैसे बीजामृत, जीवामृत, नीमास्त्र और ब्रह्मास्त्र का उपयोग किया।
- फसल अवशेषों की पलवार, क्यारी की बुवाई, कटक की बुवाई और खेत के कचरे के उपयोग सहित जल संरक्षण तकनीकों को अपनाया।
- पलवार के माध्यम से खरपतवार प्रबंधन किया।
- पंक्तिबद्ध फसलों में अंतरकल्चर प्रक्रिया के लिए 2 प्रकार के उपकरण तैयार किए और लगभग 100 किसानों में वितरित किए। इसने श्रम की आवश्यकता को बहुत कम कर दिया और खेती की लागत को कम करने में मदद हुई ।
- अवशेष जलाने के बजाय फसल अवशेष प्रबंधन को अपनाया।
- गेहूँ, सब्जियां, चना, गुड़/गुड़, खंड, शक्कर, सिरका और हल्दी पाउडर आदि के लिए जैविक उत्पादों की प्रत्यक्ष विपणन प्रणाली को अपनाया।
- सूचना के प्रसार के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग किया।
- केवीके बुलंदशहर और राज्य कृषि विभाग द्वारा आयोजित किसान मेलों और किसान क्लब की बैठकों में भाग लेकर जागरूकता पैदा की।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.5 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.5 हेक्टेयर)
फसल	गन्ना, मूँग, हल्दी	गन्ना
खेती की लागत (रु.)	48400	68110

मापदंड	प्राकृतिक खेती (0.5 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.5 हेक्टेयर)
उत्पादन (कुंटल)	गन्ना– 300 मूँग-. 25, हल्दी–6	300
कुल लाभ (रु.)	551000	217700
शुद्ध लाभ (रु.)	502600	149590
लाभ लागत अनुपात	10.38	2.19

लाभ और उपलब्धियां

- आदानों के लिए बाजार पर निर्भरता कम हुई।
- रासायनिक खेती के बराबर उपज प्राप्त की।
- ग्राहकों को कीटनाशक मुक्त उत्पाद उपलब्ध कराकर उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य में सुधार हुआ।
- मिट्टी और पानी जैसे प्राकृतिक संसाधनों का कुशल और किफायती उपयोग सुनिश्चित किया।
- प्राकृतिक खेती जलवायु अनुकूल कृषि की दिशा में एक कदम है।
- जिले, राज्य और अन्य राज्यों के किसानों को प्राकृतिक खेती में मार्गदर्शन प्रदान किया।
- प्राकृतिक खेती में महत्वपूर्ण योगदान के लिए उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार द्वारा सम्मानित किया गया।
- ऊर्जा संरक्षण उपकरणों के लिए वर्ल्ड ऊर्जा फाउंडेशन, मुंबई द्वारा 2019 में ऊर्जा रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- प्राकृतिक खेती करने के लिए 316 किसान परिवारों को प्रोत्साहित कर जिले के विभिन्न गांवों में 22 समूहों को बनाने के लिए प्रेरित किया।
- हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश को कवर करते हुए भारत-गंगा के मैदानी क्षेत्र में प्राकृतिक खेती के क्षेत्र में एक विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया।

***स्रोतः** केवीके बुलंदशहर*

श्री सतीश चंद्र मिश्रा

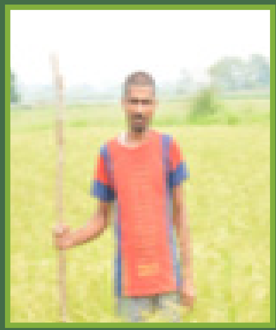

ग्राम : हरि खेड़ा
ब्लाक : सिसेंडी
जिला : लखनऊ
राज्य : उत्तर प्रदेश
सम्पर्क नं. : 7007294715
शिक्षा : एलएलबी.

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 3.4 एकड़ भूमि में 2016 से देसी गाय आधारित प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- खरीफ के मौसम में धान (बीपीटी-5204), सफेद तिल और रबी के मौसम में गेहूं (बंसी) की खेती की।
- विभिन्न प्राकृतिक कृषि आदानों जैसे जीवामृत, घनजीवमृत, नीमास्त्र, ब्रम्हास्त्र, दशपर्णी अर्क का उपयोग पूरक पोषण और कीट नियंत्रण उपायों के रूप में किया गया।
- नलकूप द्वारा कृषि क्षेत्र की सिंचाई की।
- विपणन समूह के साथ जुड़े।
- विपणन के लिए आईसीटी तकनीक का प्रयोग किया।
- प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं और मंचों में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मानदण्ड	प्राकृतिक खेती (हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (हेक्टेयर)
फसल	धान (बीपीटी-5204)	धान (बीपीटी-5204)
खेती की लागत (रु.)	22000	30000
उत्पादन (कुंटल)	37	42
कुल लाभ (रु.)	111000	84000
शुद्ध लाभ (रु.)	89000	54000
लाभ-लागत अनुपात	4.0	1.8

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी।
- आय में वृद्धि ।
- मिट्टी और उपज की बेहतर गुणवत्ता।
- प्रति माह लगभग 10-15 किसानों को लाभ पहुंचाया।
- अन्य किसानों के लिए बीज बैंक की स्थापना की।

स्रोत: *चंद्र शेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर*

श्री शरद प्रताप सिंह

ग्राम : पाली पहाड़ी
ब्लाक : बबीना
जिला : झांसी
राज्य : उत्तर प्रदेश
सम्पर्क नं. : 8948197631
शिक्षा : कृषि में इंटरमीडिएट

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- वर्ष 2017 से गाय आधारित प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- सब्जियों के साथ फसलों का एकीकरण किया।
- 5.5 एकड़ भूमि में, आधे क्षेत्र में खाद्य फसलों की खेती की जाती है और दूसरे आधे हिस्से में सब्जियों की खेती की।
- खरीफ के मौसम में उगाई जाने वाली फसलों में सुगंधित चावल (1504), मूंगफली, तुरई, लौकी, मिर्च, बैगन, हरे चने और उड़द और रबी मौसम की फसलों में गेहूं (बंसी) और सब्जियां लगाई।
- पूरक आहार के रूप में जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग किया।
- बीज उपचार के लिए बीजामृत और कीट और रोगों के नियंत्रण के लिए नीमास्त्र, ब्रम्हास्त्र तथा दशपर्णी अर्क तैयार किया और प्रयोग किया।
- खेत के बीच में स्थित एक ही कुएं से पूरे खेत की सिंचाई की। विपणन के लिए आईसीटी तकनीक का प्रयोग किया।
- प्राकृतिक खेती से संबंधित विभिन्न प्रदर्शनियों और कार्यशालाओं में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मानदण्ड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	धान (पूसा – 1121)	धान (शंबा मंसूरी)
कृषि लागत (रु.)	26500	34000
उत्पादन (क्वि.)	48	53
कुल लाभ (रु.)	321600	279840
शुद्ध लाभ (रु.)	295100	245840
लाभ-लागत अनुपात	11.1	7.2

लाभ और उपलब्धियां

- उपज की गुणवत्ता में सुधार हुआ।
- खेती की लागत कम की।

- अधिक आय अर्जित की।
- मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार किया।
- समय और श्रम लागत की बचत की।

स्रोत: *चंद्र शेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर*

श्री श्याम बिहारी गुप्ता

ग्राम : अम्बा बाई

ब्लाक : बड़ागांव

जिला : झांसी

राज्य: : उत्तर प्रदेश

सम्पर्क नं. : 9889196787

शिक्षा : इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- वर्ष 2012 से प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- गेहूँ किस्म–बंसी की खेती की।
- प्राकृतिक कृषि आदानों जैसे जीवामृत और घनजीवामृत को पोषक तत्वों के पूरक के रूप में उपयोग किया।
- बीज उपचार के लिए बीजामृत तैयार कर प्रयोग किया। नीमास्त्र, ब्रम्हास्त्र और दशपर्णी अर्क का उपयोग कीटों और रोगों को नियंत्रित करने के लिए किया।
- गाय के गोबर और गोमूत्र से मूल्यवर्धित उत्पाद जैसे धूपबत्ती, टूथ पेस्ट, साबुन, फेस पैक, रबिंग ऑयल आदि तैयार किए।
- विपणन के लिए आईसीटी तकनीक का प्रयोग किया।
- राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों में भाग लिया।
- कृषि प्रदर्शनों को प्रदर्शित कर अन्य किसानों को ज़ेडबीएनएफ के बारे में आश्वस्त किया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मानदण्ड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	गेहूं (बंसी)	गेहूं (बंसी)
खेती की लागत (रु.)	30000	38000
उत्पादन (कुंटल)	40	40
कुल लाभ (रु.)	140000	80000
शुद्ध लाभ (रु.)	110000	42000
लाभ-लागत अनुपात	3.7	1.10

लाभ और उपलब्धियां

- आदान लागत और कृषि लागत में कमी।
- समय और श्रम की बचत।
- आय में वृद्धि।

- मिट्टी और उपज की गुणवत्ता में सुधार हुआ।
- क्षारीय मिट्टी का पुन: उपयोग।
- मिट्टी में केंचुओं की संख्या में वृद्धि।
- प्रशिक्षण आयोजित करके प्रति वर्ष लगभग 500 किसानों को लाभ पहुँचाया तथा प्राकृतिक खेती के लिए कई किसानों को प्रशिक्षित किया ।

स्रोत: *चंद्र शेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्यौगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर*

श्री सुधांषु गंगवार

ग्राम	:	कुइयां धीर
ब्लाक	:	शम्साबाद
जिला	:	फर्रुखाबाद
राज्य	:	उत्तर प्रदेश
सम्पर्क नं..	:	9369519355
शिक्षा	:	स्नातक

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- वर्ष 2010 से प्राकृतिक खेती को अपनाया और मूंगफली, हल्दी, मूंग और उड़द की फलियों के साथ पपीते की खेती की। लोबिया, बरसीम, मूंग और उड़द जैसी एकमात्र फसलें भी उगाईं।
- बेसहारा 20 देसी गायों को पाला।
- पोषक तत्वों की खुराक के रूप में जीवामृत और घनजीवामृत जैसे विभिन्न प्राकृतिक कृषि आदानों, कीटों और रोगों को नियंत्रित करने के लिए दशपर्णी अर्क और बीज उपचार के लिए बीजामृत का उपयोग किया।
- पानी की मांग और खरपतवार की अधिकता को कम करने के लिए फसल अवशेषों को पलवार के रूप में प्रयोग किया।
- विपणन हेतु आईसीटी टूल्स का उपयोग किया और विभिन्न प्रदर्शनियों तथा मंचों में भाग लिया।
- प्रदर्शन कर साथी किसानों को प्रोत्साहित किया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मानदण्ड	प्राकृतिक खेती (1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (1 हेक्टेयर)
फसल	पपीता (रेड लेडी ताइवान 786 और मूंगफली	पपीता (देसी)
खेती की लागत (रु.)	125000	90000
उत्पादन (कुंटल)	पपीता : 750 मूंगफली : 18	600
कुल लाभ (रु.)	690000	480000
शुद्ध लाभ (रु.)	565000	390000
लाभ-लागत अनुपात	5.5	5.33

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में कमी।
- आय में वृद्धि।
- मिट्टी के स्वास्थ्य और उपज की गुणवत्ता में सुधार।

- मिट्टी में केंचुओं की संख्या में वृद्धि।
- फसल अवशेष उपयोग में लाया गया।
- समय की बचत हुई।
- बहुत किसानों ने बड़े पैमाने पर लाभ कमाया ।
- लाभ अर्जित किया और रोजगार सृजन किया।
- उत्तर प्रदेश सरकार से 23.12.2020 को जैविक खेती पर विशेष पुरस्कार प्राप्त किया।

स्रोत: चंद्र शेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्यौगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर

श्री सुरेंद्र सिंह पटेल

ग्राम	:	दड़ाई खेड़ा
ब्लाक	:	बीघापुर
जिला	:	उन्नाव
राज्य	:	उत्तर प्रदेश
सम्पर्क नं.	:	9454181784
शिक्षा	:	बी.ए.

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- 2017 से गाय आधारित प्राकृतिक खेती को अपनाया।
- खरीफ के मौसम में चावल (1121), मक्का, अरहर, हल्दी और अरवी और रबी के मौसम में गेहूं, सरसों और आलू की खेती की।
- जीवामृत और घनजीवामृत तैयार किया तथा उन्हें पोषक तत्वों के पूरक के रूप में उपयोग किया।
- बीज उपचार के लिए बीजामृत और कीटों तथा रोगों को नियंत्रित करने के लिए नीमास्त्र, ब्रम्हास्त्र एवं दशपर्णी का प्रयोग किया।
- नलकूप की सहायता से फसलों को सिंचित किया।
- विपणन समूहों के साथ कार्य किया।
- विपणन के लिए आईसीटी तकनीक का प्रयोग किया।
- प्रदर्शनियों और मेलों में भाग लिया।
- कृषि प्रदर्शनों के माध्यम से अन्य किसानों को लाभ पहुँचाया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती में तुलना

मानदण्ड	प्राकृतिक खेती (हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (हेक्टेयर)
फसल	धान (शरबती)	धान (पूसा-1121)
खेती की लागत (रु.)	23000	29000
उत्पादन (कुंटल)	40	35
कुल लाभ (रु.)	100000	69580
शुद्ध लाभ (रु.)	77000	40580
लाभ-लागत अनुपात	3.3	1.39

लाभ और उपलब्धियां

- खेती की लागत में काफी कमी आई।
- मिट्टी और कृषि उपज में सुधार हुआ।

- आय में वृद्धि हुई।
- समय बचाया।
- बीज बैंक की स्थापना की।
- प्राकृतिक खेती के बारे में किसानों को सलाह दी।

स्रोत: *चंद्र शेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर*

उत्तराखंड

श्री नरेन्द्र सिंह मेंहरा

गाँव : देवला मल्ला
मंडल : हल्द्वानी
जिला : नैनीताल
सम्पर्क : 6396870269 / 9897130131
शिक्षा : एम् ए जिओग्राफी एवं टूरिज्म में पि जी डिप्लोमा

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- प्राकृतिक खेती को अपनाया एवं बीजामृत, जीवामृत और पौध संरक्षण अर्क जैसे प्राकृतिक आदानों को तैयार और इस्तेमाल किया।
- गेहूं और लहसुन को सह-फसल पैटर्न के रूप में 2017 में शुरू किया।
- श्रम, पानी और निवेश बचाने के लिए धान की सीधी बुवाई पद्धति का अभ्यास किया।
- साथी किसानों को प्राकृतिक खेती के तरीकों पर प्रशिक्षण प्रदान किया।
- धान रोपाई में जल संरक्षण तकनीकों को लोकप्रिय बनाया|
- जुलाई 2021 में गेहूँ की एक नई किस्म (N-09) विकसित की।
- रिंग पिट और ट्रेंच विधि के माध्यम से गन्ने के बीज उत्पादन का अभ्यास किया।
- जैविक गुड़ इकाई की स्थापना की।

प्राकृतिक खेती और पारंपरिक खेती में तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (0.1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.1 हेक्टेयर)
फसल	गेहूं / नरेन्द्र-09	गेहूं / पीबीडब्लू -154
खेती की लागत (रु.)	11600	17500
उत्पादन (कुंटल)	24	22
सकल लाभ (रु.)	65000	44300
निवल लाभ (रु.)	53400	26800
बी : सी. अनुपात	5.6	2.53

लाभ और उपलब्धियां

- विभिन्न प्रकार के पुरुस्कारों जेसे प्रगतिशील किसान पुरस्कार, अभिनव किसान पुरस्कार, किसान नेतृत्व पुरस्कार, उत्तराखंड गौरव पुरस्कार, उत्तराखंड रतन पुरस्कार, उत्तराखंड चिह्न पुरस्कार से नवाजा गया

स्रोत: *कृषि विज्ञान केन्द्र,रानीचौरी, टिहरी गढ़वाल*

श्री विजय जरधारी

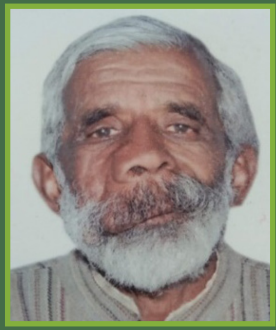

गांव : जरधरगांव

मंडल : चम्बा

जिला : टिहरी गढ़वाल

संपर्क नं. : 7300566098

शिक्षा : स्नातक

अपनाई गई कृषि पद्धतियां

- बीज बचाओ आन्दोलन नामक अभियान के माध्यम से स्वदेशी/स्थानीय बीजों का संरक्षण किया।
- बीजामृत के माध्यम से बीज उपचार और रूट डिप तकनीक को अपनाया।
- जीवामृत और अन्य पौधों पर आधारित कषाय जैसे प्राकृतिक आदानों को तैयार किया।
- जीवित पलवार औरे मृत पलवार का प्रयोग किया।
- राजमा की 200 से अधिक किस्मों और राइसबीन की 20 किस्मों का संरक्षण किया।
- बाजरा अर्थात् फिंगर बाजरा, बार्नयार्ड बाजरा, फॉक्सटेल बाजरा, अमरांथ, राइसबीन, तुअर, काला सोयाबीन, राजमा, मोथी, काला चना, कुलथी, एडजुकी बीन आदि की खेती के लिए बड़ानाजा, मिश्रित फसल कृषि पद्धति अपनाई।
- खेती की बारांजा प्रणाली का प्रचार किया।
- प्राकृतिक खेती के बारे में गांव में प्रतिवर्ष रैलियां और जन अभियान आयोजित किया।
- गांव में किचन गार्डन स्थापित करने में सहायता प्रदान की।
- जिला और राज्य-स्तरीय प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षणों में भाग लिया।

प्राकृतिक खेती और पारंपरिक खेती के बीच तुलना

मानदंड	प्राकृतिक खेती (0.1 हेक्टेयर)	पारंपरिक खेती (0.1 हेक्टेयर)
फसल	गेहूं	गेहूं
किस्म	मुंदरी गेहूं (स्वदेशी)	स्थानीय
खेती की लागत (रु.)	2250	3550
उत्पादन (क्विंटल)	195	165
सकल लाभ (रु.)	4875	4125
निवल लाभ (रु.)	2625	575
बी.सी. अनुपात	1.16	0.16

लाभ और उपलब्धियां

- न्यूनतम आदान लागत

- खेती की कम लागत
- इसके परिणामस्वरूप अच्छी गुणवत्ता, आकार और रोग मुक्त के साथ उच्च पैदावार
- शेल्फ लाइफ में वृद्धि
- मिश्रित कृषि में बाजरा और दाल की खेती से निवल आय में वृद्धि
- समुदाय को रसायन मुक्त भोजन का विक्रय किया और स्वयं भी उपभोग किया।
- मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखा।
- बीज बचाओ आंदोलन के समन्वयक
- उत्तराखंड प्रौद्योगिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, भरसार, पौड़ी गढ़वाल के बोर्ड सदस्य के रूप में मनोनीत

***स्रोत:** कृषि विज्ञान केन्द्र, रानीचौरी, टिहरी गढ़वाल*

कृषि वर्टिकल
नीति आयोग
नीति भवन, संसद मार्ग
नई दिल्ली - 110001

आईएसबीएन: 978-81-949510-4-9

Designed by YAAP